

**S  
A  
M  
D  
R  
I  
S  
H  
T  
I**

**2020**

**RAM LAL ANAND COLLEGE**  
**University of Delhi**



### *Late Shri Ram Lal Anand*

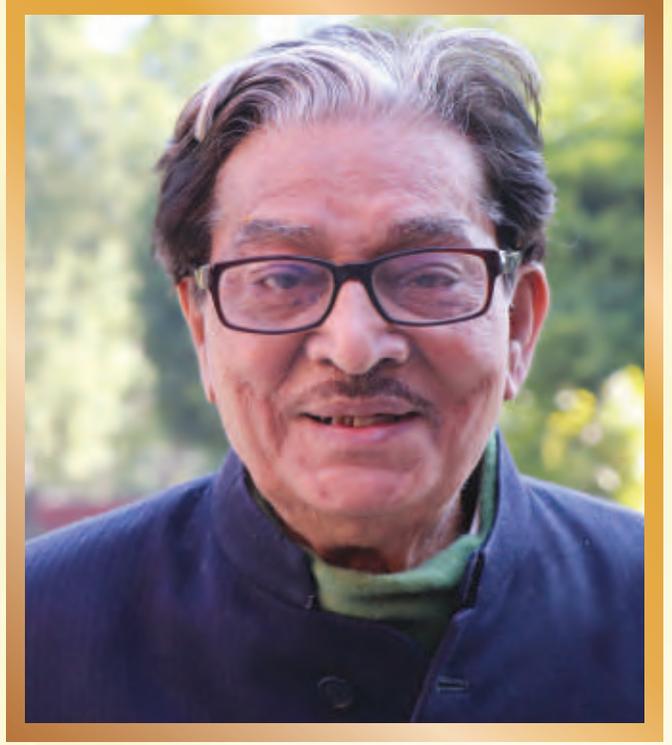
Ram Lal Anand College was founded in the year 1964 by Late Shri Ram Lal Anand, a senior advocate in the Supreme Court of India, in response to the growing social demand in the sixties for providing educational opportunities at the university level. The college was initially managed by the Ram Lal Anand College Trust. It was later taken over by the University of Delhi. Since 1973, it has been run by the University of Delhi as a University Maintained Institution.

# Contents...

संदेश	2	गांधी और सिनेमा	56	प्रकृति	100
Principal's Message	3	गाड़ी के दो पहिये सत्य और अहिंसा	58	वो पल याद हैं	101
संपादकीय मंडल	4	गांधी जी का मोबाइल	59	माँ	102
संपादकीय	5	'बापू' हमारे शान हैं	59	हाँ मैं लिखूंगा	103
सम्मान समारोह	6	महात्मा गाँधी की समसामयिक सार्थकता	60	स्त्री	104
Alumni Committee	7	रोको मत आगे बढ़ने दो	62	माँ का आँचल	105
Extra Curricular Acitivity Societies (ECA)	8	महात्मा गाँधी और राजनीति	63	मेहनती	105
Inara - The Fine Arts Society	8	गाँधीजी का व्यक्तित्व	64	मन में कोई अल्फाज़ है क्या	106
Dastoor - The Music Society	9	गाँधी के विचार और बदलता समाज	65	आखिर क्यों?	106
Illusion - The Western Dance Society	10	वो कर गया आबाद हिन्दुस्तान को	66	विभिन्नताओं के लिए जाना जाता है	107
Anantadristi - The Indian Dance Society	10	बापू आज भी जिंदा हैं	67	हमारा भारत	
Andaaz - The Anchoring Society	11	गाँधी दर्शन सामाजिक एकता पर	68	प्रौद्योगिकी और मानव स्वास्थ्य	108
National Cadet Corps	12	स्वतंत्रता संग्राम के भीष्म पितामह	70	माता—पिता धरती पर भगवान	109
National Service Scheme	14	महात्मा गाँधी	71	Forever Gratefu	110
गाँधी स्टडी सर्किल	16	सुरक्षित समाज के बिना अधूरी हैं महिलाएं	72	Nirbhaya	110
'आरोह' हिंदी वाद—विवाद समिति	18	गांधी: धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिकता	43	Vincent Van Gogh	110
Centre For Entrepreneurship	19	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में	74	Hopes of a Better World	111
And Technology Development (E-cell)		गांधीजी का योगदान		Results of a War	111
Enactus	21	गांधी	79	Die Alone?	112
Equal Opportunity Cell (EOC) 2019-20	22	A Superhero	80	Enslaved Souls	112
Research And IPR Cell	22	Mahatma's idea of Management	81	Smile	112
Hasratein: The Dramatics Society	23	Mountain in A Molehill	82	She	113
North-East Society	24	Mahatma Gandhi- An Enigma	84	Broken: Just Happened	114
RLAC Chapter of Spic Macay 2019-20	26	Gandhi is not a Religion, It is a Nation	85	Classes I Don't Want to Attend	114
समदृष्टि और सृजन वॉल मैगजीन कमेटी	27	In the Rain	86	Grey	115
Abhivyakti The Creative Writing Society	28	Gandhians Pillars	87	Whisper of the Heart	115
RLA Students Union (2019-20)	29	Tale of a Man	88	Edward Cullen	116
RLA College Students Union (2019-20)	30	Gandhi's Transformation	89	BA (Programme) Society	117
Sangoshthi, The Seminar/conference Society	31	My Everything	90	'Serenity' Committee	
अनुवाद पाठ्यक्रम हिन्दी विभाग	31	Run	91	Kach!ng- Report,	118
WWAC Annual Report Session 2019-20	32	The Dusu Elections will be relevant for	92	Department of Commerce	
Yoga & Meditation Committee	33	Students only if it Includes them		Department of Computer Science	119
फंक्शन कमेटी	34	कश्मीर है लहू—लहू	93	Department of English	121
Admission Committee	36	ए माँ तेरी याद आई	93	Department of Geology	122
Sugam Summary	37	प्रकृति	94	हिंदी साहित्य परिषद	124
Library Committee	38	मूर्तिकार	95	हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार :	125
Career Counselling And Placement Cell	39	काफिया—ए—अहसास	96	आयोजनों के लिहाज से महत्वपूर्ण रहा सत्र	
Skill Based Courses & Co-Curricular Add-Ons	41	मुसाफिर हूँ तुम्हारी तरह	96	Department of History	126
स्वर्ण पदक विजेता	42	संघर्ष	97	Department of Mathematics	127
Best Student Awardee	43	प्रबल कौन भाग्य या कर्म	98	Department of Management Studies	129
RLA in the News	44	क्या धर्म को पहचानो तुम	99	Department of Microbiology	131
E-varta	46	संघर्ष से सिद्धि तक	100	Department of Physical Education	133
छवियों में गांधी	48			Department of Political Science	135
मेरी नज़र में गांधी	50			Department of Statistics	136
गांधी और आज	52			Non Teaching Staff:	138
गाँधी के विचार	54			'Pillars of Strength' of our College	
'बापू' एक वृहद विचार	55			Splendor 2020	146

# संदेश

रामलाल आनन्द कॉलेज की पत्रिका "समदृष्टि" को वर्ष 2019-20 में कालेज की विशिष्ट गतिविधियों एवम उपलब्धियों का दर्पण कहा जा सकता है। इसमें छात्रों और अध्यापकों की विशिष्ट योग्यता प्रतिबिंबित होती है। ये सुखद पल है कि विरोधाभासी परिस्थितियों के बीच महाविद्यालय की पत्रिका अपने आकार को बिम्बित कर पाई है। इस पत्रिका को महात्मा गाँधी की 150 जयन्ती के विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है जो कि प्रशंसनीय कार्मिकता का प्रमाण है। गाँधी जी की प्रासंगिकता को युवा मन से जोड़ना आज के समय की चुनौती है। राष्ट्रपिता के विचारों को पुनर्जीवित करने का यह प्रयास सराहनीय है। यह पत्रिका महाविद्यालय के परिसर की सांस्कृतिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, रचनात्मक गतिविधियों का वह मंच है, जो साक्षी बनकर स्मृतिपटल पर अमिट छाप छोड़ जाती है। ये हर्ष का विषय है कि नव रचनाकार की नव सृजनकला का उत्साहवर्धन करते हुए रचना धर्मिता का मार्गदर्शन भी इस पत्रिका का ध्येय है।



महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश गुप्ता को वैश्विक संक्रमण के दौर में महाविद्यालय के अध्ययन-अध्यापन के साथ साथ अनेक वेबिनार के सफल आयोजनों के लिये बधाई देता हूँ। महाविद्यालय के सभी शिक्षण और गैर शिक्षण कर्मचारियों की प्रशंसा करता हूँ जो महाविद्यालय को सुचारु रूप से कार्यान्वित करने में विशेष भूमिका का निर्वाह करते हैं। जो छात्रगण इस वर्ष उच्च शिक्षा या अन्य योग्यता के लिये महाविद्यालय छोड़ कर चले जायेंगे उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। कोरोना काल में ऐसी सृजनात्मक पत्रिका के लिये संपादकीय मंडल को शुभाशीष और शुभकामनाएं देता हूँ।

21.12.2020

पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा  
चेयरमैन, प्रबन्ध समिति  
रामलाल आनन्द महाविद्यालय

## PRINCIPAL'S MESSAGE

It's my privilege to present this year's edition of the college magazine 'Samdrishti'. It is an immense pleasure to state that our college has established itself as an eminent institution in Delhi University - not only in the field of higher education but in myriad extra-curricular activities as well as sports.

Our students and teachers are empowered to pursue their individual interests and constantly engage in the teaching-learning process. This magazine is a testament to various such activities and the achievements that inevitably follow throughout the year.

'Samdrishti' is a display of the creative abilities of the RLA community. Through poetry, stories, essays and articles we share our views with one another. This confluence of ideas serves the purpose of education. As a grateful nation celebrated the 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi, we decided to commemorate the occasion and pay our homage by featuring the Father of the Nation in a special section of Samdrishti 2020. This feature includes creative compositions of our students expressing the influence and relevance of the Mahatma in the present day context.

Apart from this, the magazine gives us an opportunity to showcase our investment in various Staff Council and other societies for worthy causes and capture the progress that has been made in print and pictures, for posterity.

I would be remiss if I didn't extend my gratitude to our chairman Padma Shri Daya Prakash Sinha ji, a renowned playwright and other esteemed members of Governing Body for their continued guidance.

I congratulate the editorial team on an excellent job yet again, and welcome you warmly to this year's edition of Samdrishti.



*R. Gupta*

**Prof. Rakesh Kumar Gupta**  
Principal

# संपादकीय मंडल



डॉ. अर्चना गौड़, संयोजिका  
(समदृष्टि समिति)

## समदृष्टि समिति के सदस्य



डॉ. रितंभरा मिश्रा



डॉ. सलोमी जॉन



डॉ. अलंकार



डॉ. दीप्ति गुप्ता



डॉ. अटल तिवारी



नीरज  
(तकनीकी विशेषज्ञ)

## छात्र संपादकीय मंडल



दीपक



अनुग्रह



जेनिस



रोबिन



ईशा



क्षितिज



आनंद



नेहा



शिल्पी



ऋतुज



राधिका



आदित्य



तनिका



सुशील



मुस्कान



जुनैद



रूपाली



सैफ



आभा



मनोज

# संपादकीय



निष्कण्टक मार्ग पर चलता समय कनखियों के बल से हम सबको नापता चलता है। व्यक्ति से राष्ट्र तक कोई भी इससे अछूता नहीं रहता। परतंत्र भारत ने भी इसकी तनी भृगुटियों को सहा, इस समय बेचैन और छटपटाते भारत को एक महानायक ने आनन्दानुभूति कराते हुए उद्देश्य की प्राप्ति की। 150 वर्ष पूर्व इस महानायक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म हुआ, महात्मा गांधी ने कहा है, "true education must correspond to the surrounding circumstances or it is not a healthy growth". इन्हीं आदर्शों की महत्ता आज की पीढ़ी का मार्गदर्शन करने में सक्षम है। यथार्थ और आदर्शों के संघर्ष से जूझता युवा वर्ग गांधी से कितना ले पाया है इसका छोटा सा प्रयास समदृष्टि के इस विशेषांक द्वारा किया गया है।

समय के समीकरणों का विद्यार्थियों ने अपने चयनित विषयों पर विचार और कल्पना की संगठित शक्ति द्वारा सशक्त प्रदर्शन रचनात्मक कौशल से किया है। ये रचनाएं ऐसी भावाभिव्यक्ति हैं जो विचारों के दायरे को विस्तार देती हैं। शिल्प की कसौटी पर अभी कसा जाना उभरते रचनाकारों को हतोत्साहित कर सकता है अतः विद्यार्थियों की रचनाओं को ज्यादा काट – छांट न करके आपके सामने प्रस्तुत किया गया है।

गांधी जी को पुस्तकों ने सदा आकर्षित किया उनके पठन की विशेषता यह थी कि उसे मात्र पढ़ते नहीं थे अपितु आत्मसात करते थे। पुस्तकों और साहित्य के महत्व के विषय में उन्होंने कहा— "किसी संस्कृति को नष्ट करने के लिए आपको किताबें नहीं जलानी होंगी। बस लोग उन्हें पढ़ना बंद कर दें" पाठक का ऋण जो रचनाकार चुकाता है उस क्षमता को वे पहचानते थे वे स्वयं सफल लेखक के रूप में अपने आदर्शों को अपनी रचनाओं में बांध गए। विद्यार्थियों ने उनके विचारतत्व को मौलिक लेखनी के सौंदर्य तत्व से जोड़ कर आपके सम्मुख रखा है। इस पत्रिका को इस रूप तक लाने के लिये प्राचार्य महोदय डॉ. राकेश कुमार गुप्ता का मार्गदर्शन तथा उत्साहवर्धन प्रेरक बन कर पत्रिका के सौंदर्य को निखारता रहा है, हम उनके आभारी हैं संपादकीय मंडल का अथक परिश्रम और सहयोग प्रशंसनीय रहा है। पत्रिका को अर्थवत्ता डॉ. रितंभरा मिश्रा, डॉ. सलोमी जॉन, डॉ. अलंकार, डॉ. दीप्ति गुप्ता, डॉ. अटल तिवारी, तकनीकी विशेषज्ञ श्री नीरज करायला ने प्रदान की। छात्र मण्डल में दीपक कुमार त्रिवेदी, जेनिस, राधिका, आभा, ऋतुज, खुशी, रॉबिन, आनंद, नेहा, क्षितिज, सेफ, रुपाली, ईशा, आदित्य, शिल्पी, मुस्कान, जुनैद, तनिका, मनोज, अनुग्रह का योगदान महत्वपूर्ण रहा।

## सम्मान समारोह

*“कलाओं की पहचान प्रायः कोमलता, सरलता, और भावुकता से की जाती है परन्तु यह पहचान नितांत सत्य नहीं है। कलाओं की अदृश्य संचरण शक्ति इतनी प्रभावी और संघर्षरत होती है कि वह समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है।”*

—दया प्रकाश सिन्हा

संस्कृति और कला के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान हेतु श्री दया प्रकाश सिन्हा जी को वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा नागरिक सम्मान ‘पद्म श्री’ से सम्मानित किया गया। श्री दया प्रकाश सिन्हा जी ने आजीविका के क्षेत्र में सफल आई. ए. एस. अधिकारी पद पर रहते हुए संस्कृति की धरोहर को नए प्रतिमान प्रदान किए। आप सांस्कृतिक कला के विभिन्न रूप नृत्य, नाट्य, संगीत, ललित कला, लोक कलाओं— कर्मियों, नाट्य कलाकारों, साहित्यकारों अनेक ऐसे सम्बंधित क्षेत्रों के प्रेरणा स्रोत रहे। महत्वपूर्ण पदों पर आसीन होने के साथ-साथ नाट्य संसार में लगभग 55 वर्षों से कुशल अभिनेता, सफल नाटककार, चिंतनशील नाटक अध्येता और श्रेष्ठ निर्देशक के रूप में रंगमंच को पहचान देते रहे हैं। आपने 20 से अधिक नाटक और एकांकियों की रचना की है। नाटककार ने ज़मीनी हकीकत से मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों की उलझन को विषय बनाते हुए विचार तत्व के माध्यम से दर्शकों को उद्वेलित किया है। आप कई महत्वपूर्ण पदों का निर्वाहन करते हुए, आजकल रामलाल आनन्द कॉलेज की गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन पद पर भी आसीन हैं।

दिनांक 10 फरवरी 2020 को रामलाल आनन्द महाविद्यालय ने उत्कृष्ट सम्मान प्राप्ति के उपलक्ष्य में पद्म श्री दया प्रकाश सिन्हा जी के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर रामलाल आनन्द कॉलेज के गवर्निंग बॉडी के पूर्व चेयरमैन श्री बृजकिशोर शर्मा जी, गवर्निंग बॉडी के सदस्य श्री पी.पी. श्रीवास्तव, एयर मार्शल नरेश वर्मा, डॉ. अविनिवेश अवस्थी, श्रीमती ललिता निझावन, पूर्व चेयरमैन डॉ. विनय कुमार, श्री सुरेश वर्मा सपत्नी श्रीमती रेणु कोल वर्मा, केंद्रीय हिंदी संस्थान के अध्यक्ष श्री कमल किशोर गोयंका एवं आर्यभट्ट कॉलेज के प्राचार्य डॉ मनोज सिन्हा, की गरिमामयी उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर रामलाल आनन्द कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर राकेश कुमार गुप्ता ने पद्मश्री श्री दया प्रकाश सिन्हा जी के सम्मान में दुशाला और सरस्वती की प्रतिमा भेंट कर कॉलेज के लिए अविस्मरणीय क्षण रचा।

इस अवसर पर हिंदू कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अरविंद संबल और सुकुमार नौशाद अली ने पद्मश्री श्री दया प्रकाश सिन्हा द्वारा लिखे नाटकों ‘सम्राट अशोक’ और ‘रक्त अभिषेक’ पर अपने चिंतनशील आलेख प्रस्तुत किए। सभी गणमान्य अतिथियों ने पद्मश्री श्री दया प्रकाश सिन्हा जी को बधाई देते हुए अपने हृदयोद्गार साझा किए। इस आयोजन पर श्री दया प्रकाश सिन्हा जी ने कहा कि, “राम लाल आनंद कॉलेज मेरे लिए भाग्यवान सिद्ध हुआ।” विनम्रता की प्रतिमूर्ति ऐसे ही पुरस्कार और सम्मान के अधिकारी हैं।



डॉ. अर्चना गौड़  
संयोजिका फंक्शन कमेटी



## ALUMNI COMMITTEE

The Alumni Committee organized more than ten lectures in the year 2019-20. These lectures focused on various topics and issues. Sometimes, they were about inspiring life and career stories and some other times about research and specific academic concerns.

Kiran Jyoti (batch of 2019, Geology Department), Karan Bhatia (batch of 2018, Commerce department) Gyan Prakash Tripathi and Preeti (batch of 2017 Computer Science department), Simran and Pradeep (batch of 2018, Computer Science department), were all invited at different times to interact with their junior batches.

On 6th September 2019, Ms. Mansi Sabharwal and Mr. Bharat Sabharwal (both from the batch of 2014, Computer Science Department) conducted a workshop on Digital Marketing with the students. On 30th September 2019, Apoorv Awasthi delivered a lecture on “3DFault-Modeling and Induced Seismicity, Southern Kansas”. He is currently pursuing Masters in Geology from Ludwig Maximilian University of Munich, Germany.



Dr. Mayuri Pandey, is an alumni of the college from the first batch of the Geology 2006–2009. She now teaches in the department of Geology, Banaras Hindu University, Varanasi, UP, India. She was invited to the college on 03rd October, 2019 to deliver her research on “Depleting Icescapes and Climate Change”. She had a long interactive session with an audience of about a hundred students and teachers where she discussed her journey to Antarctica, the challenges she faced and the lessons she learnt.



On 31st October, 2019, Tara Kapoor (Batch of 2001, English Department) interacted with the students about her journey from the English Department of Ram Lal Anand College to the Philosophy as a discipline and any other cities and countries she shifted. Despite a physical deformity she went a long way from being a committed student and an active college President to finally being a corporate Lawyer in the Jersey and Luxembourg.

On 6th Nov, 2019, Nitin Khandelwal currently pursuing PhD from Indian Institute of Science Education and Research (IISER), Mohali, Punjab and on 13th Nov, 2019, Simran Garg, a Geologist in Slumberger, Mumbai, Maharashtra from the same batch (2014-2017) conducted career counselling sessions.



Dr. Ankit K. Verma (batch of 2014, Geology Department) is a Postdoctoral research fellow in the School of Physics, Trinity College, Dublin, Ireland. He gave a presentation on the topic “The role of impact processes in the subsequent weathering of rocks” a part of his PhD research work.

**Dr. Deepti Bharadwaj**  
Convenor Alumni Committee

## EXTRA CURRICULAR ACITIVITY SOCIETIES (ECA)

### INARA - THE FINE ARTS SOCIETY

Inara, The Fine Arts Society of Ram Lal Anand College has lifted the meaning of art to another level in the academic session 2018-19. It invited all the creative hands at a platform to showcase their talents. Members have been participating in various art competitions across the university and have won accolades.



**EXHIBITION:** The society organised an art exhibition in the college on 29th August where the budding artists displayed their creativity. It got attention of many students and admired by all the faculty members as well as our Principal.

**WORKSHOP:** A painting workshop entitled “The Love of Art” was conducted from September 22nd to October 6th. The members enjoyed conception, creation, contemplation and other artistic ventures.

**COMPETITIONS:** Members participated in several inter college events from Face Paintings and Brushless painting at Maitreyi college to installation of Art Exhibition at Hindu college; bottle painting at Miranda to sketching at Aryabhata. Due to the active participation of our members in various competitions, this year, we could get recognition all over the University.

We also took part in MOOD INDIGO, a renowned annual festival of IIT Bombay held on 26-30th December’2018.

#### ACHIEVEMENTS:

1. International day for the preservation of the Ozone Layer conducted by Ministry of Environment, Forest & Climate Change, Government of India held at National Museum of Natural History on 14th September, 2018 Third position secured by Hitesh Taneja.
2. The Pulse 2018 organized by AIIMS in which Priya Singh and Geeta Malik were awarded fourth position, Consolation prize in T-shirt painting, 1st position was awarded to Geeta Malik in Soap carving event.

3. Rajesh bagged 2nd position at Maitreyi college in Brushless Painting.
4. Priya Kumari and Shubham Raj were selected as finalists of Sketching and Painting Competition at Mood Indigo'18 IIT Bombay.

**ARTISTX'2019:** The First Ever Art Fest organised by Inara. More than 18 different art societies from various colleges joined in for the fest and more than 500 students from different colleges participated in different events. It was one of the most successful events of college with a footfall of more than one thousand.

### COORDINATORS

The student coordinators of society:

President: Shubham Raj

Vice President: Geeta Malik

Art Head: Rajesh Mahadevan

## DASTOOR - THE MUSIC SOCIETY

Dastoor, The Music Society continued its musical journey in the session 2018-19 as well.

The music society under the supervision of Arts and Culture convener Dr.Mukta Majumdar and co-convener Ms Deepshikha, received several new resources to enhance the capabilities of members. Under the guidance of the new music teacher Mr. Mohit Dobhal the team prepared the annual piece and represented RLAC in the classical choir event of the annual fest of IIT KANPUR ANTARAGINI'19 and various other annual fest of Delhi University colleges.

The society under the leadership of its President Piyush Kumar (Geology Hons. 3rd year), Vice president Deveshwar Sharma (Political Science Hons 3rd year) and head coordinators Dipen Gupta And Shreeya Dikshit along with its members Chaitanya Jethani,Ankit Raj Dobhal,Sarthak Pradhan,Khushi Nanchahal,Ayushi Singh, Attar Singh, Chahat Verma, Kriti Bhatnagar,Marvin Savio,Hitesh Taneja,Gajinder, Lucky Chaudhary performed in freshers party of the college, N.A.A.C Visit and Gandhi Study Circle. Dastoor also performed its Indian Classical Piece at Gargi, P.G.D.A.V and Lady Shree Ram college and is looking forward to more performances in the ongoing fest season.

This year Dastoor Music Society formed our college band 'Slippery Feet' which represented RLAC in Battle of Bands Competition at IMI, Maitreyi, C.V.S and IIAD.

'Slippery Feet' bagged 3rd position in C.V.S college's Battle of Bands Competition.



## ILLUSION - THE WESTERN DANCE SOCIETY

'Illusion', The Western Dance Society of RLAC, under the guidance of choreographer Manish Kumar, has expanded its horizons by learning new forms such as funk jazz, urban, hip hop, bollywood and so on. This has helped the members to enhance their dancing skills and get more experience and exposure in the field.

The team has participated and represented the college in the cultural fests of various reputed institutes such as DCAC, DTU, LSR, IIT Delhi, AIIMS, SRCC, Vivekananda Institute, FIIB, IHE and so on. The team also got selected for the finals in the event 'Oasis' of BITS Pilani. The team secured first position in Bhaskaracharya College, second position in Technia Institute and IMT Ghaziabad, and third position in MERI.

Deepak, Kunal, Amit, Gaurav, Shivam, Abrar, Divya, Pratibha, Monika, Yashika, Rupali along with the society president Ankit Singh and Vice President Jagriti Gandhi successfully organised the western dance competitions, 'Groove' and 'Sweat it Out' in the college cultural fest 'Splendor'. Various colleges like Aurobindo College, Motilal Nehru College, Shaheed Sukhdev College and Mata Sundri College participated in the event. The winners were 'Spardha' from Shaheed Bhagat Singh and 'CVS Zest' from College of Vocational Studies.

## ANANTADRISTI - THE INDIAN DANCE SOCIETY

Anantadrishti, as the society name suggests believes in depicting the infinite vision of the divine power through various alluring Indian dance forms.

The society was initiated by Ms Aashna Ukkhal, Ms Nimmy Gaur and Ms Devi Priya in 2018. The founding members have been pursuing the classical dance style and had a vision of creating a society for the further promotion of the art form under the guidance of the ECA faculty members who have constantly supported and motivated the new society in each step during its building process.

The society focuses both on the Classical Dance forms & as well as the Folk-Dance form.

We performed during the NAAC Rating Drive, College Fresher's 2018 and Northeast Festival on 14th February, 2019 where the members performed Manipuri dance to promote the integrity and diversity present amongst Indian culture.

Apart from these events within the college the society took part at various inter-collegial competitions in the Delhi University colleges, such as Janki Devi Memorial college, Atma Ram Sanatan Dharma College, Vivekananda College, Dr. Bhim Rao Ambedkar College, Shri. Venkateshwara college.

We won 2nd prize in NSIT Dwarka and 3rd Position in Shayma Prasad Mukherjee College for "Lavni" dance performance.



The following are the names of the society members:

- Aashna Ukkhal-(President) History Hons (3rd year)
- Nimmy Gaur-(Vice-president) Political science Hons (3rd year)
- Anjali Kumari- Political Science Hons (3rd year)
- Sakshi Jaiswal- Political science Hons (3rd year)
- Kanika- Political science Hons (2nd year)
- Devi Priya-(Coordinator) B.com Hons (2nd year)
- Deepika- BA program (2nd year)
- Tanya Kumar- B.com Hons (1st year)
- Anjali- Hindi Hons (1st year)



## ANDAAZ - THE ANCHORING SOCIETY

This year, Andaaz- The anchoring society of RLAC was formed with a motive to provide students a platform where they could exercise the art of public speaking and anchoring. The members and volunteers of society work diligently in preparing themselves to manage the stage and keep the audience entertained throughout the function. It was started by three of English Hons students Kshamta, Isha and Anukriti under the guidance of ECA Convenor DR. Mukta Mazumdar and Co-convenor Ms. Deepshikha, who constantly motivated and encouraged the students to form the society and take part in the events.

The members of society had exhibited immense potential and confidence by anchoring in the college events like Freshers' Party and college annual fest Splendor 2019. It received a lot of support and appreciation from the faculty as well as the students.

We have taken the society to another level by not only performing within the college but also invited to anchor at the launch of Himmat Plus App for the safety of women on Police day. It had been a great opportunity to represent our college in front of dignitaries.

**Following are the members of Society:**

- Kshamta Gulati-President (BA Hons Eng 2nd year)
- Isha Kataria- Vice President (BA Hons Eng 2nd year)
- Anukriti Prakash- Student Coordinator (BA Hons Eng 2nd year)
- Diya Panjwani – (B.com 2nd year)
- Nikhil Brella-(BA Hons Hindi 2nd year)
- Ojasvita Arora (BMS 2nd year)
- Bhavika Malhotra (BA Hons Eng 2nd year)
- Aayushi Khandelwal-( BA Hons Eng 1st year)
- Jayant Singh Raghav- (BA Hons Eng 1st year)
- Khushi Tuteja-(BA Hons Eng 1st year)
- Nikhil Rajora (BA Hons History 1st year)
- Tanya (BA Hons Pol Sc 1st year)
- Vanya Sharma (B.com 1st year)



# NATIONAL CADET CORPS

The National Cadet Corps (NCC) in India was formed with the National Cadet Corps act of 1948. The motto of NCC is Unity and Discipline.

NCC is also considered as second line of defence. It aims to develop qualities of character, courage, discipline, leadership, spirit of adventure and sportsmanship and the ideas of selfless service in the youth so that they mature to become good citizens. NCC provides the opportunity to participate in various camps which includes Republic Day Camp where they could get a chance of being part of the march past contingent on Republic Day, Thal Sainik Camp, Ek Bharat Shreshtha Bharat Camp, Army Attachment Camp and various other adventure camps i.e Para Basic Course, Parasailing, Para Slithering, Horse Riding, Rock climbing, Trekking Camps etc.



*Flag Hoisting Ceremony during Republic Day Celebration*



*Shri Daya Prakash Sinha addressing the gathering*

Under the leadership of our ANO Capt. (Dr.) Sanjay Kumar Sharma and Rank Holders SUO Hitesh Kumar, JUO Paramjeet Singh, JUO Annu Yadav and JUO Nikhil Pathak our NCC cadets have participated in various activities.

From 28 May- 5 June, 2019 an All India Amarkantak Trek was held at Madhya Pradesh where 2 of our cadets namely JUO Annu Yadav and CDT Shubham Singh participated in the camp.

Annual Training Camp was held from 30th May-08th June, 2019 at NCC Bhawan, Rohini.

Under the guidance of DG, NCC International Yoga Day was conducted in the college from 19th June - 21st June, 2019 where cadets from many different colleges participated.

Delhi University NCC trials were successfully conducted in our college.



*JUO Nikhil Pathak receiving scholarship under Cadet Welfare Society Scheme*



*CDT Chirag Sharma receiving DG Commendation Card*



*TSC Holders 2019 Left to Right, CDT Sabir, CDT Paramjeet Singh*



*RDC Holders: CDT Prakash Singh, CDT Hrithik Singh, CDT Prerit Kala, CDT Chirag Sharma*

Advance Leadership Camp was held at Agra where 2 of our cadets participated: JUO Paramjeet Singh and JUO Nikhil Pathak where a basic training about SSB was provided.

Various other camps where our cadets showed their valour and determination were : CM Rally, Ek Bharat Shreshtha Bharat (EBSB), Army Attachment Camp, All India Shivalik Trekking and others.



*During NCC Fest "Vikrant" 2020*



*RDC and TSC holders with ANO sir and Principal sir*

Listed here are a few prestigious camps where our cadets have shown grit, determination, and the will to win and their worth include: All India Thal Sainik Camp where our cadet won the Silver Medal in the Shooting Competition (JUO Paramjeet Singh) and CDT Sabir was the Best timer in the Obstacle Training among the Delhi Directorate Contingent. Along with it one cadet participated in SNIC camp held at Kakinada, Andhra Pradesh and finally the most prestigious camp across the country the Republic Day camp. In this camp our ANO Capt.(Dr.) Sanjay Kumar Sharma was the Delhi Contingent ANO and 4 cadets of our college got the honour to be part of it: CDT Prakash Singh, CDT Hrithik Singh, CDT Chirag Sharma and CDT Prerit Kala. Our ANO was presented with the DG Medallion and CDT Chirag Sharma was presented with DG COMMENDATION CARD. It was a proud moment for all the members of NCC Fraternity.

NCC cadets also participated in various social activities i.e Swachh Bharat Abhiyan , Drawing Competition, Plantation Drive, Swachh Bharat Swasth Bharat, Vigilance Awareness Week, Run for Unity, Swachhta Pakhwara , Fit India Movement etc.

NCC Cadets presented Guard of Honour to the Chief Guest during National Flag Hoisting Ceremony. This year in Republic Day Celebration Shri Daya Prakash Sinha , Chairman Governing Body and Dr. Rakesh Kumar Gupta, Principal accompanied by Capt.Dr. Sanjay Kumar Sharma unfurled the National Flag.

11th February 2020, is a memorable day for all the NCC Cadets of RLA College when the 2nd edition of the Annual NCC Fest "VIKRANT" was inaugurated. It was a one day event. In the inauguration ceremony Capt (Retd.) Dharamveer Singh was the chief guest and in the closing ceremony Col. Anup Awasthi, CO 7 Delhi Battalion NCC was the chief guest. Cadets from all over Delhi participated in it and the event was a grand success.

During the COVID-19 pandemic, cadets have actively participated from their homes and created awareness through social media , volunteered for the duty on the ground, hosted a webinar by Maj. Gen. (Retd.) Dilawar Singh on the topic Role of Youth Post Covid which was highly inspirational and motivating for the NCC cadets and others who have joined the webinar across the country. Many tree plantation drives were organized by cadets in their localities.

10 cadets got the opportunity to be at the Red Fort for the PM's address to the nation. 6 cadets along with ANO Capt. (Dr.) Sanjay Kumar Sharma volunteered for the services during the COVID -19 lockdown. Cadets have also participated in the local-for-vocal campaign and took the pledge to always promote locally manufactured products.

Submitted by  
**SUO Hitesh Kumar**  
**Teacher-in-charge,**  
**Capt.(Dr.) Sanjay Kumar Sharma**



*Group Photo of NCC fest "VIKRANT 2020"*

## NATIONAL SERVICE SCHEME

The NSS Unit of RLA college observed Swachhta Pakhwada in August 2019 which included an Orientation for the volunteers; Pledge for Swachhta; Awareness rally in the college and the surrounding areas; Cleanliness drive in college campus; and, “Shram Dan” for a Plastic Free campus on 24<sup>th</sup> Sep 2019.

The NSS Unit in collaboration with Indian Spinal Cord Injury Centre organized a poster-making competition “Say No to Spinal Injury” on 21<sup>st</sup> Aug, 2019. Three best posters were awarded with cash prizes on SCI day .

An Electoral Verification Program was planned for the staff and students of the college on 20-23 Sep 2019. On National Youth Day, volunteers were made aware of the strength of youth and their role as a responsible citizen. National Voters Day was celebrated by NSS Unit in which the entire college staff and students took pledge with the motto “No Voter should be left behind” and a signature campaign was also organized to further sensitise college students and staff. A demonstration of

VVPAT and Digital Poster Making Competition was organized.

Donation Drive was planned by NSS unit in both the semesters and was actively supported by students and teachers. The collected items were partly donated to children in slum and partly to children of labourers working in the college

The Unit on the occasion of “150 years of celebrating the Mahatma Gandhi” organized a Poster making and Slogan writing competition on Gandhian Ideology along with Best out of waste competition.

On 26 Sep 2019, volunteers and teachers took pledge for tobacco control.

NSS Unit organized an Awareness Campaign on "Swachhta hi Sewa" at Satya Niketan on 3<sup>rd</sup> Oct, 2019 where volunteers surveyed through shops, thelas, etc. and told them about Cleanliness and why is it so important.

NSS Unit RLA in collaboration with Indian Red



*Signature Campaign with the motto “No Voter should be left behind”*



*Distribution of donated items*



*Swachhta pledge by NSS volunteers*



*Volunteers participating in awareness rally for “Eco-friendly Diwali”*



*NSS volunteers organizing educational camp in slums*



Cross Society organized Blood Donation Camp, on 15<sup>th</sup> October, 2019 and many volunteers donated blood as a responsible citizen of India.

On 24<sup>th</sup> October, 2019, NSS Unit RLA organized an “Awareness Rally on Eco-friendly Diwali” in which volunteers promoted the theme “Stop burning of Crackers”.

The Unit took pledge on Unity Day, and organized a 'Run for Unity' in which many college students also participated.

NSS Unit RLA organized a talk on “Cancer Awareness” by Dr. Shalini Swami, Department of Microbiology, and students made posters on “Say NO to Tobacco”.

### Special achievements

09 NSS volunteers took active part in SBSI (6-26<sup>th</sup> July 2019) a Ministry of Youth Affairs program and have been awarded certificates for the same

In Feb 2020, an educational camp was organized by active NSS volunteers in the adopted slum.



*Students participating in best out of waste competition*



*NSS volunteers organized electoral verification program in the college*



*Anti-Tobacco pledge by volunteers*



Parveen Mehawat participated in Indian Student Parliament organized by Government of India at Vigyan Bhawan.

NSS volunteers also participated in International Yoga Day celebrated by NSS Centre, University of Delhi at Gandhi Bhawan.

Many volunteers participated in events organized by NSS units of other colleges as well.

**Dr Kusum R Gupta**  
NSS Program Officer

## गाँधी स्टडी सर्किल

बीते कुछ वर्षों से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के मूल्यों और विचारों को बढ़ावा देने में राम लाल आनंद महाविद्यालय का गांधी स्टडी सर्किल महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। इस वर्ष भी गांधी स्टडी सर्किल ने ऐसे कई कार्यक्रम आयोजित किये जिनके जरिये गांधी दृष्टि का प्रचार-प्रसार हो सके। गांधी के जीवन को गहराई से जानने के साथ-साथ विद्यार्थियों ने ऐसे कई नये अनुभव भी किये जिससे वे गांधी के विचारों की प्रासंगिकता को समझ सकें।

सत्र 2019-20 की शुरुआत के साथ ही सर्किल ने गांधी भवन के सहयोग से अंतर-महाविद्यालय वाद विवाद रामलाल आनन्द कॉलेज में प्रतियोगिता का आयोजन किया। 30 सितंबर 2019 को आयोजित इस प्रतियोगिता का विषय 'वर्तमान समय में गांधीवादी स्वच्छता की प्रासंगिकता' था। प्रतियोगिता में कुल 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसी के साथ 01 अक्टूबर को 'गांधी और स्वच्छता' विषय पर गांधी स्टडी सर्किल और गांधी भवन के संयुक्त तत्वाधान में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में प्रोफ़ेसर सुब्रतो मुखर्जी मुख्य अतिथि रहे।

इस सत्र का मुख्य आकर्षण 23-24 अक्टूबर को आयोजित दो-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस रही। 'गांधी अक्रॉस द बाउंड्रीज़' विषय पर आयोजित इस सभा में मुख्य अतिथि भारत में सोमालिया की राजदूत फ़ादुमा अब्दुल्लाह मोहम्मद रहीं। फ़ादुमा ने अपने वक्तव्य के साथ इस कॉन्फ्रेंस की शुरुआत की। इसके अलावा गांधी स्मृति व दर्शन समिति के निदेशक डॉ दीपांकर श्रीज्ञान, प्रो. आर.सी. भारद्वाज, प्रो. विगनेश कुमार, प्रो. सलिल मिश्रा, डॉ हरप्रीत कौर, प्रो. सुब्रतो मुखर्जी, प्रो. होइमंती बरुआ, प्रो. संजय भारद्वाज, डॉ मनोज सिन्हा, प्रो. अनंत कुमार गिरी, प्रो. रामिन जहानबेग्लू व प्रो. जियानलुइजी कॉन्फ्रेंस में शामिल रहे। 30 जनवरी 2020 को गांधी जी के शहीदी दिवस पर राम लाल आनन्द कॉलेज सर्किल ने एक रैली का आयोजन किया। 400 से अधिक विद्यार्थियों ने रैली में भाग लेकर इसे सफल बनाया।

21वीं सदी में महिलाओं की स्थिति पर चर्चा करने के लिए '21 सदी में महिलाएं : समस्याएं, चुनौतियां व बदलती धारणाएं' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 28 फ़रवरी 2020 को आयोजित इस संगोष्ठी में समाज के अलग-अलग क्षेत्रों से वक्ताओं को आमंत्रित किया गया। सुलभ अंतरराष्ट्रीय समाजसेवी संगठन की अध्यक्ष व 'पद्मश्री' से सम्मानित 'श्रीमती ऊषा चौमर' जी ने पहले अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया व विद्यार्थियों से अपनी जीवन यात्रा साझा की। इसके बाद जे के बिज़नेस स्कूल में रजिस्ट्रार के पद पर कार्यरत श्रीमती सुप्रिया सहगल ने अपने वर्कस्पेस में मौजूद समस्याओं पर चर्चा की। इस संगोष्ठी में एशियन मैरथान विजेता श्रीमती सुनीता गोदरा ने भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराई व एक एथलीट के रूप में अपने अनुभव साझा किये। विद्यार्थियों को गांधी जीवन का अनुभव कराने के लिए सर्किल ने अहमदाबाद की शैक्षणिक यात्रा का आयोजन भी किया। अहमदाबाद में विद्यार्थियों



का रहन सहन साबरमती आश्रम में हुआ। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को गांधी जीवन अनुभव कराना था और विद्यार्थियों ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया। इस छः दिवसीय यात्रा में विद्यार्थियों ने स्टैचू ऑफ़ यूनिटी के साथ-साथ कई अन्य पर्यटक स्थलों का नज़ारा किया।



यात्रा के पश्चात अप्रैल की सात तारीख को अंतर महाविद्यालय निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने 'वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गांधीवादी स्वच्छता की प्रासंगिकता' विषय पर अपने लेख प्रस्तुत किये। सत्र के अंत में सर्किल ने एक वेबिनार का आयोजन किया जिसमें कई विषयों पर चर्चा की गई। आज की स्थिति में गांधी शिक्षा और समाज का अनुबंध, अहिंसात्मक संवाद, महामारी में गांधी, कोरोना के उत्तर काल में गांधी दृष्टि : एक समाधान, महात्मा गांधी की दृष्टि में संयम इस वेबिनार में चर्चा के केंद्र बिंदु रहे।

गांधी स्टडी सर्किल के संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार के निर्देशन में इन सब कार्यों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया। सभी प्राध्यापकों के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने इन कार्यक्रमों के आयोजन में पूरा सहयोग दिया। साथ ही, इन आयोजनों के माध्यम से विद्यार्थियों ने गांधी को गहराई से जाना। प्राध्यापकों व विद्यार्थियों के कठोर परिश्रम के फलस्वरूप राम लाल आनंद महाविद्यालय के गांधी स्टडी सर्किल ने बहुत कम समय में बहुत लंबा सफ़र तय किया है। भविष्य में भी गांधी स्टडी सर्किल इसी तरह गांधी के विचारों को प्रसारित करता रहेगा।

**दीपक कुमार त्रिवेदी**  
अध्यक्ष, गांधी स्टडी सर्किल



## ‘आरोह’ हिंदी वाद-विवाद समिति

वाद-विवाद वह औपचारिक विधि है, जिसमें एक ही विषय पर दो परस्पर विपरीत विचारों के समर्थक अपना-अपना तर्क रखते हैं। विद्यार्थी जीवन में वाद-विवाद अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों को पक्ष-विपक्ष में अपनी बात रखने का अवसर प्रदान करती है। इसी दिशा में राम लाल आनंद महाविद्यालय की हिंदी वाद-विवाद समिति ‘आरोह’ छात्रों को एक नया मंच प्रदान करती है। सत्र 2019-20 की शुरुआत में संयोजक डॉ. सुभाष चंद्र डबास द्वारा समिति परिषद का गठन किया गया जिसमें अध्यक्ष पद पर दीपक कुमार त्रिवेदी, उपाध्यक्ष पद पर अनुग्रह द्विवेदी, सचिव पद पर मानसी बिष्ट व सह-सचिव पद पर सचिन चौहान कार्यरत रहे। छात्र परिषद ने संयोजक डॉ डबास और डॉ दीप्ति गुप्ता, डॉ राजेन्द्र सिंह व डॉ सुरेंद्र कुमार के संरक्षण में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया।

परिषद ने सत्र की शुरुआत में 6 अगस्त 2019 को नए सदस्यों को जोड़ने के लिए ऑडिशन का आयोजन किया। इसमें कुल 20 विद्यार्थियों ने भाग लिया और 5 को चयनित किया गया। महाविद्यालय ने 9 सितंबर 2019 को अंतः-महाविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसमें हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के पवन एवं पारस की जोड़ी को प्रथम पुरस्कार मिला। 23 जनवरी 2020 को अंतर-महाविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 15 महाविद्यालयों ने भाग लिया। इसमें प्रथम पुरस्कार इंशा व नसरीन (जाकिर हुसैन कॉलेज), द्वितीय पुरस्कार शिवम व पंकज (मोतीलाल नेहरू कॉलेज) और तृतीय पुरस्कार आनंद व प्रिंस (शिवाजी कॉलेज) को मिला।

आरोह समिति की उपलब्धियों में मनोज व आभा ने राजधानी कॉलेज राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। धनंजय ने आत्माराम सनातन धर्म महाविद्यालय में श्रेष्ठ प्रश्नकर्ता का स्थान प्राप्त किया। गीतू को जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज में प्रमाण-पत्र से नवाजा गया। समिति के अन्य सदस्यों ने भी दिल्ली विश्वविद्यालय की अलग-अलग वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इन सभी छात्र-छात्राओं को महाविद्यालय का नाम रोशन करने के लिए अनंत शुभकामनाएं।

दीपक कुमार त्रिवेदी

अध्यक्ष

‘आरोह’ हिंदी वाद-विवाद समिति



## ENACTUS

“A journey of thousand miles begins with a single step.” Under the able guidance of honorable Principal Dr. Rakesh Kumar Gupta, Convener Dr. Neena Mittal and Co-Convener Siddharth Gupta. We marked the beginning of this year by organizing an Orientation for newly enrolled students, followed it up with a recruitment drive and formed a team of 42 enthusiastic members.

The team holds two projects currently, one is the Paper Pencils project- Roopantaran which is a sustainable model to manufacture and market pencils made out of newspapers in collaboration with Family of Disabled. Second project is still in the early stages of development – Project Bantawala, another sustainable entrepreneurship model based on upcycling glass bottles.

The glass bottles crafts a.k.a. Project Bantawala is an undertaking of young entrepreneurs trying our best to make beauty out of something bleak (harmful glass waste). For the same, we organized a bottle-decorating competition in our college on 16th October, 2019 to commemorate the Founder’s Day of Enactus, RLAC. It drew participants from several colleges.

For Daan Utsav 2019, Enactus RLAC volunteered to boost the sales for FOD at the Janakpuri Petrol Pump. The students went in two shifts for five days and managed to get Family of Disabled heavy sales and donations as well.

The team represented both projects through



*Team Enactus 2019-20, Bottle Decorating Competition, 16th October 2019*

participation in cross college Business Plan Competitions held at Dayal Singh College as well as bagged second position in Motilal Nehru College and setting up stalls in Hindu College for their Diwali Mela, Aryabhata College Sports Festival and ARSD College Enactus Fest. We had a brief pilot run of our upcoming upcycling project as well and a display of beautifully decorated glass bottles for sale in all the stalls. Four of our students attended the Social Entrepreneurship & Innovation Workshop (Organized by Jesus and Mary College) on 15th October, 2019. Team Enactus RLA got a privilege to interact with Mr. Terry Torok, Global Chief Innovation Officer, who mentored the participants and taught them how Enactus has benefitted society over the years.

At Enactus, the aim is to keep the environment clean, green and healthy for all and in addition to it also strives hard for the upliftment of the specially abled ones.

The core team for 2019-20 consists of Dhruv Sharma (President), Ruchi Baid (Vice-President), Abhigyan Mishra (Social Media and Networking Head), Abhishek Gupta (Project Head - Roopantaran), Masaya Sahoo (Project Head - Bantawala), Garima Kheterpal, Priyam Kapoor, Himani Malhotra, Harsh Taneja, Kratu Gupta and Lishka Hurra. As for Advisory for this year we had the guidance of Shivam Pandey, Megha Sawhney and Anmol Jain.

**Ruchi Baid**  
Vice President, Enactus  
Ram Lal Anand College

## **CENTRE FOR ENTREPRENEURSHIP AND TECHNOLOGY DEVELOPMENT (E-CELL)**

Entrepreneurship development is important to enable the individuals grow into a dynamic entrepreneur and be able to contribute towards the economic growth of the country. While society innovates, the entrepreneurship and business creation affixed to the schooling in India, still remains stagnant. Most of the institutions in India are unable to impart education which is believed to be the centerpiece of contemporary education i.e the capacity to not only create differentiated businesses but also encourage creative and ambitious thought process. The government of India has been promoting empowerment of the young minds to grow and set up their own business. It has further catalyzed the startup culture in India. In order to promote economic opportunities, an Entrepreneurship Cell is working hard under the able guidance of honorable Principal Dr. Rakesh Kumar Gupta, Coordinator Dr. Prerna Diwan and faculty members Dr. Rita Jain, Dr. Sanjay Kumar Sharma, Ms. Pooja Gayatri and Dr. Deepti Gupta; the Entrepreneurship Cell of Ram Lal Anand College. The goal throughout has been to provide opportunities to students to utilise their smarts and risk taking skills by outperforming their cumulative classroom skills, which had been further initiated by multiple invited lectures and motivational dialogues from the very renowned and successful entrepreneurs/CEOs from around the country.

The Entrepreneurship Cell also takes pride to announce that it has been able to nurture leadership and entrepreneurial spirit in young minds of the college by providing them a platform to learn and carry out the skillsets essential for business creation and give them tools to follow this path throughout their educational experience.

In order to stimulate the participation of young minds into the entrepreneurial sector and help them kick start their own startups, the E-Cell organized first Business Plan Competition on 23rd April, 2019. It was a productive platform for budding start up ideas to gain advice to facilitate a better product/service development and network opportunities. The feasible ideas were provided aid through guidance/mentorship, seed funding and incubation to go about the idea. Under the aegis of this centre, ten new ideas were shortlisted for this First Business plan competition 2019. The students presented their ideas. Participants were guided with some tips to kick start their startups which included, analysing the problem statement, understanding the consumer's need and the entrepreneur's solution to the same, identification of the targeted customers, estimation of potential market size and identification of proper cost structure. In order to understand and evaluate the critical thought process of the participants there were situation based questions asked to them. Ideas were presented to the panel ranged from amongst sectors like education, service, agriculture and food. The B-PLAN competition was a massive success with great enthusiasm and energy in participants, who made it profoundly informative and fruitful. We had a panel of five teachers and our special guest, Mr. Digvijay Singh, COO Indian Angel Network. to judge the competition. Shubham Raj of B.Sc. (Hons) Computer science III year was awarded a cash Prize of Rs. 5000/- for Best Startup Idea. The idea was based on virtual study with the use of an app.

In the end, every idea was given an able guidance and equal importance. Each idea was judged keeping in mind the critical analysis of the sectors towards which the ideas were directed.

To orient and motivate students and faculty members for innovation and entrepreneurship, in new session 2019-20 orientation program was held on 6th September 2019. Founder of StartUp Monk. Mr Sivesh currently piloting lot of Startups in the radar of Startup Ecosystem was invited to this event. He is a competent Mentor, Angel Investor and facilitates building startups from scratch. A Keynote Speaker in many events and a TEDx Speaker as well. He is a Member Of The Board Of Advisors of the Company Skill Prodigy, based in Melbourne, Australia.



On 19th September 2019 the Entrepreneurship Cell in collaboration with Woman Welfare Advisory Committee of Ram Lal Anand College organised an interactive workshop reflecting on the topic 'Legal rights for women'. The workshop "Ab Samjhauta Nahi" is a part of initiative by Vivel and was hosted by the Josh Talk speaker Ms. Anmol Kohli.

The "Know Your Rights" initiative by Vivel is raising awareness in various institutions about the legal rights that empower and safeguard women. Through their nation-wide workshop series in colleges, Vivel is set to inspire young Indians to be Champions of Equality. The workshop dealt with issues relating to fundamental rights, gender equality, cyber security, cyber bullying, cyber stalking and the laws dealing with the same. The speaker informed the students about various committees in different institutions and workplaces established to deal with bullying, harassment and various other criminal offences against women.

There were elaborate discussions on the legal rights and laws that are in place, how the awareness is spreading gradually around the country and the most influential cases that paved way for the influential change that led the High Court of India amend and establish laws regarding various crimes against humanity.

The workshop was concluded with the intention that it is our right to know our rights.

Business Plan Competition 2.0 for the session 2019-20 for undergraduate students was held on 11th November 2019 at 3 pm. The ideas were judged by Mr Aishwarya Kachhal, Founder & CEO of qQuick and Aditya Rastogi, B.Com Programme III year was awarded cash Prize of Rs. 5000/- for Best Startup Idea. The other startup ideas presented by students were appreciated as well.

Throughout the year, the members of the society have put forth consistent efforts and participated in the events and competitions organised by various colleges namely, Kamala Nehru College, Hansraj College, Kirori Mal College, Rajdhani College, Daulat Ram College, Maitreyi College, Shaheed Sukhdev College of Business Studies, Motilal Nehru College, Sri Venkateswara College, Aryabhata College, Shaheed Bhagat Singh College, Deshbandhu College, etc.. Ojasvi Srivastava (B. Com Programme, I year) bagged first position in the Corporate Meet organised by Finance and Investment Cell, Ramjas College and Fiontraí organised by Deshbandhu college.

The Entrepreneurship Cell has cumulated a robust growth throughout and believes that it shall thrive to do the same in the coming future endeavours by enriching and sharpening the entrepreneurial skills of students who wish to establish and successfully run their own enterprises in future.

Instagram: [www.instagram.com/ecellrlac](http://www.instagram.com/ecellrlac)

Facebook: [www.facebook.com/ecellrlac](http://www.facebook.com/ecellrlac)

YouTube: [www.bit.ly/ECRLACYT](http://www.bit.ly/ECRLACYT)

Website: [www.ecellrlac.com](http://www.ecellrlac.com)

**Anshika Harit**  
(Student Head, Content Writing)

## **EQUAL OPPORTUNITY CELL (EOC) 2019-20**

EOC has established itself as a space of repute, sharing and solving the problems of disadvantaged groups. It empowers students by creating access and opportunities by engaging them in activities that are experiential and trans-disciplinary such as interactive sessions with students on issues of national and international significance, seminar, panel discussion, webinar, etc.

The Cell smoothly completed and monitored the admission cases of the disadvantaged categories in the academic year 2019-20. In its quest to break social barriers, integrate student community, and build an inclusive environment for teaching and learning, EOC of the college worked hard to integrate disadvantaged groups. The Cell in collaboration with 'SUGAM' (a society for differently-abled students) organized a sensitization awareness drive within the college premises with physically disabled students along with NCC cadets, NSS volunteers on 09th August 2019, 10:00 am onwards.

The cell proposed to organize a seminar on 9th–10th April 2020 which was immediately adjourned due to the increasing cases of Corona Virus. Later, a webinar was organized in collaboration with 'SUGAM' on 3rd July 2020, keeping in view the interest of the students on the 'Impact of COVID-19 on Students Coming from Socially Marginalised Groups and Persons with Disabilities'. The webinar was organized on Google Meet and more than 60 students have participated which includes nearly five PWD students. The webinar was graced by eminent scholars, administrators, medical professionals, and journalists.

**Dr. Pratik Kumar**  
Convener

**Dr. Surender Kumar**  
Co-convener:

## **RESEARCH AND IPR CELL**

Members of the Research and IPR cell are actively involved in the interactions with the faculty members of all the departments to motivate and guide them for project proposal writing to get extra mural funding for research in the college. In its efforts to further augment the research activities at undergraduate level and motivate the fellow colleagues and generate some preliminary data to apply or extramural grants, college introduced a new scheme "College Research Grant". Under the scheme college provide a seed money of Rs. 30,000 to 50,000 to selected proposals. RnIPR cell successfully developed guidelines for inviting proposals, invited proposals, screened and shortlisted the received 12 project proposals and discussed with the principal and co-investigators and finally recommended 8 proposals for funding. These projects are running in the college from 1st January. RnIPR cell also facilitated approval and forwarding of four proposals submitted under STRIDE scheme of UGC.

**Dr. Vandana Gupta**  
Co-ordinator  
Research and IPR Cell



## HASRATEIN: THE DRAMATICS SOCIETY

The Dramatics Society organised distinct events and performed on various occasions within college as well as at major competitions across different renowned institutions in the country including Kirori Mal College, LMNIIT, Jaipur, etc. Apart from choosing its team after rigorous auditions the society also organised a week-long theatre workshop under the guidance of Sh. Avtar Sahni a renowned and Sangeet Natak Academy awardee from the field of theatre.

Noteworthy among students' accomplishments was recognition at the 'Pride of Indian Education Awards' where RLAC Dramatics Society was awarded with the title as 'Most Entertaining Dramatic Society in Delhi-NCR'. The prize was handed over by renowned actress Mandira Bedi. The event was organized by Brand Impacts, a well known media management company.

**Convenor: Dr. Vanadana Gandotra;**

**Co-convenor: Mr. Taha Yasin.**

**Office bearers: Ragini Saxena (President) Ganga Neeraj (Secretary)**



## NORTH-EAST SOCIETY

The term 'Culture' implies the way of life of different social groups throughout the world. Nevertheless, cultural differences should not be seen as a barrier to the unity of a nation, but rather a binding factor for better cause of a nation. The North-East Society of Ram Lal Anand college was created, with the vision to eliminate the feeling of alienation among the students from North-East, to bridge the gap between them and other students of the college posed due to language barrier, to encourage and support the students from this region morally, emotionally, culturally and academically. Since its inception in 2016, North-East Society has been functioning actively with a great support from the entire college and constant support of Principal and other members of the society. This year the North-East Society of Ram Lal Anand College added two new faculties viz Dr Sarbari Nag and Miss Leimiwon Zimik as Committee Members of the society.

The society welcomed its newly elected members officially on 18th September 2019, by organizing a fresher's meet, in the college seminar hall. The program started with a welcome speech by Principal, Dr. Rakesh Kumar Gupta. He addressed many problems faced by the North-East students and encouraged everyone for their active participation in every aspect in the college premises. He also reminded the vision and the objectives of the society by highlighting the importance of being a responsible student. He then felicitated the elected office bearers for the year 2019-2020. The following is the list of office bearers of the newly formed students committee:

Akoijam Suranjoy Singh	President	Dhritismita Medhi	Cultural Secretary
Yogesh Sharma	Vice-President	Subhashi Mahanta	Finance Secretary
Rituraj Hazarika	General Secretary	Amit Tajo	Sport Secretary
Niwin Konthoujam	Joint Secretary	Pasounni	Executive member

The office bearers pledged to take up the responsibility and help every member of the society in all possible way. After the felicitation, a formal introduction was given by the new members of the society. An ice breaking session was taken up with games, dancing, singing etc. Based on their talents shown, two of the students were crowned with the title of Mr. and Miss. Freshers of North-East respectively. Teachers and students were also presented with gifts as a welcoming gesture and the program masked its end with refreshments being served.

Regular interactive sessions and meetings between the members and the teachers of the society were fruitful in addressing various problems faced by the students. Throughout the year, many of the members took active participation in various extracurricular activities like sports, dance etc. organized by different colleges and brought glory to the society in specific and to college as a whole. Keeping the unique tradition, college fest "SPLENDOUR-20" began with "AARANYA-20" on 13th of February 2020. Presence of Shri Hibu Tamang (Additional CP- Security, Delhi Police) as the Chief Guest made the occasion a special one. The chief guest who was also heading the special Police Unit for the NE Region in his speech emphasized the need of the hour to bring students from different parts of the India on a platform where they can show case their rich social and cultural traditions and understand each other very well for building a great nation. The day long program included music, folk dances of several states like Assam, Manipur, Arunachal Pradesh and Uttarakhand, ramp walk presenting the beautiful culture and tradition of the North-East region.

Performances were mesmerizing and were greatly appreciated by a large participation of students from various colleges and special band performance involving one of our teacher Miss Leimiwon Zimik was dedicated to the environment. Aaranya-20 ended successfully with a message to recognize, communicate and raise awareness about the cultural backgrounds and practices of the Northeastern states amongst everyone in a harmonic manner.

**Dr. Prabhas Kumar Pande**  
Convenor, North-East Society



## RLAC CHAPTER OF SPIC MACAY 2019-20

SPIC MACAY (Society for the Promotion of Indian Classical Music and Culture Amongst Youth) was established by DR. Kiran Seth in the year 1977 with a motive to preserve India's most famous art forms by bringing them amongst the young students so that they could know and appreciate the value of their own cultural heritage. Over the past few years Ram Lal Anand college is associated with SPIC MACAY and support the very cause. In collaboration with SPIC MACAY we have had many classical musical concerts such as recital Hindustani Raag, Sitar, Flute, Santoor, Sarangi by great maestro in their respective fields. These events have been inspirational for our students as they get an opportunity to experience and appreciate the magical charm of Indian musical tradition which is other wise losing its significance in today's times.

RLAC chapter of SPIC MACAY organised a three-day workshop from 17-19 October'19 on Madhubani Painting conducted by President Awardee Smt. Ambika Devi. 29 students of RLAC from various courses participated in this workshop. Madhubani art is a traditional art of Mithila region of Bihar. It is mostly done by the women of this region with natural dye colours. In recent times the aesthetic and cultural significance of this art form has been recognised worldwide. Ambika jee is an internationally renowned Madhubani artist and it was a great privilege to have her in our college as a mentor who thoroughly encouraged the students to pursue this art form. In the workshop, Ambika jee introduced this craft to the students, origin of Madhubani painting and the themes on which these paintings are done which include Hindu deities, natural entities such as sun, moon, animals, plants and birds. The students were also informed about the natural, organic colours and how they are prepared with dried leaves, flowers, turmeric, beet roots, rice water, natural glue, oil soot etc. Each student was distributed a handmade sheet and was asked to choose any design they would like to paint in the given time frame. Ambika jee continuously supervised and guided the students in this workshop towards the completion of their paintings. She mentored them well to build an understanding of Madhubani painting as a part of our cultural heritage.

On the final day of workshop each student had a fascinating painting in his/ her hand and a feeling of joy and satisfaction on their faces for learning something new. They had a great experience throughout the event. The students were awarded with a certificate for successfully completing a three-day workshop. They also acknowledged that such events give them a platform to showcase their innate talent and allow to exercise their creativity. RLAC is grateful to SPIC MACAY for giving us the opportunity to conduct this wonderful workshop. We look forward to organise many such events in coming years too.



**Ms. Deepshikha Kumari**  
Convenor, Spic Macay RLAC

## समदृष्टि और सृजन वॉल मैगजीन कमेटी

वर्ष 2019–20 सत्र में इस कमेटी द्वारा विविध गतिविधियों का आयोजन कराया गया जिसका उद्देश्य छात्रों की सृजनशीलता कलात्मकता, वैचारिक दृष्टिकोण को प्रखर और परिमार्जित करना रहा। यह वर्ष देशभर में गांधी जयंती के 150 वीं शताब्दी के रूप में मनाया गया, अतः इस वर्ष समदृष्टि को "गांधी विशेषांक" के रूप में निकालने



की योजना को कार्यबद्ध किया गया। सर्वप्रथम कमेटी में छात्र संपादक मंडल की नियुक्ति हेतु एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता द्वारा संपादन कला और रचनात्मक कौशलता की कसौटी पर परख कर सम्पादकीय मंडल का चयन कमेटी के सदस्यों द्वारा किया गया। कलात्मक कौशलता के लिए कला प्रतियोगिता भी रखी गई तत्पश्चात कमेटी का छात्र संपादकीय मंडल नियुक्त कर अगस्त माह में "भित्ती पत्रिका" को स्वतंत्रता दिवस के विचारों से जोड़कर संपादक मंडल द्वारा कलात्मक अभिरुचि से प्रदर्शित किया गया। गांधी विशेषांक के लिए विषय "गांधी:150 years Not out" प्रतियोगिता के अंतर्गत हिंदी अंग्रेजी द्विभाषी प्रतियोगिता द्वारा गांधी विषयक विचारों को दिनांक 1 अक्टूबर 2020 को सम्पन्न कराया गया। जिसके अंतर्गत कविता, लेख, व्यंग्य आदि सभी विधाओं में विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक सौंदर्य को दर्शाया। इस प्रतियोगिता में 100 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसका निर्णायक मंडल इस प्रकार रहा— हिंदी रचनाकारों के लिए डॉ. अर्चना गौड़, डॉ. अटल तिवारी और अंग्रेजी लेखों के लिए डॉ. ऋतंभरा और डॉ. सलोमी जॉन। श्रेष्ठ रचनाओं को संपादित करके समदृष्टि के लिए चुना गया। इसके साथ ही पोस्टरस कार्टून और मुख्यपृष्ठ के लिए गांधी विषय प्रतियोगिता कराई गई। डॉ. देवेन्द्र कुमार, डॉ. ऋतंभरा और डॉ. दीप्ति गुप्ता के निर्णायक मंडल द्वारा निर्णय घोषित किए गए। प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम:—



पोस्टर मेकिंग :- सुश्री प्रिया कुमारी बी.ए.प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

कार्टून कला :- सुश्री आकांक्षा इतिहास विशेष द्वितीय वर्ष

हिंदी लेख :- ऋतुज कुमार हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

अंग्रेजी लेख :- अमन कुमार राजनीतिक विज्ञान तृतीय वर्ष

आवरण पृष्ठ :- सुश्री ईशा महाजन अंग्रेजी विशेष द्वितीय वर्ष

सभी विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप 1000/- की नकद राशि और प्रमाण पत्र प्रदान किये गए। छात्र संपादक-मंडल को ई-प्रमाण-पत्र दिए गए और ट्रॉफी प्रदान की गई। अशुद्धि शोधन से प्रकाशन की यात्रा तक सम्पूर्ण संपादक मण्डल ने अथक प्रयास किया।

डॉ. अर्चना गौड़  
संयोजिका

## RLA COLLEGE STUDENTS UNION (2019-20)

The RLA College Students Union (2019-20) was constituted after following a due process of democratic election on 12th, September, 2019 along with Delhi University Students Union election. Gulshan Kumar Jha was elected as the President, Sweta Tanwar as Vice President, Anup Yadav as Secretary and Akash Shokeen as Joint Secretary. Besides, Jitendra Bhardwaj and Satyendra Pratap were elected as two Central Councilors (representatives of RLASU in DUSU) for this academic session.

The first event organised by the RLASU, in cooperation with ECA committee, of this session was the “Fresher’s Welcome”. The function, held on 1st October, 2019, was well attended and a grand show where large number of first year students displayed their skills in various competitive events. Students of Arts and Culture Society presented brilliant dance and music performances. It showcased the all-round talent of the first year students two among whom were adjudged as “Mr” and “Miss” Fresher. On this occasion, the newly elected office bearers of RLASU were also given badges and mementos. The function ended with a DJ evening where DJ Karan made students dance to the popular Bollywood and other songs.

Following the tradition of the previous session, the RLASU and Art and Culture of Society organised a three-day Annual College Festival “Splendour 2020” during 14th-16th February 2020. The festival was inaugurated by Mr Hibu Tamang, a decorated IPS officer of UT cadre-2004, presently posted as Additional Commissioner, VVIP security. In his speech Mr. Tamang highlighted the significance of integrating North-Eastern Culture into the North Indian cultural milieu. Besides he also invited students of North-East and other states to approach him directly if they face any problem outside their academic life. The first day of the festival, as last year, was entirely devoted to cultural program of the North-Eastern part of India. Students presented a beautiful orchestration of dance and music performances of Manipur, Assam, Sikkim, Nagaland, Arunachal Pradesh and Uttarakhand. A ramp walk showcasing the traditional dresses of North-Eastern regions was specially appreciated by the audience.

The next two days were marked by fun-filled and competitive events besides BDM, DJ and Star night. The competitive events included- Indian Classical choir, Western Dance (solo and group), Battle of Bands, Art Exhibition, Hindi Debate, English Debate, Street Play, Indian Classical Dance (solo), and Indian Folk Dance. These events saw student participation of more than 20 colleges across DU and other universities. Attractive cash prizes and certificates were given to the winners. A popular band AMR enthralled the students on BDM night. A renowned Bollywood and Punjabi singer Akhil performed in the star night. The acclaimed singer attracted unprecedented students’ crowd of this and other DU colleges.

**Dr. Rakesh Kumar**  
Convener RLA SU (2019-20)

RLA STUDENTS UNION (2019-20)



## ABHIVYAKTI THE CREATIVE WRITING SOCIETY

Abhivyakti saw its foundation in 2019 with Dr. Ritambhara Misra and Dr. Archana Gaur as the Convenor and Co- Convenor respectively and with a current family of 19 members including Deepak Kumar Trivedi as President and Jennis Jacob as Vice President. Departments for Social Media and Graphic Designing include Kshitiz, Anjali, Shreya, Aviral and Saavy with the Content Editing headed by Rupali, Mitthu, Junaid and Kshitiz.



Abhivyakti organised 3 events namely an Intra-college Writing Competition and Workshop on 4 November 2019, an event in collaboration with Samdrishti dedicated to Mahatma Gandhi's 150th Anniversary on January 28, 2020 and an Online Poetry Event called Chitralkhan in April.

The achievements section was illuminated with 12 prizes as Kshitiz, Shreya, Anjali, Ojasvita and Junaid won honours across the University campus.

The society shares its gratitude towards the office bearers, student members, teacher convenors and the Principal for the role they played in helping the society grow.

**Team Abhivyakti**





## SANGOSHTHI, THE SEMINAR/CONFERENCE SOCIETY

Sangoshthi, the Seminar/Conference Society of the College organised a monthly lecture series on contemporary issues as per the mandate of the Society. Auditions for the constitution of the team were held in September 2019. The USP of each programme organized by Sangoshthi has been that it attracted huge number of students across disciplines and their participation through long interactive sessions.

The first monthly lecture was held on Abrogation of Article 370 and its Repercussions, by Yashraj Singh Bundela, an advocate in the Supreme Court, having expertise in J&K issues. Another lecture was held on India at Present: Challenges and Possibilities. Eminent economist, Dr. Ashwani Mahajan and Sh. Rajiv Chuni, a POJK victim were the speakers who talked about the economic and contemporary political challenges respectively.

Sangoshthi held another successful interactive programme on the much-debated topic- CAA – NRC: Myths and Facts in association with the Students Union of the College. Eminent journalist and columnist and ex-MP Sh. Balbir Punj explained the Citizen Amendment Act (CAA) and National Register of Citizens (NRC) and tried to clarify the “myths” being spread against the law.

**Dr. Prerna Malhotra**  
Convener

## अनुवाद पाठ्यक्रम हिन्दी विभाग

गत वर्ष की भांति भारतीय अनुवाद परिषद के संयुक्त तत्वाधान में 1 फरवरी 2020 को महाविद्यालय में अनुवाद पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। जिसमें 30 विद्यार्थियों ने अपना पंजीकरण कराया। 40 घंटे का यह पाठ्यक्रम स्ववित्त योजना से डॉ. नीलम ऋषिकल्प (हिन्दी विभाग) के संयोजन से सम्पन्न हुआ। कॉलेज के लिए इस वर्ष गर्व का विषय है कि कोविड संक्रमण काल की रुकावट के कारण 14 घंटे का पाठ्यक्रम जूम/गूगल मीट क्लास के द्वारा 2 जून 2020 को सफलता पूर्वक पूरा किया गया।

**रिपोर्ट – डॉ नीलम ऋषिकल्प**  
संयोजक – अनुवाद पाठ्यक्रम  
रामलाल आनंद महाविद्यालय



## WWAC ANNUAL REPORT SESSION 2019-20

Women Welfare Advisory Committee (WWAC) organized an array of successful events and social media campaigns like Sunday Salute, Throwback Thursday and Thank you Tuesday in the session 2019-20. The efforts to sensitize students about women and gender were marked by enthusiastic participation of students and due support from teachers of all departments. The activities carried out were as follows:

### 1. Workshop on Legal Rights for Women

WWAC in collaboration with E- Cell organized a workshop on Legal Rights for Women by Josh Talks speaker Anmol Kohli, under the banner of ITC Vivel ongoing campaign- #AbSamjhautaNahi. The workshop, held on 19 September 2019, was extremely well received by both students and teachers, as our enthusiastic speaker brought into light various laws made for the protection of women.

### 2. Self Defense Training

A three day Self Defense Training for Women was organized from 6th to 8th November 2019 in the front lawns of college. The training aimed to teach students how to safeguard themselves in uncomfortable situations. The event was organized in collaboration with Amar Ujala and inaugurated by Sh. Satish Kumar Kain- ACP Vasant Vihar.

Students learnt useful tricks, saw a boost in their confidence levels and insisted on organizing more women centric trainings.

### 3. Sashakt- Lecture by Ms. Kamla Bhasin

Renowned feminist and social reformer Ms. Kamla Bhasin graced the college premises on 3rd February 2020, to impart the light of her wisdom and inspire students to take up small steps to make both men and women – “Sashakt” with the message – “We are Stronger Together”. With her slogans and poetry, she brought life to the packed amphitheater of 150+ students and teachers. The event brought WWAC immense pride and appreciation from one and all.

### 4. Sashakt- Lecture on Menstrual Hygiene

On 25th February 2020, WWAC organized another lecture in the series Sashakt, dedicated to the tabooed cause of Menstrual Hygiene. Dr. Shelly Singh, Vice President of the Delhi Gynecologist Forum, South Delhi and a renowned doctor, discussed precautions and medical solutions for menstrual issues. The event was lauded by all, as it brought to light the most common yet undiscussed issues of women.

**Dr. Parul Lau Gaur**  
**Convener**

President: Ojasvita Arora



## YOGA & MEDITATION COMMITTEE

The Yoga and Meditation Society organized 3-day Yoga workshop from 19th June to 21st June 2019 on this occasion of 5th International Yoga Day in association with 7 Delhi Battalion of NCC. The aim of the workshop was in line with the theme of IYD in spreading the importance of Yoga and meditation to keep ourselves healthy and prevent life style diseases. A total of 60 students and teaching as well as non-teaching staff members took active part in the event all three days. In addition, 100 NCC cadets also participated in the event. The programme was supported by Ministry of AYUSH in terms of Yoga T-shirts for the promotion of Yoga for harmony and peace.

A recruitment drive was conducted in the first week of September 2019 and registered more than 60 student members. Regular classes were conducted at 8-9 am from 23rd September 2019 to 30th November and from 15th January 2020 to 5th March 2020. A team of 12 students was also trained by the experienced Yoga Instructor for various competitions. The team won accolades in rhythmic pair and non rhythmic intercollege competition at Gautam Buddha University, Greater Noida. Members of the team participated in Delhi Olympic Games 2019-20 Yogasana competition and Arpit secured 4th position in West District Yogasana category 20-30 Years (Boys) and Anand, Arpit, Mohini, Sachin and Anuj qualified for the state level competition.

**Dr. Sunila Hooda**  
(Convener, Yoga and Meditation Society)



## फंक्शन कमेटी

किसी भी कॉलेज का गर्व उसका पुरस्कार वितरण समारोह होता है; जहां न केवल विद्यार्थियों को प्रोत्साहन और सम्मान मिलता है बल्कि प्रवक्ताओं के आनंद की सीमा भी अद्वितीय रहती है। प्रत्येक प्रवक्ता अपने विद्यार्थियों को पुरस्कृत होता देखकर अपनी कर्तव्यनिष्ठा और शिक्षण पर गौरवान्वित होता है। राम लाल आनंद कॉलेज का परिसर ऐसे पुरस्कृत विजेताओं की मोहक मुस्कान और आत्मविश्वास में 25 अप्रैल 2019 को खिल उठा; फंक्शन कमेटी द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह 2018–2019 के मुख्य अतिथि प्रो. रमेश वी. सोनती (डायरेक्टर ऑफ एनआईसीजीआर), तत्कालीन चेयरमैन प्रो. विनय कुमार (डिपार्टमेंट ऑफ फिजिक्स एंड एस्ट्रो फिजिक्स), श्रीमती प्रेमलता पव्ती, गवर्निंग बॉडी की सक्रिय सदस्या श्रीमती ललिता निझावन और महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता के सानिध्य में संपन्न हुआ। सभी माननीय अतिथियों का स्वागत दुशाले और जीवंत पौधे के साथ किया गया। दीप प्रज्वलन के पश्चात प्राचार्य ने अपनी शैक्षणिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। कॉलेज पत्रिका 'समदृष्टि' और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित 'आर एल ए समाचार पत्र' और 'संभव' पत्रिका का विमोचन माननीय अतिथियों के कर कमलों द्वारा कराया गया अपने 25 वर्ष के कर्तव्य को पूर्ण निष्ठा से निभाने वाले प्रशासनिक कर्मी (राम लाल आनंद पुस्तकालय) श्री तुकनारायण जी को सम्मानित किया गया। **Best startup idea business plan–2001** के विजेता बी एस सी ऑनर्स कंप्यूटर साइंस के विद्यार्थी शुभम राज को 5000/- रूपए नकद पुरस्कृत किया।

**Best student award 2018– 2019** में साइंस डिपार्टमेंट माइक्रोबायोलॉजी की विद्यार्थी 'श्रावणी' को स्मृति चिन्ह, कलम, प्रमाण पत्र और 20,000/- रूपए का नगद पुरस्कार दिया गया इसी क्रम में वाणिज्य और कला विभाग से हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की विद्यार्थी 'श्रेया उत्तम' को भी 20,000/- रूपए के नगद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तत्पश्चात सर्वाधिक अंक द्वारा प्रथम व द्वितीय स्थान पर आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया राष्ट्रीय गान के द्वारा इसका समापन किया गया।

शैक्षणिक वर्ष 2019– 2020 का प्रारंभ 19 जुलाई से होना निर्धारित था अतः 21 जुलाई को तीन सत्रों में सभी विभाग के नवांगतुक छात्रों और उनके अभिभावकों को आमंत्रित किया गया जिसमें सभी छात्रों और अभिभावकों ने बढ़ चढ़कर प्रतिभागिता निभाई तीनों सत्र में 250 छात्र और अभिभावकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई कुल 750 सदस्यों





की सहभागिता इस ओरियंटेशन प्रोग्राम में रही। ऐसे सफल आयोजन के लिये राम लाल आनंद कॉलेज की फंक्शन कमेटी के सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

26 जनवरी 2020 को एन सी सी के विद्यार्थियों के सहयोग और चेयरमैन पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा, प्राचार्य डॉ राकेश कुमार गुप्ता, कैप्टन डॉ संजय कुमार शर्मा के सानिध्य में तिरंगे को सम्मानित करते हुए महाविद्यालय प्रांगण में लहराया। इस अवसर पर पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा ने सभा को संबोधित करते हुए इतिहास से जुड़े तथ्यों से विद्यार्थियों को परिचित कराया।

10 फरवरी 2020 को राम लाल आनंद फंक्शन कमेटी द्वारा चेयरमैन पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा जी के पद्मश्री द्वारा सम्मानित किए जाने वाले सुअवसर पर सम्मान – समारोह आयोजित किया गया। जिसमें सम्मानित अतिथिगण श्री ब्रज किशोर शर्मा, श्री कमल किशोर गोयनका, डॉ अनिजेश अवस्थी, मनोज सिन्हा, श्री सुदेश वर्मा उनकी पत्नी श्रीमती रेणु कोल वर्मा, डॉ अनिरुद्ध शर्मा, श्रीमती ललिता निझावन उपस्थित रहे।

दीप प्रज्वलन के साथ पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा जी को पुष्पगुच्छ और दुशाला भेंट करके सम्मानित किया गया; साथ ही भारतीय संस्कृति में कला की देवी मां सरस्वती की प्रतिमा भेंट की गई।

5 सितंबर 2019 को "फंक्शन कमेटी" और "रामलाल स्टाफ एसोसिएशन सोसाइटी" के सानिध्य में शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राम लाल आनंद कॉलेज के चेयरमैन पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा ने अपनी उपस्थिति के माध्यम से शिक्षक दिवस की बधाई दी। इस अवसर पर कॉलेज के विद्यार्थियों ने संगीत- नाटक का मंचन किया जिसकी चेयरमैन सर ने भूरि भूरि प्रशंसा की।

प्राचार्य डॉ राकेश कुमार गुप्ता, एडमिशन कमेटी की कनविनर डॉ प्रेरणा मल्होत्रा फंक्शन कमेटी की कनविनर डॉ. अर्चना गौड़ के सानिध्य में ये कार्यक्रम सफल हुआ।

**डॉ. अर्चना गौड़**  
संयोजिका फंक्शन कमेटी

# ADMISSION COMMITTEE

All the sub-committees of the Admission Committee of the college worked efficiently and in cohesion all through the three months from June to August 2019 to fill most of the seats as per the matrix. Due care was taken by each department not to overdo admissions too and stick to the category-wise allocations.

The committee organised a hugely successful Open Day Session on 10 June 2019 for admission aspirants and their wards. It was organized by the college in association with the Office of the Dean Welfare University of Delhi. Officials from the University and Principals of RLAC and Aryabhata College tried to respond to all the queries satisfactorily. The programme saw participation of around 300 admission seekers and their parents. It was widely covered in print and social media too.

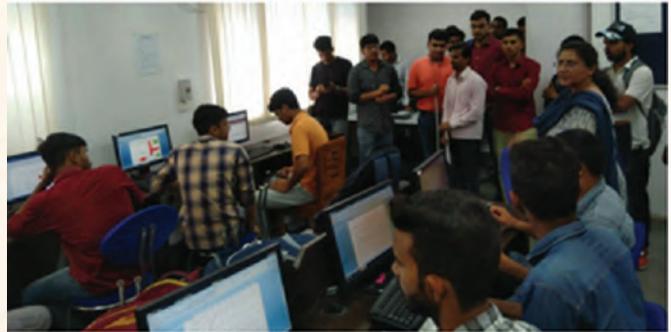
NCC and NSS volunteers of the college did commendable work throughout the admission process.

**Dr. Purna Malhotra**  
Convener



## SUGAM SUMMARY

Sugam is a society for differently abled students and was formed in 2019 under the guidance of Dr.Ritambhara Misra and Dr.Prateek. Its aim is to provide them with all sorts of opportunities and recognition in the fields of their talent and passion.



The Events :-

1. It organized an EOC sensitization awareness drive with physically disabled students with NCC cadets, NSS volunteers and society's members on 09th Aug'2019.



2. It organized an event in the college annual fest on 13th Feb'2020, which was appreciated by all.



3. A webinar was conducted in collaboration with EOC on 3rd July,2020. It discussed the impacts of Covid' 19 on differently abled people's lives.

# LIBRARY COMMITTEE

Teachers and researchers must keep themselves updated technologically to keep pace with times. A Faculty Development Workshop on Using E-Library Resources for Teaching and Research was organised on 30.01.2020 by the Library Committee in association with the IQAC of the College. Outstanding scholars of the area were invited to enlighten the teaching and library staff of the College. It was a fruitful day of learning with Professor JP Singh Joorel, Director, INFLIBNET and Member, CARE and Dr. KP Singh, Faculty, Department of Library Science, DU and Gen. Sec. Delhi Library Association. In addition to the college staff, some library staff from other colleges too participated. The partakers came to know about the e-resources made available by the INFLIBNET and the University of Delhi.

The Committee also ensured exhaustion of library funds as per the allocation under heads decided by the committee members.



**Dr. Prerna Malhotra**  
Convener





## CAREER COUNSELLING AND PLACEMENT CELL

In today's dynamically changing market pursuing an effective career strategy becomes imperative. Objective of the Career Counselling and Placement cell (CCPC) at Ram Lal Anand College is to provide resources, guidance and assistance to students to pursue their career goals. It provides awareness on higher studies, self employment and job opportunities. The cell takes adequate steps in identifying the current demands of the industry and prepares students towards this need. Adequate emphasis is given to soft-skill development complementing the regular academic performance thus trying to fill this crucial gap among students.

CCPC organized a number of career guidance and soft-skill development activities throughout the year. It invited speakers from industry and also correlated sessions with the subjects being taught in the college so that speakers could also impart students subject specific futuristic guidance. CCPC invited Shawrya Mehrotra, Founder and CEO of Metvy to give a seminar on Entrepreneurship and Startups; Mr. Aman Dhattarwal a motivational speaker on Youtube with more than 25 million views for a seminar on Importance of Internships and Placements; Mr. Sajid Hussain - Founder StepUp Analytics (8 years of experience on Machine Learning) and Mr. Prem Dalai – member (7 years of industry experience and IIT Kanpur Alumnus) for a career counseling seminar on Data Science, Machine Learning and Artificial Intelligence; Dr. Garima Gupta, Associate Professor, Faculty of Management Studies for an interactive career counseling session on shaping career in Management and Mr. Dhananjay Kumar (RLAC Alumnus) who is pursuing Masters in International Studies at Warsaw School of Economics.

CCPC also organized a one-day workshop headed by Mr. Gautam Gambhir - CA & Founder MasCom and Mr. Sahib Chawla - Co-Founder MasCom. Focus of the workshop was on Soft Skill Development and Employability Enhancement along with a five session certificate course on soft-skill development by Mr. Gautam Gambhir which covered topics like Communication Skill, Personality Development, Resume

**The Career Counseling Placement Cell & BMS Department Ram Lal Anand College**

Is Organizing

### INTERACTIVE CAREER COUNSELING SESSION

with

Take advantage from this opportunity and Join on :

**Date :** 23 Jan 2020 Thursday  
**Time :** 11.00 AM  
**venue :** Amphitheatre

**Dr. GARIMA GUPTA**  
 Associate Professor  
 Faculty of Management Studies  
 University of Delhi

Faculty coordinators  
**Dr. Seema Gupta** 8700505272  
**Dr. Aastha Verma** 9811208423  
**Mr. Siddharth Gupta** 9818340516

Interested students may contact:  
**Radhika Sharma** 8700505272  
**Pawen Kumar** 9999671839  
**Megha** 8860992383

CCPC & BMS Department Principal

PATHWAYS  
 THE CAREER COUNSELING AND PLACEMENT CELL  
 RAM LAL ANAND COLLEGE, UNIVERSITY OF DELHI  
 IN ASSOCIATION WITH  
 MASCOM  
 PRESENTS

### CERTIFICATE COURSE ON SOFT SKILL DEVELOPMENT

MASCOM IS AN ORGANIZATION STARTED WITH AN INTENTION TO HELP PEOPLE WITH THE SKILL OF COMMUNICATING EFFECTIVELY

MR. GAUTAM GAMBHIR, THE HONORABLE SPEAKER, IS THE FOUNDER OF MASCOM AND A CA BY PROFESSION. HE HAS WORKED WITH VARIOUS PRESTIGIOUS COMPANIES LIKE KPMG, PROVITI INDIA & INDUSIND BANK

**FROM 31ST OCT. TO 15TH NOV. 2019  
 IN AMPHITHEATRE  
 FROM 11-1 PM ON 31ST OCT.  
 AND 2-4 PM FOR THE REST OF THE DAYS**

SESSION 1: COMMUNICATION SKILL  
 SESSION 2: PERSONALITY DEVELOPMENT  
 SESSION 3: RESUME MAKING + PROBLEM SOLVING  
 SESSION 4: GROUP DISCUSSIONS  
 SESSION 5: TEAM BUILDING & LEADERSHIP

**HURRY! ONLY 60 SEATS AVAILABLE**

VISHAL 9149216433

**PATHWAYS**  
 THE PLACEMENT CELL

## SEMINAR

IMPORTANCE OF INTERNSHIPS AND PLACEMENTS

BY

## AMAN DHATTARWAL

21st OCTOBER 2019, 1PM

MORE INFO : VISHAL 9149216433



Making, Problem Solving, Group Discussion and Team Building & Leadership.

CCPC also organized a number of off campus and on campus placement and internship drives by various companies like CVENT, OYO, NICL, Sharekhan, Chegg India, Dash Star, Adinath Probuilt Pvt. Ltd. - Angel Group, WEGILE and Amazon. A total of 24 students got placements.

Students were also informed about some subject-wise important internships like MOEF&CC internship for Geology, CSIR internship for Microbiology and Geology students. One student Aman Gupta from Geology got selected for prestigious MOEF&CC internship. Five students from Geology got selected for CSIR Online Internship. Many students from Microbiology also got selected for CSIR Online Internship.

**Dr. Seema Gutpa**  
Convenor  
**Dr. Rajesh Sachdev**  
Co-convenor

## SKILL BASED COURSES & CO-CURRICULAR ADD-ONS

The college has taken substantial initiatives towards inculcating co-curricular skills among its students. We tried to identify the eagerness and needs of such students who seek skills beyond designated syllabi of regular courses. Catering to this the college started significant certificate courses in 2019-20 session including six certificate/diploma courses wherein 157 students enrolled and four value added courses where lot many more participated and enhanced their personalities:

- 1) **Translation/Hindi Anuvad Course** - Under expert guidance and training in collaboration with Bhartiya Anuvad Parishad, the course tried to make students learn what is required to become professionally bilingual so as to become more equipped in Hindi translation with respect to the modern content writing and knowledge context.
- 2) **Personal Tax Planning & E-Filing** – It tried to help participants become more skillful in not only managing personal finances well but also better equipped in handling web-based tax related requirements. Students gained immensely under the guidance of a renowned Chartered Accountant with vast experience in handling direct and indirect taxes.
- 3) **Graphic Design Boot Camp** – with an aim to learn the process of visual communication and problem-solving through the use of typography, photography and illustration. Through this Graphic Designers create and combine symbols, images and text to form visual representations of ideas and messages. Common uses of graphic include corporate design (logos and branding), editorial design (magazines, newspapers and books), advertising, web design, and communication design.
- 4) **Cyber Forensics** – run in collaboration with ICT Academy, the course made students take a step forward in a pioneering field. Computer Forensics is a detailed and scientific study, research and implementation of computer science subjects for the purpose of gathering digital evidence in cases of cybercrimes or for other scientific research purposes also it introduces the needs of the current cyber security sector
- 5) **Chinese Language** – started in collaboration with Dept of East Asian Studies, University of Delhi. Classes held in college every weekend and the course is open to general public as well. Faculties & course structure are made available and designed by the university department and certificate upon completion is provided by Delhi University.
- 6) **Japanese Language** - started in collaboration with Dept of East Asian Studies, University of Delhi. Classes held in college every weekend and the course is open to general public as well. Faculties & course structure are made available and designed by the university department and certificate upon completion is provided by Delhi University.
- 7) **Human Values, Ethics and Life Skills** - aim of this program is to help young students develop wholesome personalities, positive attitudes and help them bring out their inherent human values. The goal is to raise their self-confidence with development of life skills, such as leadership, stress management, and time management that empower them to overcome challenges of their everyday lives and to encourage them to seek a higher purpose of existence, and to inspire them through examples of great men and women. Experts, motivational speakers and counselors are regularly invited to interact with students.
- 8) **Yoga** – the motto of the course is Relax, Replenish & Revive. As Yoga is the perfect opportunity to become curious about who you are and also improve your physical and mental strength these yoga classes are a trendsetter in the college wherein students and faculty enthusiastically participated under the professional guidance and teaching of Yoga Acharya.
- 9) **Self Defense** – it is a special initiative designed for female students organized by Women Welfare

Advisory Committee in collaboration with Amar Ujala and called as Aparajita Self Defense workshop.

- 10) **Soft Skill Development** – a special course designed and delivered under expert guidance of MASCOM group on various themes like Communication Skill, Personality Development, Resume making, Problem Solving, Group Discussion, Team Building & Leadership.

In tandem with regular courses students are helped to gain wider exposure by taking up field-based projects and internships. A total of 478 students completed Field Projects/Internships related to curriculum.

## स्वर्ण पदक विजेता

दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में पढ़ने का मौका हर किसी को नहीं मिलता है और हमारे जैसे छोटे शहरों से आये छात्रों के लिए तो ये किसी सपने के सच होने जैसा होता है। पत्रकारिता पढ़ने के लिए रामलाल आनंद कॉलेज को चुनना जीवन में मेरे लिए गए कई महत्वपूर्ण और शानदार निर्णयों में से एक रहा है। एक ऐसा कॉलेज जिसने हमें अवसरों की उपजाऊ जमीन दी और हमें अपनी प्रतिभा के बीज बो कर हरा भरा, लहलहाता बाग तैयार करना था। डीयू की डिबेटिंग सर्कल के दूसरे कॉलेज के छात्रों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शन के लिए अपनी बारी का इंतज़ार करना होता था लेकिन हमारी सोसाइटी के प्रमुख और प्राचार्य ने हमें पूरा मौका दिया। हर तरह से सहयोग किया। हर जीत पर पीठ थपथपाई। दूसरी चुनौतियों के लिए तैयार किया। हमारा मार्गदर्शन किया।



यही वजह थी कि रामलाल आनंद कॉलेज का नाम डिबेटिंग में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से लेकर राजस्थान यूनिवर्सिटी में हमेशा शीर्ष पर रहा। काव्य पाठ में कॉलेज का प्रतिनिधित्व करते हुए डीयू, उड़ान और मौलाना आज़ाद कॉलेज में रामलाल आनंद कॉलेज का नाम नंबर वन पर गूंजता रहा। रचनात्मक लेखन की शुरुआत कॉलेज की प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से शुरू हुई थी और दिल्ली विश्वविद्यालय के लगभग हर कॉलेज में रामलाल आनंद कॉलेज का प्रतिनिधित्व करना और कॉलेज को शीर्ष पर रखना जिम्मेदारी सी हो गयी और गर्व है कि मैंने जिम्मेदारी पूरी निष्ठा से निभाई।

कॉलेज ने जितना एक्सपोज़र मुझे दिया इतना किसी दूसरे कॉलेज में मिलना शायद न संभव हो पाता। क्योंकि यहाँ पर नीलम ऋषिकल्प मैडम अर्चना मैडम, डबास सर, देवेन्द्र सर, मानवेश सर, राकेश सर, अटल तिवारी सर, सीमा मैडम जैसे शानदार गुरुजनों की टीम का हरपल सहयोग रहा है। तीन सालों में मैंने जो कुछ सीखा है इसमें मेरी मेहनत के साथ ही गुरुजनों की मेहनत का फल है। पढ़ाई के साथ साथ डिबेट, रचनात्मक लेखन, पोएट्री सोसाइटी, गाँधी स्टडी सर्कल की टीम के साथ काम करने का अनुभव बेमिसाल रहा है।

कॉलेज को देश के अनेक प्रतिष्ठित मंचों पर गौरवान्वित करने के लिए कॉलेज से "स्टूडेंट ऑफ द ईयर" के रूप में चुने जाना और कॉलेज का "बेस्ट स्टूडेंट" बनना हर किसी छात्र का सपना होता है।

कॉलेज ने मुझे बेस्ट स्टूडेंट के साथ साथ यूनिवर्सिटी का "गोल्ड मेडलिस्ट" बनाया है। 2019 में यूनिवर्सिटी ने गोल्ड मेडल से सम्मानित किया।

हमारे प्राचार्य और सभी गुरुजनों का हृदय से शुक्रिया करना चाहूँगी और यही कामना करती हूँ प्रतिभाशाली छात्रों को आप जैसे गुरुजनों का मार्गदर्शन मिले।

श्रेया उत्तम

## BEST STUDENT AWARDEE

### Introduction of Mr. Lalit Mohan, Best Student Awardee (Science stream)

Mr. Lalit Mohan is a student with multi-faceted personality. On the one hand he has excelled in academics and secured first position in the Department of Microbiology for the academic year 2018-19, while on the other he has always been an enthusiastic participant in extracurricular and co-curricular activities of the department as well as college.



### Some of his major achievements during the three years in college include:

1. Worked as Research intern in DBT Funded project: Betel Nut induced Genotoxic Changes- Evaluation and Awareness study in young population of North Eastern States of India under Dr. Prerna Diwan (PI). And received a stipend of Rs 2500 per month for 18 months.
2. Worked as a Research intern in ICSSR- IMPRESS Funded project: Communicating the science behind the phenomenon of antibiotic resistance to promote social awareness under Dr Prerna Diwan (PI).
3. He has written a book chapter “Foldscope: A New Age Exploratory Educational Tool” under the guidance of Dr. Prerna Diwan In A. D. Sharma (Ed.). Foldscope and its Applications (pp. 188-193). New Delhi: National Press Associates. ISBN 978-93- 85835-68-1. to his credit
4. Another of his chapter “An Overview of Mycorrhizae, Nature’s own biofertilizer” written under the guidance of Dr. Vandana Gupta is under publication process In A. Gupta, S. Jain and N. Verma edited book on Soil Microbes and Industrial Application.
5. He was an active NSS volunteer in the year 2018-19 and has served as Vice -president of NSS UNIT RLA for the year 2019-20.
6. He has presented posters at various national seminars and contributed as a volunteer in all the departmental activities held in last 3years.
7. He was selected for and successfully completed Internships at NGO Umeed: A Ray of Hope, at Department of Microbiology, University of Delhi, South Campus under the guidance of Prof. Rani Gupta and CSIR- Summer Research Training Program (CSIR SRTP) online mode.

Regards  
Ojastvita Arora

### Introduction of Aastha Verma, Best Student Awardee (BMS)

“ I am deeply grateful to all the faculty members of Ram Lal Anand College for considering me a worthy recipient of this prestigious award. Throughout my college life I have placed equal emphasis on academics and co-curriculars to develop myself. It is in RLAC that I got a chance to work for Gender Equality while serving as the President of the Women Welfare Advisory Committee. These three years have been a joyous ride of winning debate competitions, practising creative writing, lots of anchoring and memories for a lifetime. Once again, thank you RLAC for grooming me to become a smart leader for tomorrow. “



Regards  
Aastha Verma

# RLA IN THE NEWS

### शिक्षक छात्र लाल कॉलेज में ओपन डेज आन

शिक्षक छात्र लाल कॉलेज में ओपन डेज आन का आयोजन हुआ। इस अवसर पर छात्रों ने शिक्षकों को आभार ज्ञापित किया।

### डीयू में आवेदत डेढ़ लाख के प

डीयू में आवेदत डेढ़ लाख के प के आंकड़े सामने आए हैं।

### बढ़ोत्तरी के खिलाफ का घरना-प्रदर्शन

बढ़ोत्तरी के खिलाफ का घरना-प्रदर्शन का आयोजन हुआ।

## campuscamping

### ECA trials kick off, 45% tum up on Day 1

MISSION DU O: 45% increase in students who did not opt out about Competition in HOC with 100% assistance

AMITY, CONCEPTS, HANU, etc.

### EWS aspirants in MPhil, PhD courses can produce papers during admission

### Ambedkar varsity to resume registrations

## दिल्ली और दिल्ली

### 'गांधी बियॉन्ड बाउंड्रीज' पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

बीबी नूपर, नई दिल्ली

दिल्ली और दिल्ली के बीच अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हुआ।

### ing doubts at DU Open Ses

ing doubts at DU Open Ses के आसपास छात्रों में शक है।

### मिडिया फेस्ट: कला, साहित्य और संस्कृति के बिखरे रंग

#### रामलाल आनंद कॉलेज के सहयोग से आयोजन

ये रहे अग्रवाल

मिडिया फेस्ट का आयोजन हुआ।

## मिडिया फेस्ट: कला, साहित्य और संस्कृति के बिखरे रंग

### रामलाल आनंद कॉलेज के सहयोग से आयोजन

ये रहे अग्रवाल

## दिल्ली और दिल्ली

### देश के 80% लोगों की रोजाना कमाई सिर्फ 25 से 30 है : डॉ अश्वनी महाजन

बीबी नूपर, नई दिल्ली

देश के 80% लोगों की रोजाना कमाई सिर्फ 25 से 30 है : डॉ अश्वनी महाजन

### रामलाल आनंद कॉलेज में ओपन डेज छात्र-छात्राओं और अभिभावकों ने अपनी शंकाओं को किया दूर

रामलाल आनंद कॉलेज में ओपन डेज का आयोजन हुआ।

### राम लाल आनंद कॉलेज में ओपन डेज कार्यक्रम आरंभ

राम लाल आनंद कॉलेज में ओपन डेज कार्यक्रम आरंभ हुआ।

### मिडिया फेस्ट 2019 में पुरुषों का विचार

मिडिया फेस्ट 2019 में पुरुषों का विचार

### देश के 80% लोगों की रोजाना कमाई सिर्फ 25 से 30 है : डॉ अश्वनी महाजन

देश के 80% लोगों की रोजाना कमाई सिर्फ 25 से 30 है : डॉ अश्वनी महाजन

### राम लाल आनंद कॉलेज में ओपन डेज

राम लाल आनंद कॉलेज में ओपन डेज का आयोजन हुआ।

## मेरिट और टेस्ट दोनों कोर्स के लिए एक ही फॉर्म से करें आवेदन

### दैनिक जागरण की मीडिया पार्टनरशिप में आयोजित किया गया ओपन डे कार्यक्रम

मेरिट और टेस्ट दोनों कोर्स के लिए एक ही फॉर्म से करें आवेदन

### सीएए नागरिकता छीनने नहीं, देने का कानून: पुंज

सीएए नागरिकता छीनने नहीं, देने का कानून: पुंज

### दाखिल के नियम बदलने पर मांगा जवाब

दाखिल के नियम बदलने पर मांगा जवाब

## सीएए नागरिकता छीनने नहीं, देने का कानून: पुंज

सीएए नागरिकता छीनने नहीं, देने का कानून: पुंज

### जामिया में विरोध में प्रोफेसर भी शामिल

जामिया में विरोध में प्रोफेसर भी शामिल

### दाखिल के नियम बदलने पर मांगा जवाब

दाखिल के नियम बदलने पर मांगा जवाब

## सीएए नागरिकता छीनने नहीं, देने का कानून: पुंज

सीएए नागरिकता छीनने नहीं, देने का कानून: पुंज

### जामिया में विरोध में प्रोफेसर भी शामिल

जामिया में विरोध में प्रोफेसर भी शामिल

69.65 'Million' f

# DU beat

An Independent Student Newspaper

Want to join a Top French Business School?

पर - विगत महीने - आरएलए कॉलेज में एक अलग जनसभा में जो और एंटी सीएए प्रदर्शन में है।



## आरएलए कॉलेज गेट के बाहर जनसभा में प्रो और एंटी सीएए प्रोटेस्टर्स भिड़ गए

राम लाल आनंद कॉलेज (RLA) के छात्रों को 14 पर एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया था। जनवरी 2020 के CAA-एनआरसी-एनपीआर के खिलाफ निरपेक्ष अभिव्यक्ति और पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के राष्ट्रीय द्वारा संचालित हुआ।

14 जनवरी 2020 को, केंद्रीय के संघर्षिता छात्रों ने आरएलए गेट के बाहर एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की थी। इस कार्यक्रम में सुचेता दे और विवेक पीया ने वक्ता के रूप में देखा। कॉलेज में हिंदी और फ्रेंच के दूसरे वर्ष के छात्र और ऑनलाइन स्टूडेंट्स एसोसिएशन (एआईएसए) के एक सदस्य साजिद मुसाफिर कहते हैं कि उन्होंने दिल्ली पुलिस से अनुमति लेने सहित सभी आवश्यकताओं का पालन करना सुनिश्चित किया था।

यह आगे बताया कि वेने एबीवीपी ने बैठक को भागित करने की कोशिश की, उन्होंने कहा, "सार्वजनिक बैठक से लगभग एक घंटे का आधा घंटे पहले, हमारे कॉलेज के अध्यक्ष जो एबीवीपी से जुड़े हैं, सुलगन कुमार, बलराम में जगना और बताना शुरू किया किन लोगों की सार्वजनिक बैठक में कोई अनुमति नहीं थी और छात्रों को बता रहे थे कि आप सबको को पितावा चहते है। (वे कहते हैं कि आप फिर जाएं) और सार्वजनिक बैठक को बरखा करने की कोशिश की।"

मासिक यह भी कहते हैं कि इसके शुरू होने के बाद सार्वजनिक बैठक को प्रतिरोध की कोशिशें जारी थीं। उन्होंने कहा कि बैठक के दौरान "साथ ही बलराम का सारा एबीवीपी आगगा" (साथ ही बलराम के सभी एबीवीपी सदस्य आए) और उन्होंने "DU ko jnu nahibanne leenge" (हम जेन्यू को जेएनयू नहीं बनने देंगे) जैसे नारे लगाने शुरू कर दिए। "हम सीएए का समर्थन करते हैं", और "दिल्ली पुलिस निबाबाह"। यह पढ़ भी करते हैं कि एबीवीपी के कुछ सदस्यों ने बताना कि पूर्वजापुर्ण समाज पुश्तकार बैठक को भागित करना शुरू कर दिया।

आयोजकों को अंततः जितने भी भाग्यी सुरक्षा पर विचार के करण बाधना जाने के लिए बहना पड़ा क्योंकि भय का माहौल जो एबीवीपी ने बनाया था। हालांकि, एबीवीपी के सदस्यों के साथजुट, सुलगन की प्रस्तावना पढ़ने और माने के साथजुट सार्वजनिक बैठक जारी रही। मासिक ने यह भी आरोप लगाया कि उन्हें बाघ में एबीवीपी के दुर्गों द्वारा धमकी दी गई थी जिन्होंने उन्हें "अब बस बस तोड़ डींग" कहा था। (परिणाम यह था कि उन्होंने तोड़ डींग अचको हटा देंगे)।

एबीवीपी के राज्य रायच विद्यार्थी बाघ्य दिग्गधियों के लिए यहूत गए थे, लेकिन उन्होंने इस बात से इनकार कर दिया कि उन्हें इस स्थिति की पूरी जानकारी नहीं है और बात में डीएन सीट को अपडेट किया जाएगा।

आरएलए छात्र संघ के अध्यक्ष सुलगन कुमार ने मासिक के दावे पर कहा, "सुख से मासिक ने कहा कि मैं प्रचार किया और कहा कि वह छात्रों द्वारा एक सार्वजनिक बैठक है। लेकिन वहने आसना के राष्ट्रीय अध्यक्ष को आर्षित किया। इसलिए यह सिर्फ सार्वजनिक बैठक को घुटा करने और छात्रों को सुराह करने के लिए था। मैं बकाओं में यह स्पष्ट करने के लिए गया कि छात्र संघ और कॉलेज प्रशासन इस तरह की बैठक में भागित नहीं है। स्टूडेंट्स प्रिन्सिपल ने मासिक को बैठक के लिए साउथ कैम्पस के SHG को लेटर लिखा। लेकिन सार्वजनिक सभा को एक सार्वजनिक बैठक बनाने से बैठक बाधित हो गई। मासिक ने कहा कि आरएलए के छात्र बैठक में थे और एबीवीपी के बाहरी लोग आए और एंटी सीएए के छात्र लेकिन वे पास सीटों को बाधित हैं कि आरएलए के छात्र सीएए के पास में थे और आरएलए अध्यक्ष की सभासिध सार्वजनिक बैठक बाधित लोगों द्वारा देखा गई थी।" वे कहते हैं कि एक घंटे पूर्व प्रतिनिधि के रूप में वह शांतिपूर्ण विरोध में विद्युत करते हैं लेकिन उनकी पहली जिम्मेदारी छात्रों की सुरक्षा है। यह स्पष्टचो छात्र कैम्पस में शांति बनाए रखने के लिए भेजे गए सखुत के रूप में एक पत्र भी दिखाता है।

05 दिल्ली

### डीयू में अगले साह से सेंटर फॉर डिसेम्बलिटि

नई दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय (DU) के छात्रों को अगले साल से सेंटर फॉर डिसेम्बलिटि (CDF) में शामिल किया जाएगा। यह केंद्र छात्रों को डिसेम्बलिटि के क्षेत्र में शिक्षा और अनुसंधान के लिए एक संकेतक के रूप में कार्य करेगा।

नौ प्रमुख सदस्यों की संरचना में डिसेम्बलिटि केंद्र का उद्घाटन किया जाएगा। केंद्र के अध्यक्ष के रूप में डॉ. राजेश कुमार का नाम चुना गया है।

केंद्र के सदस्यों में डॉ. राजेश कुमार, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. अशोक कुमार शामिल हैं।

## रामलाल आनंद कॉलेज में छात्रों ने सीखे आत्मरक्षा के गुर दिल्ली पुलिस के सहयोग से कार्यशाला, विषम हालात में हिम्मत नहीं हारे लड़कियां : सहायक पुलिस आयुक्त

अमर उजाला मुंबई

नई दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय (DU) के छात्रों को आत्मरक्षा के गुर सिखाने के लिए दिल्ली पुलिस के सहयोग से एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में सहायक पुलिस आयुक्त ने भाग लेते हुए कहा कि लड़कियां हिम्मत नहीं हारे।

कार्यशाला में सहायक पुलिस आयुक्त ने छात्रों को आत्मरक्षा के गुर सिखाए। उन्होंने कहा कि लड़कियां हिम्मत नहीं हारे।

कार्यशाला में सहायक पुलिस आयुक्त ने छात्रों को आत्मरक्षा के गुर सिखाए। उन्होंने कहा कि लड़कियां हिम्मत नहीं हारे।

## राम लाल कॉलेज में ओपन डेज आज

नई दिल्ली (प्र.सं.)। साउथ कैम्पस के राम लाल आनंद कॉलेज में सोमवार को ओपन डेज का आयोजन किया जाएगा। कॉलेज के शिक्षकों ने भी छात्रों के लिए दाखिला संबंधी काउंसलिंग की सुविधा शुरू की है। प्रिंसिपल डॉ. आरके गुप्ता का कहना है कि छात्रों के लिए कॉलेज में पांच कंप्यूटर इंटरनेट सेवा के साथ लगाए गए हैं। यहां आकर छात्र आवेदन कर सकते हैं। साथ ही छात्रों को जानकारी देने के लिए यहां शिक्षक भी निवृत्त किए गए हैं। उन्होंने बताया कि ओपन डेज सोमवार को सुबह 10 से दोपहर 1 बजे तक आयोजित होगा। वहीं, लक्ष्मीबाई कॉलेज में 12 जून को ओपन डेज का आयोजन किया जाएगा।



Good Evening India

International Labour Day

Mission Admission in Delhi University - A Phone-in Segment Today at 04:00 pm

Guests - Dr. Suman Sharma, Principal LSR College

Dr. Rakesh Gupta, Principal RLA College

Dr. Indrajit Dagar, Principal College of Vocational Studies

## गांधी व स्वच्छता दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

नई दिल्ली: गांधी व स्वच्छता दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में छात्रों को स्वच्छता के महत्व के बारे में शिक्षा दी गई।

कार्यक्रम में छात्रों को स्वच्छता के महत्व के बारे में शिक्षा दी गई। कार्यक्रम में छात्रों को स्वच्छता के महत्व के बारे में शिक्षा दी गई।

## मुश्किल में सामान्य पेपर भी बन सकता है बचाव का हथियार

नई दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय (DU) के छात्रों को आत्मरक्षा के गुर सिखाने के लिए दिल्ली पुलिस के सहयोग से एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में सहायक पुलिस आयुक्त ने भाग लेते हुए कहा कि लड़कियां हिम्मत नहीं हारे।

कार्यशाला में सहायक पुलिस आयुक्त ने छात्रों को आत्मरक्षा के गुर सिखाए। उन्होंने कहा कि लड़कियां हिम्मत नहीं हारे।

कार्यशाला में सहायक पुलिस आयुक्त ने छात्रों को आत्मरक्षा के गुर सिखाए। उन्होंने कहा कि लड़कियां हिम्मत नहीं हारे।

# दिल्ली और दिल्ली

भारत में कई आंदोलनों को शुरूआत की गयी है। इन आंदोलनों में दिल्ली आंदोलन अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस आंदोलन के माध्यम से गांधी ने लोगों को प्रेरणा दी।

दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद कॉलेज में सोमवार को ओपन डेज का आयोजन किया जाएगा। कॉलेज के शिक्षकों ने भी छात्रों के लिए दाखिला संबंधी काउंसलिंग की सुविधा शुरू की है। प्रिंसिपल डॉ. आरके गुप्ता का कहना है कि छात्रों के लिए कॉलेज में पांच कंप्यूटर इंटरनेट सेवा के साथ लगाए गए हैं। यहां आकर छात्र आवेदन कर सकते हैं। साथ ही छात्रों को जानकारी देने के लिए यहां शिक्षक भी निवृत्त किए गए हैं। उन्होंने बताया कि ओपन डेज सोमवार को सुबह 10 से दोपहर 1 बजे तक आयोजित होगा। वहीं, लक्ष्मीबाई कॉलेज में 12 जून को ओपन डेज का आयोजन किया जाएगा।

## छात्रों ने शिविर में सीखी आवाज की ताकत

अमर उजाला मुंबई

### आसानी से सीख लिए कई गुर

नई दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय (DU) के छात्रों को आत्मरक्षा के गुर सिखाने के लिए दिल्ली पुलिस के सहयोग से एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में सहायक पुलिस आयुक्त ने भाग लेते हुए कहा कि लड़कियां हिम्मत नहीं हारे।

कार्यशाला में सहायक पुलिस आयुक्त ने छात्रों को आत्मरक्षा के गुर सिखाए। उन्होंने कहा कि लड़कियां हिम्मत नहीं हारे।

कार्यशाला में सहायक पुलिस आयुक्त ने छात्रों को आत्मरक्षा के गुर सिखाए। उन्होंने कहा कि लड़कियां हिम्मत नहीं हारे।

## E-VARTA

Childhood is definitely the best part of an individual's life. But, often it is not until your adult life that one gets to experience the most valuable events. Personally, though, I consider my time in college as my most treasured experience. Governed by inquisitiveness throughout my teenage years that stimulated my ever-increasing love and passion for Biology, I successfully secured admission into Ram Lal Anand College, University of Delhi, a premier academic institution renowned for its Microbiology Department. Looking back into those days puts a big smile on my face with an essence of nostalgia on my mind. For any fresher, the first vibe in the college is usually challenging. But to my comfort, the environment was very welcoming and student-friendly. I remember how easy it was for us to interact and communicate with our teachers. At any instant, we could approach and consult with them directly. I enjoyed attending the lectures, but the best part, something I loved the most was the practical classes. To my interest, I was extremely delighted to see the enthusiasm and efforts our teachers would invest during the practicals, ensuring focus on every student, individually. It is said that 'What consumes your mind, controls your life'. I have always been blessed or cursed, as some might say, with an insatiable curiosity. My ambitions soared even higher when I was given the opportunity to be a part of the Delhi University Innovation Project with my peer-mates. That truly was the turning point for all of us. It not just enhanced our practical and presentation capabilities, but also helped us gain exposure to the scientific world and understand the importance of team-work and unity. Apart from academics, I had the pleasure to be a part of the extra-curricular and cultural activities at RLAC. With the support of my teachers, I could actively lead and volunteer for the Ecological Club, National Service Scheme (NSS) and Microbiologika Society. Truly indeed, 3 years at RLAC provided the niche and necessary ingredients for me to raise my professional and communication skills, personality and develop scientific intellect. Also, it blessed me with the spirit of leadership, self-confidence, adaptability, and management. My pleasant stay at RLAC completely groomed me into a better version of myself and eventually the academic knowledge I gained here helped me secure All India Rank-1 in the DU M.Sc Microbiology entrance examination. Currently, I am enrolled as a Ph.D. Research Scholar at the Department of Biochemistry, University of Delhi SouthRAM LALANAND COLLEGE

I am currently pursuing my doctoral degree in Virology from Dept of Microbiology, University of Delhi South Campus, under the supervision of Dr. Rajeev Kaul. The lab works on elucidating the role of PPRV proteins in immune suppression with an aim to develop a new generation.



**Jatin Chadha**  
Ph. D. Research Scholar  
Department of Biochemistry



**Maswal Dhar**  
Department of Microbiology,  
Batch - 2010-2013

### My Time in RLA

The three years of my graduation are the best three years of my life. Though i too moved forward in life, as we all do, those three years will always remain to me the perfect combination of learning with fun. Can anyone imagine a batch of 18 students who never ever bunked a class? Yes, we were that strange lot, May be because we could have as much fun working long hours in the lab since we enjoyed each other's company so much. Or may be because we had such fabulous teachers that missing the notes made in their classes would cost us what could never be replenished through books. Whatever be the case, we had the time of our lives. Be it organizing the annual fest - Microbiologika as the President, or be it the freshers or farewell parties organized by booking entire discotheques only for us, or be it learning to give presentations. when i look back on those three years, what i feel is only enrichment.

One suggestion for improvement : Our department was too cut-off from the college activities, and even very distant from what was happening in South Campus

It would be difficult to sum up three years of RLA in just few lines. I must say that the learning and exposure which RLA gives is just admirable. The faculty is amazing and they stand by you from the very first day of your college. They organised national seminars on the latest topics so that we can be aware whats going on currently in this field. They have also provide us carrier counselling sessions, internship fair and much more.



**Veeru Tekchandani**  
B.Sc(H)C.S.  
Batch - 2015-2018

Apart from curriculum, there are a lots of societies to enhance your personality, annual cultural fest and various trips to have fun, and apart from that we have technical fests for every department.

I am always thankful to all my teachers of RLA as they have always supported all of us. I wish this college goes on doing great stuff and help students to achieve their dreams.

RLA is the most beautiful place of my life, I am so glad that I am an alumni of RLA. I have got so much love, lessons, memories, experiences from this college. I would like to thank all my teachers, those who realised me how to live, how to pursue my dreams, how to be confident in this competitive world. I used to spend my good times with my friends and we used to have a good discussions with our teachers even outside the classes, we always felt free to debate, discuss all aspects of political, social, economic changes of society.

We used to live like a family, the best part of my college life would always be the fun I used to do in college. I am so happy that I have a great college life!

Thank you RLA for all the love!

हम अपनी रूह तेरे आंगन में छोड़ आए आर एल.ए  
तेरे कूबे में आना तो खुद से मिलने का एक बहाना है



**Mohammad Khatibur Rahman**  
Political Science  
Batch - 2017-2019

### मेरा कॉलेज वही था...

आजमगढ़ उत्तर प्रदेश राज्य का एक छोटा सा जिला जिसके एक छोटे से गांव से उठकर दिल्ली प्रदेश के एक बड़े विश्वविद्यालय के किसी बड़े कॉलेज में दाखिला होना एक सपने के सच होने जैसा था। गांव में जो भी सुना और कल्पना के अनंत धागां से जो कुछ भी बुन सका उससे कहीं ज्यादा भव्य और आकर्षित करने वाला वातावरण राम लाल आनंद महाविद्यालय का था। अक्सर दोस्तों से सुनता था कि कॉलेज की जिंदगी सिर्फ मस्ती और मजे के लिए होती है। लेकिन जब इस कॉलेज में अपने प्रिय वरिष्ठ सहपाठियों और अतिस्नेहीशील गुरुजनों से मिला तो यह अवधारणा जल्द ही टूट गई। टूटती अवधारणा में मस्ती तो शेष रहे पर पढ़ाई और मेहनत ने बाकी की जमीन कब्जा ली। गुरुजनों का सानिध्य लाभ पाकर मैंने अपने कॉलेज की जिंदगी में काफी कुछ सीखा, जाना और समझा। गुरुजनों के सानिध्य के प्रभाव और स्नेहाशील ने मेरे सोए हुए मस्तिष्क को ऐसे झिंझोड़ा कि एक साधारण से परिवेश से आया मैं औसत दर्जे का विद्यार्थी जो कॉलेज के शुरुआती दिनों में आखिरी बेंच पर छिपता था और अध्यापकों से नज़रें चुराता था। अचानक से ऐसा जगमगा कि पुस्तकों के साथ-साथ दुनिया भर के ज्ञान अर्जन को लालायित हो उठा और अपने कक्षा का टॉपर बन गया और एक नहीं पूरे तीन वर्षों तक उपाधि प्राप्त की।

मेरा मानना है कि कहीं ना कहीं गुरुजनों के सानिध्य, मार्गदर्शन कॉलेज के वातावरण और वरिष्ठ मित्रों के सहयोग का प्रतिफल ही है कि आज परास्नातक के लिए एक बड़े कॉलेज में दाखिला प्राप्त कर सका हूँ। यहां तक पहुंचने के बाद भी ना जाने क्यों ऐसा लगता है कि मेरे कॉलेज तो बस वही था राम लाल आनंद कॉलेज। जहां मैंने जीवन के सारे गुण सीखे, भविष्य के लिए नए मार्ग अख्तियार किए और एक नई सोच नया दृष्टिकोण विकसित कर सका। मेरे गुरुजन, मेरे मित्र, मेरे सहपाठी, मेरे सब कुछ जिन्हें मैं अपना कह सकता हूँ सब वही हैं। मैं कहीं भी चला जाऊँ, कुछ भी कर लूँ मेरा कॉलेज तो बस वही है।



**किशन सरोज**  
बी.ए. हिंदी विशेष  
बैच- 2016-2019

### Brief article about my time at RLAC

College days are the happiest phase of one's life. Once we graduate from school, many of us begin wondering where to begin our careers with, what exams to take, and which college can perfectly fit into our dreams. College time teaches many lessons and it is full of learning experiences. College is the place where a person enters with a dream of becoming successful in life. Likewise I joined this college with full of dreams and hope. It defines what I am today. I find RLAC perfect in every sense, be it academics, faculty, sports, extracurricular activities, etc. It is the place that actually became a second home. I met various unique people, made some amazing friends for life, also made some mistakes and learnt new lessons that have helped in the betterment of my life. There is a famous saying "money can't buy happiness". College life is a proof that you do not need money to be happy, but a true friendship and love. It is the place I didn't go to, but lived each and every moment of it. One should not be skeptical about the college days as everyone knows that all the problems and hurdles one faced were all necessarily good. Every moment spent there had its own joy, be it hanging out, or all the furious studying (or lack of it) and happiness of achievement. RLA days were a sum of good scores, good friends, amazing trips (Gyanodaya and Department both), many lessons for life to be self-dependent, practical knowledge, and a lot of experiences in shaping one's outlook for life. It still brings a smile on my face when I recollect memories of good old days. My bachelor days made me put in extra efforts in studies and eventually it got into me to work hard. And it was not possible without the invaluable support and motivation of my teachers who have always encouraged and helped me in every possible way. They are the real heroes of our college days who taught us to be a good human being at first and everything else after that. They have played a very important role in bringing RLAC to the greatest level. My heartfelt gratitude to them. It gives me immense pleasure to be an alumnus of RLAC.



**Yash Chaudhary**  
PhD Research Scholar  
Department of Microbiology



## जीवन के रंग रामलाल आनंद महाविद्यालय के संग

हमारे जीवन में बहुत ऐसे पल आते हैं जो हमारे जीवन में रंग भर जाते हैं। ऐसा ही एक पल लगभग सभी विद्यार्थी के जीवन में आता है "कॉलेज" जो सभी के जीवन में हर प्रकार के रंग भरता है। मेरे जीवन में भी यह पल आया जब मैंने 21 जुलाई 2015 को महाविद्यालय के प्रांगण में कदम रखा। यह तीन वर्ष का समय मेरे लिए सबसे रोमांचक और मेरे जीवन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण रहे। यही वह समय था जब मुझे मेरे लक्ष्य की ओर जाने वाला रास्ता दिखाई देने लगा। राम लाल आनंद महाविद्यालय मेरे लिए एक प्रकाशस्तंभ के समान था। जिस प्रकार प्रकाशस्तंभ समुंद्र में दिशाहीन नाविकों को दिशा दिखाते हैं उसी प्रकार यहां के शिक्षक छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं।

मेरा सफर रामलाल में शुरू हुआ एक सामान्य विद्यार्थी से और खत्म हुआ "बेटे स्टूडेंट्स अकादमी" से। यह सफर बड़ा ही शानदार रहा जहां मैंने स्वयं को पहचाना और इन सब में मेरी मदद मेरे गुरुजनों ने की फिर चाहे वह मेरे विभाग के हो या अन्य विभाग के सभी ने हर कदम पर मुझे सही राह दिखाई। लेकिन जिनका सबसे ज्यादा योगदान रहा वह थे सुरेंद्र सर, मानवेश सर, दिनकर सर। इनके सानिध्य में रहकर मेरे दृष्टिकोण में नवीनता और तर्कशीलता का समाहार हुआ। इनके अलावा प्रेरणा मैम, कुसुम मैम, नीलम मैम अर्चना मैम इन सभी ने मुझे ममतामयी वातावरण में रखा साथ ही एक शिक्षक के दायित्व का निर्वहन भी किया।

इन तीन वर्षों में सिर्फ कक्षा के अंदर ही शिक्षा ग्रहण नहीं की बल्कि विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर भी शिक्षा ग्रहण की फिर चाहे वह हिंदी साहित्य परिषद, आरोह वाद-विवाद समिति और एन. एस.एस का अध्यक्ष बनना, इको क्लब के लिए काम करना सभी ने मेरे जीवन में हर तरंग के रंग भरे। इनके कारण मेरे अंदर आत्मविश्वास, प्रबंधन, सही-गलत की पहचान करना सीखा। इन सभी ने मेरे चरित्र निर्माण में अहम योगदान दिया। इसी जगह मुझे जीवन भर साथ रहने वाले मित्र मिले और जीवन बदलने वाला वातावरण भी मिला।

मैं अपनी इस लेखनी के माध्यम से अपने अनुजों से यही कहना चाहूंगा कि सदैव अपने शिक्षकों का सम्मान करें उनकी दिखाई राह पर चलें यही आपको सफलता की ओर ले कर जाएगी, एक अच्छा इंसान बनाएगी। महाविद्यालय में होने वाली हर गतिविधियों में भाग लें ताकि आपका सर्वांगीण विकास हो और महाविद्यालय का नई ऊंचाई पर ले जाएँ क्योंकि महाविद्यालय इमारत से नहीं आप लोगों से बनता है।



**रविंद्र कुमार**  
बी.ए. हिंदी विशेष  
बैच- 2015-2018

I still remember the scorching heat, when I was standing in line for the admission process back in 2013. I had seen the cutoff that very morning and here I was, getting myself admitted in B.Sc. (Hons) Microbiology programme of RLAC. Having studied biology in senior secondary, subjects like Biotechnology and Microbiology had always fascinated me. I was really excited to start my first day in the college and it was rightly so. Everyone, from classmates, seniors, faculties and staff, was extremely helpful since day one. I made friends for life in that place and I am being literal here, as two of my best friends from college did their M.Sc. in Microbiology with me and now are currently pursuing Ph.D. with me. I have countless good memories of the place ranging from working in innovation projects with my colleagues to having snacks at the small canteen shack. The college has given me a plethora of opportunities to express myself in ways other than academics. I was one of the English editors on Samdrihti magazine for a year, actively participated in multiple sports activities and was a regular volunteer for cultural programs. These experiences helped me evolve in life in terms of my personality and confidence. The teachers had a huge impact in this process as they were never shy of pushing us to try various extra-curricular activities. I still remember that the teachers of our department convinced us to submit a project in Delhi University's "Gyanodaya" scheme which included a full sponsored 9-day trip to 5 different cities of India, visiting various industries, educational institutes and historical sites. As a result of a combined effort by us and the teachers, our department sent a group of 15 student to this wonderful excursion. We were enthusiastically involved in "The Innovation project" scheme introduced for encouraging research among graduates. I was a part of a project that involved testing the potability of groundwater in various establishments of Delhi-NCR region. Working in a professional lab environment and eventually getting a research paper out of it, motivated me towards pursuing research as a career. I completed my M.Sc. Microbiology in 2018 from Department of Microbiology, University of Delhi South Campus and I am currently enrolled under Professor Swati Saha as Ph.D. scholar in the same department. My area of research is "Transcriptional regulation in Leishmania donovani" and I hope to successfully complete my Ph.D. and contribute well to the scientific community.



**Vishal Dashora**  
Department of  
Microbiology

किसी के लिए भी अपने कैरियर की पहली सीढ़ी उसका कॉलेज होता है। रामलाल आनंद कॉलेज ने मेरे लिए उस सीढ़ी का ही काम किया है। फिर चाहे वो टीचर्स का मार्गदर्शन हो या अपनी प्रतिभा को दिखाने के लिए कोई स्टेज देना हो। सभी ने हमेशा साथ दिया। अपने कॉलेज को डिबेटिंग में रिप्रेजेंट करने के दौरान मुझे समझ आया कि किसी की भी जिंदगी में ये कॉलेज के जो तीन साल होते हैं वो कितने महत्वपूर्ण होते हैं। प्रतिभाओं को पंख हमेशा मिलने चाहिए। मेरी प्रतिभा को पंख इसी कॉलेज ने दिए हैं और ये हमेशा 'मेरा' कॉलेज रहेगा।



**अपूर्वा सिंह**  
हिंदी पत्रकारिता  
एवं जनसंचार  
बैच-2016-2019

It is a magical experience going to a college after passing excited board exams and admission process. College is the state of our life where we shape our personality as well as choose a good career path.

Delhi University's colleges are the best colleges in India and Ram Lal's college is one of them. It is not only about studies, in fact; organizing entertaining events and festivals such as "Automata"

technical event of Department of Computer Science, "Rahasya" College Fest, Annual Day, Yoga events and various clubs and societies like "Hasratein-Dramatics Society", "Spic Macay" and many more. Ram Lal Anand College has its own placement cell where the good recruiting companies visit like IBM etc. It provides a great platform for students to show their skills and abilities. As I am always curious to know new facts, our talented professors always guide, motivate and help me and other students to choose their best career. The best part of me was encouraged by the principal of college Dr. Rakesh Kumar Gupta by rewarding me at the Annual Day. I have a great journey in those three years, that teach me a lot as well as give a beautiful stack of memories.

**ANCHAL MITTAL**  
B.Sc computer science (Hons),  
Batch - 2014-2017

### MY TWO GEMS IN RLA

The two gems which I bagged from RLA are my teachers and friends which are an important part of my life. Coming from science stream I was very confused about my career as I wanted to go for civil service preparation and the best subject which I found can ease my path was political science. When cut off date were announced, after standing in long queues in several colleges I finally arrived at RLA.

The very green ambience of college took my mind, red brick building, beautiful garden in front and most important calmness in the atmosphere.

1st day of college was surprising as those were election campaigning times, I met raghu of roadies at canteen who came to campaign for CYSS and in the front lawn prof dinesh singh (former V.C) was addressing students. Next day class started with basic intro and I met one my prof who was going to be my best mentor for whole three years and a guardian for coming days. She introduced us with some of best debates which are still my currency in my M.A classes here at north campus. Not only we were made familiar with some difficult literature in politics but were provided enough space to present our views and explanation in front of class. The credit goes to them that I was able to present my papers at national conferences here in political science department DU.

1st and 2nd years passed in learning basic skills and doing DELHI DARSHAN with friends from different corners of the country.

I got ample opportunity to improve my creative skills with help from our prof's. We laid the foundation of statecraft society and Equal opportunity cell which was to provide space and cater needs of students.

In my 3rd year I met one of the prof who was to guide us and be our best friend. His way of teaching "THOUGHT" paper was amazing, he not only related past with present but also improved our insights on latent things around us. He is the person whom we students still contact as a senior friend.

The temple for students is the library, we were the batch which has seen the transition of RLA from old to new (infra). Library staff were very accommodative who kept us updated with new books. One of the eye catching part of college is its Canteen, I haven't seen yet such an affordable and clean space in any other college of DU.

Other gem-my friends, they are an important part of my life, like my family mate they are with me in good and bad times. Two of them have gone abroad to Upen and U of limerick, others are with me here in DU, Jamia and JNU. We still discuss, debate on contemporary issues, they shaped me all that I am. They have helped in colouring my lens towards different dimensions of society.

With the help of these two gems I topped in college. To conclude my words I would only say-A teacher takes a hand, opens a mind & touches a heart while what priests and poetry can't cure, a friend can, which I got in college.

It is often said that college days are the best days of one's journey and cherished throughout the life. I can vouch that based on my own experience in Ram Lal Anand College, memories of which are permanently embedded in my mind. Whenever, I reflect upon my days in college, my heart fills with pride and at the same time I get strong longing to live those moments again. After completing high school, one's next step towards career is to go to a college. I was an impressionable seventeen in the first year of this institute - there was the heady freedom of being out of school. One of the most interesting and responsible stages in one's life that gives an opportunity to explore is the "College Phase". And it would not be out of place to mention that Ram Lal Anand College, since it's inception has a clear and consistent vision to provide holistic education, combining modern and scientific approach of teaching. This inspiring vision blended with open minded, highly learned, intelligent and skilled professors who helped a lot in expanding my academic horizon and shaping ideals and mortality for the better.

My experience at RLA has taught me one fundamental thing - life is unpredictable, it might be good, it might be bad, it might be weird but it is a perfect blend of joy and hardship, you meet different people, you interact with them, you learn about their culture and grows as a responsible citizen. This institute gives you that freedom, that confidence and that dream. And it's a dream that you always carry around and sneakily believe that you might just realise some day, because after all you did go to Ram Lal Anand College.

David Guterson has aptly said, "There is a certain nostalgia and romance in a place you left". I have a distinct lingering memories of RLA's Lawn, it's gallery, it's porta cabins. A winter afternoon in campus garden or a summer morning in Library are just clichés. The delicious sense of achievement that oozes out of the red bricks, the comfort of the tress, the soft grasses are fantastic because that are the evidence of the wondrous fact that I actually made it to this. As a student of History I was privileged enough to get the best faculty in my department and availability of rare collections of books in library amidst other colleges of DU.

"Time flies like an arrow". The days I spent at RLA were exactly like this proverb. One fine days when we see the pictures of ours and friends having a good time, we definitely lands up smiling silently. That's the beauty of this place. It stays with us long after we climbed the ladders and forgotten the name of that cute crush we used to drool over. Remembering those moments carry out a lot of sentimental value and we can't help but miss those years later. The friendship we make in college life is most important aspect. Those people gives us strength and be our knights of in shining armour all the life. The time we spent with our friends, playing PUBG, Poker or arguing about any random topic, our regular class lecture sharply at 9am, walking down the streets of Benito Juarez and basking to watch new release of our favourite star always stays in our heart.

The department trips, the heritage walks and those impulsive journey - all those things make you emotional when you bid adieu to this institution. You will always realize once you graduate from the campus.

This institute stimulated me to become more independent and confident in racing hurdles in student or social life. It help me shape my personality and the aim of my life. It not only enhanced my strength but also help me in over coming the weakness. As a student representative of Gandhi Study Circle, I was exposed to quite variety of people from various different intellectual and opinion that help me great in understanding and socializing with such people. For me exposure was only attainable in Ram Lal. While we are at college to learn and in this regard, let me share you an allegory.

There were two young fish swimming along and they happen to meet an older fish swimming the other way, who nods at them and says "Morning boy, How is the water?". And the two young fish swim on for a bit and then eventually one of them looks at the other and goes "What the hell is water?"

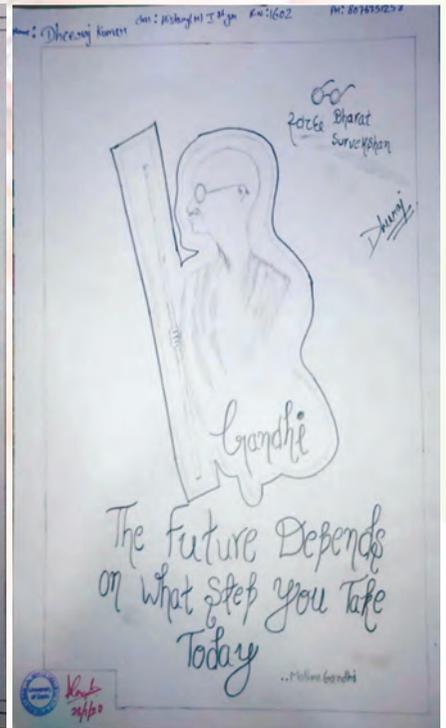
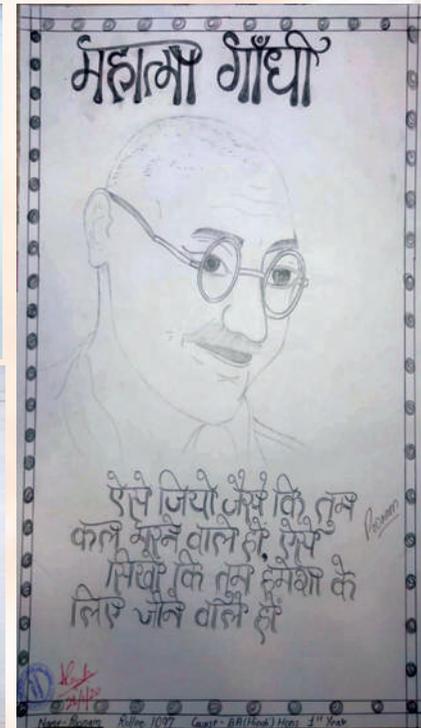
This reminds that we often forget of take for granted the most obvious things around us. He acknowledges it's difficulty to stay aware of what's happening in the world especially when we are too busy dealing with the monologue inside our head. That's what a college education is about, it is learning to think, exercise some degree of control over your thought, so that we can choose what to pay attention to. You must ensure that you are balancing your course load with other activities as well. Here, I have narrowed down something so that you can ensure you make the most of your entire college experience

# Join intramural societies, groups or sports. # Always go to your class. # Get to know your professor at personal level. # Plan your schedule in advance # Explore different subjects (and yourself) to find true passion # Visit the Library at regular intervals (because you got the best one) # Make time for the things other than social media

So, enjoy the time you have in college because the same sense of achievement over three years is hard to replicate later in life.

I, finally, congratulate the college's magazine committee 'Samdrihti' for the active role it is playing and acting as a medium to let the alumni connect with the student through this means.



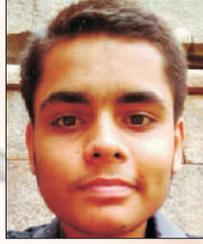


## मेरी नजर में गांधी

सत्य और दृढ़ता का एक ऐसा मिलन, जिसके जीवन का हर पहलू एक भारत का प्रतिनिधित्व करता है, शायद वही गांधी है।  
**विकास त्रिपाठी (प्रथम वर्ष)**  
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग



गांधी ने देश को एक पहचान में बांधने का काम किया जो थी, भारतीयता।  
**शादाब खान (तृतीय वर्ष)**  
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग



शालीनता का प्रतीक जो लोगों की चेतना में आज भी जिंदा है।  
**पायल (द्वितीय वर्ष)**  
हिंदी विशेष



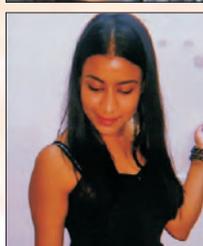
गांधी एक विचारधारा है जिसका अनुकरण हमारे मनुष्य जीवन के लिए बहुत उपयोगी और प्रासंगिक है।  
**पवन (तृतीय वर्ष)**  
हिंदी विशेष



एक चिन्ह है आपसी प्रेम और सद्भावना के।  
**कमल (द्वितीय वर्ष)**  
कंप्यूटर विज्ञान



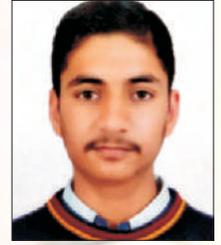
Gandhi was the change he wanted to see.  
**Anmol 3rd Year**  
BMS



आज के समय में कोई भी अहिंसा का पालन नहीं कर सकता।  
**सुदीप्त (तृतीय वर्ष)**  
कंप्यूटर विज्ञान



महात्मा गांधी एक स्वतंत्र सेनानी थे जिन्होंने दो सिद्धांत दिए शांति और सत्य।  
**अंकित यादव (प्रथम वर्ष)**  
गणित विभाग



महात्मा गांधी देश के राष्ट्रपिता, जिन्होंने अपना जीवन देश के हित और प्रगति के लिए बलिदान कर दिया।  
**सार्थक मेहता (द्वितीय वर्ष)**  
गणित विभाग



सत्य, अहिंसा और स्वदेश प्रेम का प्रतीक।  
**सेजल (प्रथम वर्ष)**  
सांख्यिकी विभाग



गांधी अहिंसा की मूरत थे।  
**इंतकाब अली (द्वितीय वर्ष)**  
सांख्यिकी विभाग



गांधी साध्य है, साधना आजादी है।  
**अंकुर (द्वितीय वर्ष)**  
सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग



सबसे चालाक राजनेता ।  
संदीप (तृतीय वर्ष)  
सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग



बिना हथियार का योद्धा ।  
स्वाति (प्रथम वर्ष)  
राजनीति विज्ञान



साधारण से असाधारण होने की  
कहानी ।  
करण (तृतीय वर्ष)  
राजनीति विज्ञान



भारत गांधी को अहिंसा का पाठ  
सिखाती एक हस्ती मानता है, परंतु  
गांधी मेरे लिए महज एक नोट पर  
छपे चेहरे से अधिक कुछ नहीं ।  
जैनिस् जैकब (द्वितीय वर्ष)  
अंग्रेजी विभाग



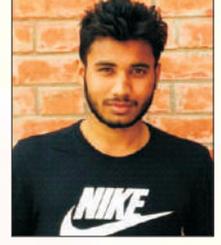
बहुत से बुरो के बीच इकलौता  
अच्छा इंसान ।  
अनिकेत (तृतीय वर्ष)  
अंग्रेजी विभाग



7 दशक के आजाद भारत में गांधी  
प्रासंगिक हैं ब्रिटिश राज से आजादी  
दिलाने में उन्होंने अहम भूमिका  
निभाई ।  
प्रदीप सिंह (प्रथम वर्ष)  
बी. ए. प्रोग्राम



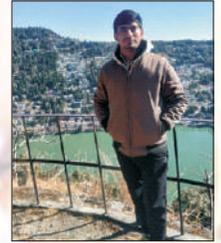
मेरी नज़र में गांधी एक नारीवादी थे  
उन्होंने नारियों को आंदोलनों का  
एक हिस्सा बनाया ।  
शाहरुख खान (तृतीय वर्ष)  
बी. ए. प्रोग्राम



गांधी जी लोगों के लिए एक प्रेरणा  
की मिसाल हैं ।  
गोकुल (प्रथम वर्ष)  
प्राणि विज्ञान



गांधी जी की जो भी विचारधारा थी  
वो देशहित के लिए है ।  
नरेश (द्वितीय वर्ष)  
प्राणि विज्ञान



सर्वजन हिताय् सर्वजन सुखाय ।  
प्रतिभा (द्वितीय वर्ष)  
इतिहास विशेष



सत्य ही ईश्वर है, अहिंसा सर्वोपरि  
है ।  
आकाश गोले (तृतीय वर्ष)  
इतिहास विशेष



He inspired Civil Rights and  
freedom Movements Across the  
World.  
Akash Yadav 2nd year  
BMS



कोई उन्हें बापू कहता है, तो कोई  
अहिंसा के पुजारी।  
साक्षी बठला (द्वितीय वर्ष)  
बी.कॉम विशेष



गांधी दृढ़ निश्चय की प्रेरणा हैं।  
श्रेया राठी (द्वितीय वर्ष)  
बी.कॉम प्रोग्राम



राष्ट्रपिता के रूप में आज भी वे  
दुनिया भर में विख्यात हैं।  
यतिन गोवर (तृतीय वर्ष)  
बी.कॉम विशेष



गांधी वक्त के साथ बदलने में सक्षम  
थे गांधी दृढ़ निश्चय की प्रेरणा हैं।  
ऋषभ भित्तल (द्वितीय वर्ष)  
बी.कॉम प्रोग्राम



## गांधी और आज

***“भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है। सर्वोच्च की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति को अपने विकास के लिए हर चीज यहां उपलब्ध है” :***

— महात्मा गांधी

महात्मा गांधी को प्यार से ‘बापू’ कहकर सम्मान दिया जाता है। वे न केवल राजनीतिक अपितु आध्यात्मिक गुरु के रूप में भी याद किए जाते हैं। मानव से महामानव बनने के बीच की जो पतली सी रेखा है, उसे उन्होंने न केवल मिटाया बल्कि समकालीन परिवेश में सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में जाने गए। बापू शायद एकमात्र ऐसे प्राणी हैं जिनके ऊपर न केवल भारत बल्कि विश्व के विभिन्न देशों में सर्वाधिक खोज हुए, असंख्य लेख प्रकाशित हुए।

बापू के बताए कदमों पर चलने वालों की फेहरिस्त काफी लंबी है। इसमें मार्टिन लूथर किंग (जू.), नेल्सन मंडेला, आंग सान सू की आदि प्रमुख हैं। महान वैज्ञानिक ‘अल्बर्ट आइंस्टीन’ ने कहा था ‘भविष्य में लोग शायद यह विश्वास न करें कि हांड-मांस का यह अद्भुत व्यक्ति कभी यहां चला भी करता था’।

लाजिमी है, महात्मा गांधी 20वीं सदी के सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति थे। आज उनके नाम से लगभग भारत में 53 तथा विदेशों में 48 प्रमुख सड़कें हैं। वे आज न केवल भारतीय मुद्रा पर, सरकारी दफ्तरों में, होर्डिंग्स आदि पर विराजमान हैं, बल्कि एक सोच बनकर समूचे मानव जाति का नित्य निरंतर पथ प्रदर्शित कर रहे हैं।

हिमालय-सा दृढ़ निश्चय रखने वाला यह महामानव न केवल हिंदुस्तान की सरजमीं पर सदियों से राज कर रहे साम्राज्य को उखाड़ फेंका, बल्कि विश्व के बाकी देशों में भी स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु ललक पैदा की। इसके लिए उन्होंने सत्य और अहिंसा को अपना प्रमुख हथियार बनाया। गांधी की विचारधारा आदर्शवाद की वनिस्पत व्यावहारिक

आदर्शवाद पर टिकी हुई थी। जिसमें सत्य, अहिंसा, सर्वोदय एवं सत्याग्रह ने प्रमुख स्तंभ की भूमिका अदा की।

गांधी जी अपनी पुस्तक 'सत्य के प्रयोग' तथा विभिन्न लेखों के माध्यम से इस बात को उद्धृत किया है कि वे अध्ययन में अपना काफी सारा समय व्यतीत करते थे। उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता समेत न केवल हिंदुओं के विभिन्न ग्रंथ का अध्ययन किया, बल्कि मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि के धर्मग्रंथों का भी अध्ययन किया। टॉलस्टॉय की पुस्तक 'THE KINGDOM OF GOD IS WITHIN YOU' को पढ़ने के पश्चात् वे उनसे काफी प्रभावित हुए।

वे ग्राम-स्वराज, स्वावलंबन, साफ-सफाई समेत समाज में फैली विभिन्न कुरीतियां मसलन दहेज प्रथा, अस्पृश्यता, ऊंच-नीच आदि में बदलाव के प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि व्यक्ति को अपनी जरूरत संबंधी कार्यों की पूर्ति का भरसक प्रयत्न खुद से ही करना चाहिए। इसके लिए उन्होंने चरखा के सहारे सूत कटाई को सशक्त माध्यम मानकर लोगों से भी इसे अपनाने की अपील की। उनका मानना था कि भारत की आत्मा देश के 7 लाख गांवों में बसती है।

इसलिए उनको साथ लिए बिना मानव उत्थान की कल्पना सार्थकता नहीं हासिल कर सकती। संपूर्ण क्रांति की सफलता के पश्चात्, जब बोधगया मठ आंदोलन सफलता का स्वाद चखने वाला था तब जयप्रकाश नारायण ने लोगों से आह्वान किया था— 'तब तक देश में बदलाव नहीं आ सकता जब तक शहरों से पढ़े-लिखे लोग गांव में जाकर किसानों, मजदूरों को उनके अधिकार के बारे में सचेत नहीं करते'।

गांधी के विचार कोई नए नहीं थे। वे तो सनातन और सर्वांगीण विचारधारा के पैरोकार थे। जिस की उपयोगिता आज के समय में साफ तौर पर नजर आती है। विभिन्न सरकारी नीतियां और मुद्दे उन्हीं के तो विचारों की उपज हैं। भले ही वो हर घर जल, सर्वोदय, मनरेगा, उज्ज्वलता आदि हीं क्यों ना हो। कहीं न कहीं इन सभी के मूल में गांधीवादी विचारधारा ही निहित है। जिसके लिए विकास का सही मायने में अर्थ समाज के अंतिम व्यक्ति तक योजना का लाभांश पहुंचने तथा हाशिए पर पड़े व्यक्ति को भी राष्ट्र निर्माण में अपनी अनुगूंज सुनाई देने से है। संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका भी कहीं न कहीं गांधीवादी विचारधारा की परिधि में ही समाई नजर आती है। जिसने वर्ष 2007 से 2 अक्टूबर को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में भी मनाना शुरू कर दिया है।

अगर हम भारतीय अर्थव्यवस्था में आई गिरावट तथा मुद्रास्फीति की बात करें तो बापू का जिक्र होना तय है। वर्ष 2019 के पहले तथा दूसरी तिमाही का विकास दर (Q1-5%, Q2-4.5%) सामने आ चुका है। जिसमें पिछले 6 सालों की सर्वाधिक गिरावट देखी गई है। अभी हाल ही में चीन, जापान ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण कोरिया समेत आसियान देशों के साथ हुई बैठक में भारत ने मुक्त व्यापार समझौता (FTA) पर हस्ताक्षर नहीं किया। इसके पीछे दलील दी गई कि यह समझौता हमारे देश की आत्मा माने जाने वाले किसानों के हित के विरुद्ध तथा महात्मा गांधी के विचारधारा के खिलाफ है। नतीजतन भारत ने इस समझौते को सिरे से नकार दिया। हालांकि आने वाले दिनों में ऐसा समझौता यूरेशिया (रूस संबंधी) तथा यूरोपीय संघ के साथ होने की संभावना है। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि इन समझौतों पर सहमति व्यक्त करते समय महात्मा गांधी और आम नागरिक के हितों को ध्यान में रखा जाएगा।

— ऋतुज दत्त राय

हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार विभाग

तृतीय वर्ष

## गाँधी के विचार

**“लाठी थामे हाथ में, पर हिंसा का प्रयोग नहीं,  
वो पढ़ा गया हमें सत्य, अहिंसा, सत्यवचन का पाठ सही”**

यह वचन केवल एक महापुरुष के नहीं, अपितु हर उस मानव जन के हैं जो एक महान महात्मा जिन्हें भारत का राष्ट्रपिता कहा जाता है, उनके विचारों और कार्यों से प्रेरित हैं। यदि आज के संदर्भ में राष्ट्रपिता के विचारों का अंतःमन किया जाए तो अवश्य ही समाज में उन आदर्श विचारों की कुछ कमी झलकती है। क्या यह संभव नहीं कि केवल एक या दो विचारों की प्रतिज्ञा कर मनुष्य जीवन संसार में आमूलचूल परिवर्तन ला सके, यह कार्य अवश्य ही संभव है यदि हम उन विचारों को अपने हृदय में समाहित करें जिन्हें वर्षों पहले एक महात्मा हमें सिखा गया था।

हम बात करते हैं सत्य की पर विचार करते हैं अहिंसा पर, हम बात करते हैं कैसे आदर्श समाज की जिसकी कल्पना वर्षों पहले गांधी जी ने की थी, आज उन विचारों की जरूरत देश एवं समाज दोनों को ही जान पड़ती है। भ्रष्टाचार एक ऐसा पहलू जो आज हर स्तर पर विराजमान दिखाई पड़ता है परंतु इस भयावह समस्या का उपाय भी हमें गांधीजी के दो स्वर्ण रूपी शब्दों में मिलता है जिन्हें सत्य और अहिंसा कहा जाता है। यदि एक शिशु जो आगे जाकर एक बालक, एक युवा और फिर एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका का चिंतन करना चाहता है तो हमें उसमें बाल रूपी स्तर से ही सत्य की प्रतिज्ञा के विचारों को उसके मन में डालना होगा क्योंकि जहां सत्य विराजमान होता है वहां भ्रष्टाचार और अपराध जैसे शब्दों के लिए कोई स्थान रिक्त होता ही नहीं है।

आगे चलकर इन्हीं विचारों की कड़ियां हमें एक आदर्श समाज की पीढ़ियों के निर्माण में सहायक हो जाती हैं। गांधीजी के अतुलनीय कार्यों को बताना अब आम मालूम पड़ता है यदि केवल उनके विचारों की भी अभिव्यक्ति की जाए तो मात्र व अभिव्यक्ति भी हमें आत्मचिंतन करने पर मजबूर कर देती है कहने का तात्पर्य बहुत साफ है कि यदि निष्ठा भाव से सत्य का चिंतन मन एवं समाज में किया जाए तो समाज में छिपी हर उस अवरोध या दीवार को गिराया जा सकता है जो एक नागरिक या युवक को गलत कार्य करने पर मजबूर कर देता है। सत्य का प्रयोग कर न केवल एक नागरिक अपने देश के प्रति ईमानदार बनेगा बल्कि समाज में व्याप्त हर रुढ़ी का खंडन भी करेगा वह न केवल अपनी मां के प्रति भावुक होगा बल्कि समाज में मौजूद हर मां की रक्षा व अपनी मां समझकर करेगा या कल्पना एक ऐसे समाज की होगी जहां एक स्त्री के हजारों भाई होंगे तथा यहां रिश्तों की नींव सत्य पर होगी और उसमें बने घर के आदर्श भी सत्य पर आधारित होंगे।

**महात्मा गांधी का यह कथन :-** ‘आंखों के बदले आंख, पूरी दुनिया अंधी हो जाएगी’ यह केवल कथन नहीं अपितु एक ऐसा सुविचार है जो समाज में नैतिकता की भावना को हर मन में जागृत कर उसे उजाले के एक ऐसे संसार में प्रवेश करवाता है जहां समाज में व्याप्त बुराइयां चमकदार सितारों की अच्छाइयां से निकली रोशनी में लीन हो जाती हैं।

चलिए एक संकल्प करें कि गांधी जी को उनके विचारों के माध्यम से हर मानव जन तक पहुंचाएं तथा उनके विचारों को जीवंत कर समाज की बुराइयों को मिटाएं और राष्ट्रपिता को उनकी 150वीं वर्षगांठ पर नमन करें।

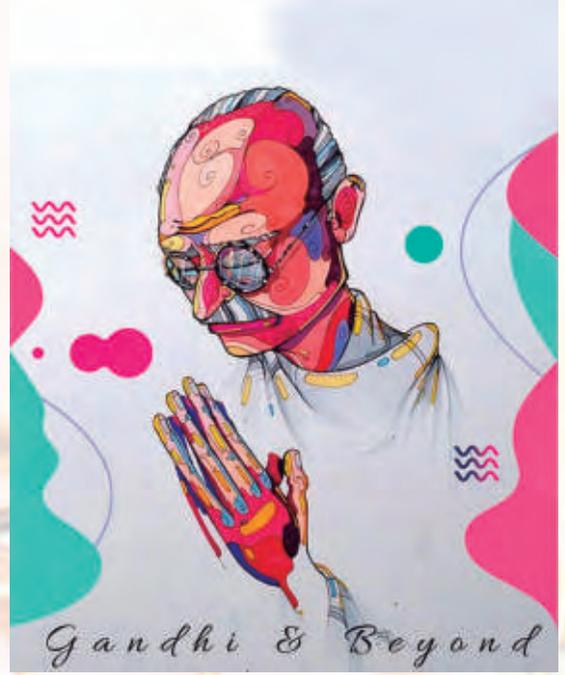
‘चिंतन मनन विचार करे  
और सत्य वचन का पाठ पढ़ें  
चलो आओ अपने राष्ट्रपिता की  
पुण्यतिथि पर फिर से, उनका सत्कार करें।’

**अश्वनी कुमार**  
बी.ए. (इतिहास) प्रथम वर्ष



## ‘बापू’ एक वृहद विचार

गांधी भारत का एक ऐसा वरदान है जिसने भारतीयों को जीवन का एक आधार दिया। गांधी एक ऐसी जीवंत शख्सियत है उन्होंने कभी किसी एक विषय पर खुद को सीमित नहीं रखा। भारत की कल्पना गांधी के बिना अधूरी है यदि गांधी न होते तो आज भारत इतनी बेहतर स्थिति में न होता। उनके किए हुए प्रयासों उनके विचार सभी ने मिलकर भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र की संकल्पना दी। गांधी के विचार इतने उन्मुक्त थे कि उनके लिए कोई वर्ग या जाति भेद महत्वहीन था तभी उन्होंने देश के पिछड़े वर्गों महिलाओं व हरिजन समाज के लोगों के उत्थान के लिए कार्य किया। गांधी एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, वे प्रत्येक स्थिति को मापना जानते थे। वे समझते थे कि चंद व्यक्तियों से देश के विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हुआ जा सकता इसलिए सदैव देश को एक राष्ट्र के सूत्र में बांधकर एक परिवार व भाईचारे की भावना के साथ लेकर आगे बढ़ना चाहते थे।



धार्मिक संकल्पनाओं का वे सदैव खण्डन करते रहे। वे ‘रामराज्य’ की संकल्पना रखते थे जिसका अर्थ लोग ‘हिंदू राष्ट्र’ के तौर पर आज के दौर में निकालते हैं परंतु गांधी का रामराज्य का अर्थ एक शांतिपूर्ण में अमन-चैन के राज्य से था। गांधी बुनियाद को मजबूत करके राष्ट्र के विकास की ओर बढ़ने की बात करते थे उनके विचार बेहद प्रासंगिक हैं यदि एक राष्ट्र का विकास करना है तो बुनियादों से शुरुआत करना आवश्यक है और एक राष्ट्र की बुनियाद है ग्राम। गांधी सदैव ग्रामों के विकास, लघु उद्योग व स्वदेशी की भावना पर विश्वास रखते थे यह सभी तत्व एक देश के विकास व उत्थान के लिए बहुत महत्व रखते हैं।

जैसा कि यह बात सर्व व्याप्त है गांधी कभी किसी एक क्षेत्र-विशेष तक सीमित नहीं रहे इस संदर्भ में गांधी का पत्रकारिता में योगदान भी बहुत अनिवार्य तत्व रहा गांधी की पत्रकारिता ने देश को स्वदेशी भावना से भरा। जनता में देश के प्रति प्रेम व कुछ कर गुजरने की भावना उत्पन्न हुई। उनकी पत्रकारिता में इतना दम था कि उनके विचारों ने उनके जैसे कई और राष्ट्र प्रेमी जन्में और देश के विकास में व स्वतंत्रता की जंग में खुद को लगा दिया। यह बात भी बहुत अनिवार्य है कि गांधी अहिंसा वादी व्यक्तित्व के व्यक्ति थे जिन्होंने सभी ऐसे कार्य जिनमें जोखिमो की भरमार थी सभी कार्य अहिंसात्मक ढंग से पूर्ण किए। गांधी जैसे आचार-विचार रखने वाला शायद ही इस सदी में कोई दूसरा व्यक्तित्व हो उनके इन महान गुणों व विचारों ने ही उन्हें ‘राष्ट्रपिता’ बनाया।

अंत में यही कि भले ही गांधी आज हमारे बीच न हों पर गांधी एक अमर व जीवंत शख्सियत हैं। गांधी युगांतर तक अपने कार्यों, गुणों, विचारों व महानता के कारण सदैव जीवंत बने रहेंगे।

**निकी राय**

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,  
द्वितीय वर्ष

## गांधी और सिनेमा

1926 में महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' में सिनेमा की आलोचना करते हुए लिखा था, 'इसका प्रभाव प्रतिदिन जबरदस्ती मेरे ऊपर पड़ता है'! यह धारणा उनके मन में इतनी प्रबल थी कि विजय भट्ट की फिल्म 'रामराज्य' देखने के बावजूद वह बदल नहीं सकी और वह आजीवन सिनेमा से परहेज करते रहे। इसके बाद भी भारतीय सिनेमा पर मुंबई में बने भारत सरकार के संग्रहालय में एक पूरा खंड महात्मा गांधी को समर्पित किया गया है। वास्तव में भारत में सिनेमा और गांधी का विकास एक ही ज़मीन पर हुआ। गांधी ने भारतीय समाज के लिए रामराज्य को आदर्श माना तो फाल्के ने अपनी फिल्म को 72 समुदायों से जोड़ने के लिए कृष्ण को आधार बनाया। वास्तव में यह वह दौर था, जब अंग्रेजों के आतंक से लोगों का मनोबल टूट रहा था। सीधे राजनीतिक हस्तक्षेप के बजाय गांधी ने भी धर्म का सहारा लिया और सिनेमा ने भी। गांधीजी की सभाओं का आरंभ प्रार्थना और भजन से होता था जबकि हिंदुस्तानी सिनेमा ने अपने पहले दशक में 91 फिल्मों का निर्माण किया, जिसमें सभी पौराणिक धार्मिक कथाओं पर आधारित थी। सिनेमा ने गांधी को व्यक्ति से ज्यादा विचार के रूप में स्वीकार किया है। भारत में उस समय 'चंडीदास' जैसी क्रांतिकारी फिल्म नहीं बनी होती यदि 'देवकी बोस' ने पढ़ाई छोड़कर 'गांधी के असहयोग आंदोलन' में भाग नहीं लिया होता। आश्चर्य नहीं कि अधिकांश भारतीय फिल्में इस धारणा के साथ बनती रही हैं कि गांव बेहतर हैं, गांव के लोग बेहतर हैं। भारतीय सिनेमा की इस धारणा का श्रेय गांधी को जाता है। 'उपकार' से लेकर 'धरती कहे पुकार के' तक का एकमात्र संदेश गांव के प्रति लगाव और सम्मान पैदा करना था। आजादी के बाद जब नेहरू देश के विकास के लिए कल-कारखानों पर भरोसा कर रहे थे, कारखानों को आधुनिक तीर्थ की संज्ञा दे रहे थे, तब बी.आर. चोपड़ा 'नया दौर' जैसी फिल्में बना रहे थे, जो खुलकर मशीन के खिलाफ खड़ी होती दिखती थी। 'किसान कन्या' से लेकर 2004 में बनी आशुतोष गोवारिकर की 'स्वदेश' तक में महात्मा गांधी के प्रभाव को स्पष्ट रेखांकित किया जा सकता है।

यह संयोग नहीं कि 'स्वदेश' में आशुतोष ने अपने मुख्य पात्र का नाम मोहन रखा, जो अमेरिका से आता है और गांव के विकास में सहभागी बन गांव का ही होकर रह जाता है। ऐसा ही कुछ सर्वश्रेष्ठ मैथिली फिल्म राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित 'मिथिला मखना' में भी दिखा था, जहां विदेश में खुशहाल जिंदगी जी रहा नायक छठ मनाने देश आता है। यहां उसे अपने दादाजी के मखाना के पुरतैनी कारोबार की जानकारी मिलती है। दूसरी ओर रोजगार की तलाश में गांव छोड़कर बाहर जाते युवाओं को वह देखता है, तो अपने दादा के मखाना के कारोबार को फिर से शुरू करने की कोशिश करता है। अड़चने आती हैं, लेकिन गांव वालों की मदद से वह गांव में एक बार फिर से मखाना के कारोबार को शुरू करने में सफल होता है। इसी तरह कुछ समय पहले आई फिल्म 'सुई धागा' में भी गांधी पूरी तरह मुखर दिखते हैं। 1918 में बनी 'महात्मा विदुर' से लेकर 'स्वदेश' और फिर 'सुई धागा' तक में कहीं ना कहीं गांधी की उपस्थिति देखी जा सकती है। यह गांधी के दर्शन का ही प्रभाव था कि जिस फिल्म उद्योग से गांधी लगभग घृणा या नजरअंदाज करते रहे, उसी उद्योग से उनकी धर्मनिरपेक्षता का निर्वाह हमेशा हुआ है। फिल्म उद्योग ने केवल धार्मिक सद्भावना पर फिल्म ही नहीं बनाई, वरण अपने दैनिक कार्यों और विचारों में भी इस आदर्श का निर्वाह किया। आश्चर्य नहीं कि आजादी के ठीक पहले जब गांधी के विचार कई भारतीय समाजों में कमजोर पड़ रहे थे, तब केवल हिंदी फिल्मों में गांधीवाद कायम था। सांप्रदायिक असहिष्णुता के दौर में सोहराब मोदी की 'पुकार' बनी। उसी दौर में चित्तौड़गढ़ बनाई गई जिसमें एक मुसलमान शहंशाह राजधानी पर मंडराते खतरे को अनदेखा करके फौजी लेकर अपनी मुंह बोली राजपूत बहन की रक्षा के लिए कूच करता है। 'ना हिंदू बनेगा, ना मुसलमान बनेगा' का संदेश लेकर

आए फिल्म 'धूल का फूल' के आधार में गांधी को देखा जा सकता है। 'गर्म हवा' जैसी फिल्म में गांधी नहीं होते हुए भी पूरी फिल्म में होते हैं। गांधी के विचारों के प्रति विश्वास ही है कि गांधी का सर्वधर्म समभाव ही आज भी प्रमुख धारा के भारतीय सिनेमा का मुख्य भाग है। गांधी ने वास्तव में विचार नहीं दिए, जीवन मूल्य तय किए। उन्होंने जो जिया उसी को विचार माना। विचार गांधी और सिनेमा और जीवन में यह समानता दुर्लभ है। शायद यही कारण है कि उन्होंने जिंदगी में छोटी-छोटी मानी जाने वाली बातों को भी बड़ा महत्व दिया। महात्मा गांधी को विश्व के एकमात्र महापुरुष के रूप में हम याद कर सकते हैं, जिन्होंने शौच और स्वच्छता को भी अपने आंदोलनों में शामिल किया। उन्होंने कहा था, स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है स्वच्छता। उन्होंने यह कहा भर नहीं, अपने आश्रम में शौच की सफाई उनकी दिनचर्या का हिस्सा भी रही। यह आश्चर्य नहीं कि हाल के दिनों में जब खुले में शौच की समस्या को केंद्र सरकार द्वारा अपने मुख्य एजेंडे के रूप में घोषित किया गया तब 'टॉयलेट एक प्रेम कथा' जैसी फिल्म भी परिकल्पित हुई। हालांकि इसके 2 वर्ष पहले ही प्रदीप शर्मा और अस्मिता शर्मा की जोड़ी में 'गुटर गुटरगू' जैसी फिल्में बनाई थी, जिसमें शौच की समस्या को महिला की नज़र से देखने की कोशिश की गई थी। यह फिल्में निश्चित रूप से स्वच्छता के प्रति गांधी के विचारों को रेखांकित करने की कोशिश अवश्य लगती हैं वास्तव में सिनेमा ने गांधी को पाठ्यक्रमों से बाहर निकाल कर पूरे राष्ट्र में पहुंचाने में एक अहम भूमिका अदा की। सिर्फ 'गांधी', 'सरदार', 'मेकिंग ऑफ महात्मा', 'मैंने गांधी को नहीं मारा', 'गांधी माई फादर', 'लगे रहो मुन्नाभाई' ही नहीं 'चक दे इंडिया', 'शिखर' 'रोड टू संगम' में भी गांधी के प्रभाव को देखा जा सकता है। लेकिन यह भी सच है कि गांधी से इस कदर प्रभावित सिनेमा 1982 तक उन पर कथा फिल्म बनाने की हिम्मत नहीं जुटा सका, जब तक इंग्लैंड से आकर रिचर्ड ऐटनबरो ने गांधी पर फिल्म बनाने की शुरुआत नहीं कर दी। यह फिल्म सिर्फ तकनीकी रूप से नहीं भावनात्मक रूप से भी पूरी तरह गांधी को समर्पित थी। कहते हैं, ब्रिटिश अभिनेता सेन किंग्सले ने गांधी की भूमिका के लिए अपना चयन होते ही योगाभ्यास आरंभ कर दिया, शराब और मांसाहार छोड़ दिया था। जो गांधी आजादी के पूर्व से ही हमारे विचारों और राजनीति के केंद्र में रहे, सैकड़ों किताबें जिन पर रची गई, सैकड़ों पेंटिंग्स बनी, सैकड़ों नाटक और नृत्य नाटिकाएं तैयार हुई, उनके प्रति सिनेमा मौन साधे बैठा रहा। ऐसी बात नहीं कि गांधी पर फिल्म बनाने के लिए लोगों के मन में चिंता नहीं थी। 1963 में जब राज्यसभा में गांधी पर फिल्म बनाने के संबंध में सरकार की उदासीनता पर चर्चा हुई, तो पंडित नेहरू ने स्पष्ट किया कि सरकारी विभाग इस कार्य के योग्य नहीं हैं। फिल्म निर्माता से संबंधित कोई सक्षम व्यक्ति सरकार के पास नहीं। सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह पर कई फिल्में बनाने वाला बॉलीवुड भी गांधी को फिल्माने में चिंतित नहीं हुआ। बाद के दिनों में सरकार की पहल पर एनएफडीसी ने 2000 में जव्वार पटेल के निर्देशन में डॉक्टर बाबा साहब अंबेडकर और केतन मेहता के निर्देशन में सरदार बल्लभभाई पटेल जैसी महत्वपूर्ण फीचर फिल्म बनवाई। शायद इसका कारण महात्मा गांधी के जीवन की सिंपलीसिटी रही होगी। सिनेमा को ड्रामा चाहिए, शायद इसलिए भगत सिंह के जीवन पर बड़े बजट की एक साथ तीन फिल्में बनती हैं। सुभाष चंद्र बोस के जीवन का नाटकीय 'सहारा' इतना आकर्षित करती है कि श्याम बेनेगल के निर्देशन में 4 घंटे की फिल्म बनवाई जाती है। लोहिया ने कभी कहा था, इस देश को जोड़ने वाली दो ही चीजें हैं—गांधी और सिनेमा। आश्चर्य नहीं कि जब भी दोनों एक साथ आए, पर्दे पर चमकता हुआ, चाहे वह 'गांधी' हो या 'लगे रहे मुन्ना भाई'। सिनेमा से दूरी बनाए रखने वाले महात्मा गांधी सिनेमा की संप्रेषणीयता से कतई अपरिचित नहीं दिखते थे। 1931 में महात्मा गांधी गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने लंदन गए, तो वहां एकमात्र जिस गैर राजनीतिक व्यक्ति से उन्होंने मिलने को सहमति दी, वह चार्ली चौप्लिन थे, जो उन दिनों अपनी फिल्म 'सिटी लाइट्स' के प्रमोशन के सिलसिले में लंदन में थे। वाकई यह सोचना मुश्किल है कि आज गांधी होते तो क्या सिनेमा के प्रति उनका विचार बदल सकता था या फिर वह अपने निर्णय पर आज भी संतुष्ट होते!

**पुष्पेंद्र**

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, (प्रथम वर्ष)

## गाड़ी के दो पहिये सत्य और अहिंसा

ना खड़ग ना तलवार की ढाल थी,  
फिर भी धोती वाले की मिसाल थी।

गांधी का दर्शन आज की दुनिया केवल अपनी किताबों में ही नहीं करती बल्कि एक कागज यानी नोट पर भी करती है।

भारत की भूमि पर एक महान या महात्मा कहे जाने वाले गांधी का जन्म हुआ उनका जन्म भी एक साधारण शिशु की तरह ही हुआ था परंतु समय और समझ को एक ही पंथ में लाकर गांधी ने खुद को लोगों से अलग बनाया। उन्होंने अपने अहिंसा और

सत्य की दो पहियों की गाड़ी से भारत के हर कोने का भ्रमण किया तथा उसी गाड़ी के दोनों पहियों पर आजादी की सवारी भारत में आई। गाड़ी को खींचने में हर उस शख्स ने अपना सहयोग दिया जो अहिंसा तथा सत्य के साथ आजादी लाना चाहते थे गांधी जी ने बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो, इन मतों से अहिंसा के पथ को अग्रसर किया तथा अहिंसा परमोधर्म का आवाहन किया। यदि हम गांधीजी के स्वदेशी बनने का अर्थ समझें तो यह काफी विस्तृत है गांधी जी कहते थे कि यदि हम अपनी जरूरत के सामानों का निर्माण स्वयं कर सकते हैं तो दूसरों पर आश्रित क्यों रहना परंतु यहां पर आत्मनिर्भरता का अर्थ यह नहीं कि हम किसी से कटकर हैं किसी से कोई मतलब न रखें क्योंकि ऐसी सोच इंसान को अहंकारी बनाती है कि यदि मैं परिपूर्ण हूं तो यह 'मैं' का भाव उत्पन्न करती है और जहां अहम आड़े आता है वहां एक ऐसे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती जो आपस में मिलकर रहेंगे। क्योंकि अहम का भाव हमारे अंदर हम की भावना को कहीं दूर किसी बंद गलियों में धकेल देता है, इसलिए गांधी का आत्मनिर्भरता का अर्थ सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना था, क्योंकि आश्रित होने से आप कमजोर नहीं बल्कि इससे आप के आपसी संबंध बेहतर होते।

गांधी जी ने ना सिर्फ सहयोग की बात कही है बल्कि अमीरों और गरीबों में जो फासला बढ़ता जा रहा है इसकी बात भी गांधी जी ने कही है, हमारा समाज दो वर्गों में बंटा हुआ दिखाई दे रहा है जहां अमीरों द्वारा गरीब वर्ग का शोषण किया जा रहा है गांधी का कहना था कि गरीब लोगों को ऊपर उठाना और उनका सहारा बनना ही मानवता है, तभी उनका कहना था कि यदि आपकी जरूरत पूरी हो जाती है तो बची हुई वस्तु आप दूसरों को दान कर दें, उनका मानना था कि ईश्वर ने हमें उस संपत्ति का मालिक नहीं बनाया है बल्कि उस संपत्ति को वितरित करने वाला बनाया है, अगर दुनिया इसी सिद्धांत या अवधारणा को अमल में ले आए तो दुनिया का कोई भी गरीब भूखा नहीं रहेगा।

गांधी जी के इन्हीं अनमोल विचारों का पालन किया जाए तो दुनिया में सहयोग और प्रेम बना रहेगा।



आभा  
बी.जे.एम.सी

## गांधी जी का मोबाइल

मैं हूँ गांधी का मोबाइल, मेरी भी अपनी एक कहानी है। कभी समय व्यतीत करने का साधन था मैं अब समय बचाने का माध्यम हूँ, मेरी नोटिफिकेशन बेल कभी रुकती नहीं क्योंकि गांधी की हर एक घड़ी का महत्व है। कभी कस्तूरबा को समय का ज्ञान हूँ, कहीं नेहरू को वक्त पर पाबंद होना सिखाता हूँ, कभी पटेल को अपनी भावनाओं को रोकना सिखाता हूँ, मैं गांधी का मोबाइल हूँ सबको पाठ पढ़ाता हूँ। चलो एक किस्सा आज गांधी का भी बताता हूँ, एक बार एक महिला गांधी से मिलने आई उसने गांधी को बताया कि उसके बेटे को मोबाइल चलाने की एक बुरी आदत है जब देखो वह मोबाइल पर लगा रहता है वह बाहर की दुनिया पर ध्यान ही नहीं देता उसने इस परेशानी से निजात पाने का उपाय गांधी से पूछा तब गांधी जी ने उस महिला से कुछ वक्त बाद आने को कहा। एक दिन अचानक उस महिला को एक कॉल आया कि गांधी ने उस महिला को अपने बेटे के साथ मिलने को बुलाया है, जब वह लोग गांधी से मिलने पहुंचे तब गांधी ने उस लड़के से कहा 'बेटा मोबाइल चलाने की आदत अच्छी नहीं है तुम इसे छोड़ने का प्रयास करो'। बस इतना ही कह कर गांधी ने मां बेटे को जाने को कह दिया इस बात पर महिला ने गांधी को बोला कि बस इतनी सी बात कहने के लिए आपने हमें बुलाया था इस बात पर गांधी ने कहा कि जब आप मेरे पास आई थी तब मुझे भी मोबाइल चलाने की एक बुरी आदत थी परंतु आपके जाने के बाद मैंने इसको बदलने का प्रयास किया कुछ परेशानियां हुईं परंतु मैं सफल रहा तो मुझे विश्वास है कि आपका बेटा भी इसमें सफल होगा। गांधी के इस विश्वास को हम सभी अनुकरण कर सकते हैं, पर मेरा क्या मैं तो गांधी का मोबाइल हूँ। मेरी तो अलग ही कहानी है कभी गांधी के जिद्दी व्यक्तित्व की पहचान हूँ कभी उनके चतुराई की जुबान हूँ मैं तो गांधी का मोबाइल हूँ मेरी अपनी ही कहानी है।

मैं गांधी का मोबाइल

मेरा स्क्रीनसेवर गीता तो मेरा होमस्क्रीन कुरान है,  
मेरा रिंगटोन भजन तो मेरा नोटिफिकेशन गीत है,  
मेरा एक ऐप सत्य तो दूसरा एक अहिंसा है,  
मेरा सच न्याय तो दूसरा सच सत्याग्रह है,  
मैं गांधी का मोबाइल मेरी अलग ही जुबान है।

विकास त्रिपाठी

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग  
(प्रथम वर्ष)

## 'बापू' हमारे शान हैं

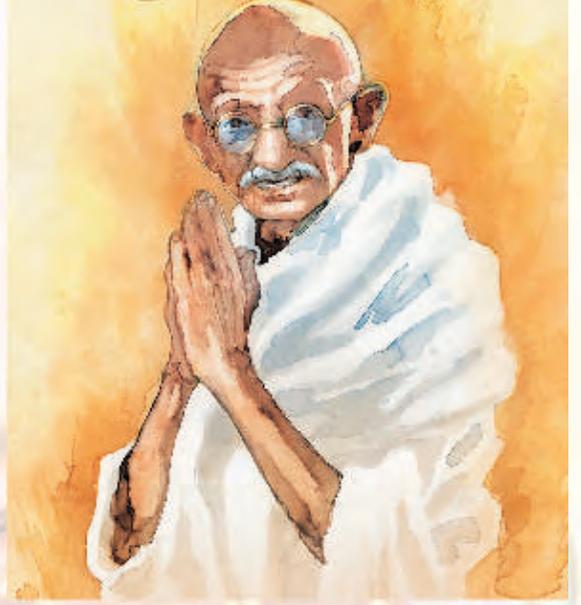
वो कर गया आबाद हिन्दुस्तान को,  
सत्य, अहिंसा की तलवार से।  
हो पतन परदेसी का,  
स्वदेशी उसने अपनाया था।  
वो महात्मा लाखों दिलों में,  
अपना 'बापू' कहलाया था।  
'बापू' हमारे शान हैं,  
'भारत छोड़ो आंदोलन' का आगाज़,  
युद्ध की आखिरी ललकार थी ब्रिटिश साम्राज्य से,  
थी लड़ाई तूफान से,  
मगर जीता उसने आराम से।  
सत्य, अहिंसा, शांति का प्रतीक,  
'बापू' हमारे शान हैं।  
पक्षपात का भेद मिटाकर,  
'हरिजन' को अपनाया था,  
वो महात्मा लाखों दिलों में  
अपना 'बापू' कहलाया था।  
'बापू' हमारे शान हैं।

असीम मुद्गल

बी.ए. हिस्ट्री, प्रथम वर्ष

## महात्मा गाँधी की समसामयिक सार्थकता

यदि महात्मा गाँधी को भारत मौलिक अर्थों में समझे और उनके विचारों का अनुसरण करे, तो निश्चित ही राष्ट्रपिता राष्ट्र और समाज की संकल्पना को ही नष्ट कर दे। महात्मा गाँधी का संपूर्ण जीवन हमें स्वाधीनता का संदेश देता है। उनके अनुसार स्वाधीनता के दो आयाम हैं—“स्वयं का शासन” व “स्वयं पर शासन”। गाँधी जी की स्वाधीनता का एक निश्चित लक्षण है—“स्वयं पर निर्भरता”। गाँधी जी का संपूर्ण जीवन चरित्र सभी अर्थों में “स्वयं पर निर्भरता का एक संदेश है”। गाँधी जी ने अपने उपदेश एवं अभ्यास दोनों में आत्मनिर्भरता को स्थापित किया है। उन्होंने चरखा चलाया अपने वस्त्रों का स्वयं उत्पादन किया, अपने स्थान की साफ—सफाई से लेकर अपनी रोजमर्रा की सभी आवश्यकताओं को स्वयं पूरा करने का अथक प्रयास किया है।



यदि हम मूलभूत स्तर पर इस सिद्धांत का आंकलन करें तो पाएंगे कि गाँधी जी की यह विचार—श्रृंखला पूरी तरह से समाज—विरोधी है। यदि इन विचारों को पर्याप्त रूप से परिपालित किया जाए तो सामाजिक व्यवस्था समूल निष्प्राणम हो जाए। समाज का अर्थ ही होता है—‘एक दूसरे के परस्पर निर्भर लोगों का समूह’। यही समाज की आधारभूत संकल्पना है। गाँधी और उनके विचार हमें आत्मनिर्भरता की उच्चतम कोटि तक ले जाने का प्रयास करते हैं। इसी उच्चतम—आत्मनिर्भरता की अवस्था में समाज की मृत्यु अनिवार्य रूप से छिपी है। अत्याधिक आत्मनिर्भरता के निश्चित तौर पर कुछ दुष्परिणाम हो सकते हैं। एक—दूसरे पर परस्पर निर्भर लोग, सामाजिक अनुबंध में बंधे होते हैं। एक—दूसरे पर उनकी निर्भरता उन्हें परस्पर क्षति पहुँचाने से रोकती है। जैसे—जैसे व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता बढ़ती जाएगी, उसी अनुपात में समाजिक अशांति बढ़ती चली जाएगी। समाज की मृत्यु से उपजा यह वैमनस्य अन्त में ‘थॉमस हॉब्स की प्राकृतिक दशा’ जैसी अवस्था में समाप्त होगा।

यदि आज के अति—आधुनिक युग में गाँधी जी के विचारों को हम कार्यान्वित करने का प्रयास करें तो मनुष्य निश्चित तौर पर अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ ही नष्ट कर देगा। उदाहरण के लिए जो वस्त्र आज हमें कुछ ही रूपों में उपलब्ध हैं, यदि हम इस मशीनी—युग में उन्हें स्वयं से उत्पादित करने का प्रयास करें तो यह समय का असम्मान होगा। यह समय किसी दूसरे सृजनात्मक कार्य में निवेश किया जा सकता है।

विगत पाँच हजार वर्षों के मानव इतिहास में स्त्रियों के साथ यही दुर्व्यवहार हुआ है। जिसके परिणाम स्वरूप वे अपना बहुमूल्य समय तर्क, विचार व आविष्कार में नहीं लगा पायी हैं। वर्तमान समय में हमें एक मजबूत केंद्रीय व्यवस्था की आवश्यकता है। जिस प्रकार समस्त समुदाय के वस्त्र व अन्य दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं, एक केंद्रीय व्यवस्था उदाहरणार्थ औद्योगिक निर्माण इकाइयों में उत्पादित होती है। उसी प्रकार हजारों वर्षों से जो कार्य विशिष्ट रूप स्त्रैण बना दिये गए हैं, उन्हें भी एक केंद्रीय व्यवस्था में ढालने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए भोजन की व्यवस्था भारतीय स्त्री की दिनचर्या का अभिन्न अंग है। संभवतः स्त्री का सर्वाधिक समय भोजन की व्यवस्था में व्यय हो जाता

है। अतः भोजन व्यवस्था के लिए भी एक केंद्रीय इकाई जो समस्त समुदाय जैसे गाँव या मोहल्ले के लिए भोजन की व्यवस्था करे व अन्य स्त्रियों के समय को अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए सुरक्षित करे, की आवश्यकता है। आत्मनिर्भरता में नहीं बल्कि ऐसी केंद्रीय व्यवस्था में स्त्रियों की वास्तविक मुक्ति निहित है।

दूसरी ओर यदि हम महात्मा गाँधी की सामाजिक महत्वाभिलाषाओं को मूल में प्रवेश कर समझने का प्रयास करें तो पाएंगे की उनकी समाजिक क्रान्ति की विधि पर्याप्त रूप से सक्षम नहीं हैं। भारत में एक अभूतपूर्व आयोजन, प्रतियोगिता को समाप्त करने के लिए हुआ है। पूरे विश्व में वर्ग—विभाजन सदा से बना रहा है, परंतु वर्ण—व्यवस्था भारतीय हिन्दू मस्तिष्क का अनूठा आविष्कार है। भारतीय—हिंदू समाज ने वर्ग व्यवस्था को स्थिर कर वर्ण—व्यवस्था अथवा 'फ्रिजन क्लास' का आविष्कार किया है। इस समाज ने कर्म के आधार पर शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय एवं ब्राह्मण को निर्मित किया एवं इस निर्माण के पीछे गंभीर तर्क और दार्शनिक व्यवस्था खड़ी कर दी। कर्म विभाजन के आधार पर शूद्र से कह दिया गया कि श्रम ही उसका संसार है। मानव—मात्र की सेवा ही उसका धर्म है। इस प्रकार इस बड़े समूह की प्रतियोगिता क्रमशः वैश्य, क्षत्रिय एवं ब्राह्मण के साथ समाप्त कर दी गयी। अब यह शूद्र वर्ण वैश्य से धन में, क्षत्रिय से यश में और ब्राह्मण से ज्ञान में प्रतियोगी नहीं हो सकता, चाहे अधिक मेधावी व प्रज्ञावान हो। इस व्यवस्था ने शूद्र को सदा शारीरिक श्रम में लगाए रखा, जिसके परिणाम स्वरूप भारत में कोई विचारशील शूद्र पैदा न हो सका, डा. अंबेडकर के अतिरिक्त, वे भी परिचय के कारण विचार को विकसित कर सके।

वर्ण व्यवस्था के सहयोग में तर्क प्रस्तुत किया गया है की, विगत जन्मों के पाप—कर्मों के कारण व्यक्ति शूद्र वर्ण में जन्म लेता है। यदि इस जन्म में अपने धर्म का उचित अनुपालन व पुण्य कर्म किए जाएं तो निश्चित रूप से आगामी जन्म उच्च वर्ण में होता है। इस प्रकार के तर्कों से शूद्रों को संतुष्ट कर दिया गया है। भारत में जब आक्रमणकारी आए तो इसी तर्क—व्यवस्था के कारण शूद्रों को स्वाधीनता संग्रामों में कोई रुचि नहीं थी। उनके मस्तिष्क को विगत पाँच हजार वर्षों में ऐसा निर्मित कर दिया गया था कि समस्त शूद्र वर्ण को शक्ति एवं राजनीति में कोई रुचि न थी। एक छोटे से क्षत्रिय वर्ण के अतिरिक्त किसी वर्ण को राष्ट्र—निर्माण अपना दायित्व न लगा। संक्षेप में वर्ण व्यवस्था से जितनी मृत्यु भारतीय समाज को मिली है, संभवतः किसी अन्य कारण से नहीं मिली है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी इस व्यवस्था के विपरीत खड़े दिखाई देते हैं। महात्मा गाँधी के अथक प्रयास करने पर भी मौलिक व्यवस्था पर प्रहार नहीं कर पाए। उन्होंने शूद्र कल्याण हेतु अनेक प्रयास किए हैं। गाँधी जी ने इस व्यवस्था में क्रान्ति का प्रयास किया एवं ब्राह्मणों को पुनर्विचार के लिए विवश किया एवं शूद्रों को मंदिरों में प्रवेश के लिए उद्घोष किया। उन्होंने ब्राह्मणों से कहा कि शूद्रों के लिए भी मंदिरों के द्वार खोल दिए जाने चाहिए। इस विचार में दुविधा यह है कि, जिन मंदिरों से शूद्र—शोषण का जन्म हुआ, इन्हीं मंदिरों में शूद्रों को दिला कर शोषण मुक्त कैसे किया जा सकता है। यह समूल क्रांति को नहीं वरन एक मौलिक अर्थों में असफल प्रयास हुआ। युगांतरों से इन्हीं ब्राह्मणों व मंदिरों ने शूद्र को अपने स्वार्थ के लिए शोषित किया है, और गाँधी जी शूद्र को इन्ही के अधिकार क्षेत्र में वापिस भेजने में रुचि रखते हैं। यहाँ मौलिक प्रश्न है कि शूद्र मंदिर में प्रवेश क्यों करें व हरिजन क्यों कहलाएं। शूद्र को कह देना चाहिए कि न वह हिन्दू हैं, न मुस्लिम हैं, वह मात्र मनुष्य हैं और मनुष्य होना पर्याप्त है।

जब तक भारत के शूद्र अन्य वर्णों के समक्ष अधिकारों के लिए हाथ फैलाते रहेंगे, तब तक वर्ण व्यवस्था में कोई भी क्रांति असंभव है, क्योंकि अधिकार आवंटित करने वाला सदैव बड़ा होता है।

—निशांत सैनी

राजनीति विज्ञान, तृतीय वर्ष

## रोको मत आगे बढ़ने दो

रोक सको तो रोक लो अमर भूमि की 'दीप' को  
बाँध सको तो बाँध लो प्रखर सुनामी समीप जो  
यूँ ही ना शोला उगले करते उन वीर सपूतों की आन ये  
रोको मत आगे बढ़ने दो हम माँ भारती के प्राण हैं ।

जिसे रोक सके ना क्या रोकोगे?  
लाख प्रयत्न कर ली हैवानों ने  
उन वीर सपूतों ने चंडी धर ली  
माँ भारती के परिणय—प्राण पर ।

कितनी भी कर लो जद्दोजहद  
ये वीर सत्य की गाथा थी  
गंगा—जमुना संस्कृति को इनमें  
परिणय—प्रणय बनाने की आशा थी ।

ये वे तरु की जड़ें थीं  
जिसे तूफान भी ना डिगा सका  
हर आँधी हवा में हवा हुई  
जो जड़ को जरा ना हिला सकी ।

गंगा—जमुना की निर्मल धारा को  
कौन दूषित करना चाहेगा?  
गर पता चले तो उस कायर को  
धरा धरा पर धरा पाएगा ।

उन वीर सपूतों कि अभिलाषा थी  
अभिमान—ए—तिरंगा झुके न कभी  
कुछ लोग कहते फिरते की  
हम विश्वगुरु ना बन सकते कभी ।

पर मैं कहता हूँ ये संकल्पित मन  
विश्वास और शक्ति की नींव पर अड़ा  
इस भारतभूमि के नबल किशोर की  
विश्वगुरु बनने की दृढ़ इच्छा है ।

जो टकराए आर्य की भूमि से  
पहले अहिंसा का पाठ पढ़ाना है  
न माने अगर प्यार की बातों से  
उसे शीश नवाकर यहाँ से जाना है ।

ये गौरव है माँ भारती की भूमि का  
जो एकता की नींव पर है खड़ा  
जो झुटलाए इस पावस—सी धरा को  
सामने है उसके चट्टान खड़ा ।

जो विघ्न—विकराल सामने हो खड़ा  
उसे पता नहीं कि वो मारुत रहा  
जो विघ्न बना ऋषभ रथ के पथ पर  
ऋषभ ने उसे चकनाचूर किया ।

ये समीर, अग्नि, चक्रवात, आगे हमारे कुछ भी नहीं  
हम तो आर्यभूमि के सच्चे सपूत हैं  
रोको मत आगे बढ़ने दो  
हम आजादी के तूफान हैं ।

— दीप आनंद





## महात्मा गाँधी और राजनीति

महात्मा गाँधी जिन्हें पूरा देश राष्ट्रपिता के नाम से जानता है, उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। गाँधी केवल एक व्यक्ति ही नहीं है बल्कि एक विचारधारा है। गाँधी को अहिंसा का पुजारी कहा जाता है। गाँधी राजनीति में हिंसा के प्रयोग का विरोध करते हैं। गाँधी ने अपने विचारों को किसी एक विषय तक सीमित नहीं रखा है, बल्कि गाँधी जी ने अपने विचार विभिन्न विषयों पर दिए हैं। गाँधी ने अहिंसा, स्वराज, शक्तियों के पृथक्कीकरण (विकेंद्रीकरण), स्थानीय स्वायत्त शासन तथा पंचायती राज का समर्थन किया है। गाँधी अपने इन विचारों द्वारा एक आदर्श राज्य का निर्माण करना चाहते थे।

गाँधी धर्म-प्रधान अथवा धर्मविहीन राज्य के बजाय, धर्म निरपेक्ष राज्य के पक्षधर थे। वह नहीं चाहते थे कि राज्य किसी धर्म विशेष को राज्य धर्म का स्थान प्रदान कर, अन्य धर्मों की उपेक्षा करे या उनके साथ भेदभाव करे। गाँधी एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की कल्पना करते हैं जिसमें सर्वधर्म-समभाव होगा, जिसमें सभी धर्मों और इनके अनुयायियों को समान दर्जा प्राप्त होगा। गाँधी की धर्मनिरपेक्षता का सिद्धांत पश्चिमी देशों की अवधारणा से भिन्न था।

गाँधी जी शक्तियों के विकेंद्रीकरण का समर्थन करते थे, तथा स्थानीय प्रशासन एवं पंचायती व्यवस्था को बहुत अधिक महत्व देते थे। गाँधी जी के अनुसार स्थानीय प्रशासन या पंचायती राज संस्था स्वयं में स्वायत्त तथा आत्मनिर्भर होता है। गाँधी शक्ति को एक व्यक्ति के हाथों में केंद्रित होने नहीं देना चाहते थे।

अतः हम देखते भी हैं कि भारतीय संविधान में पंचायती राज या स्थानीय शासन को नीति निर्देशक तत्वों में रखा गया तथा 1991 में 73वाँ तथा 74वाँ संविधान संशोधन द्वारा स्थानीय शासन को संवैधानिक दर्जा प्रदान कर दिया गया।

गाँधी जी अपने सत्य एवं अहिंसा के विचारों के माध्यम द्वारा एक आदर्श समाज की अवधारणा स्थापित करते थे। गाँधी के अनुसार सत्य तथा अहिंसा के मार्ग को अपनाकर आदर्श राज्य या राम राज्य को प्राप्त कर सकते हैं। अहिंसा के पुजारी होने के कारण उन्हें राज्य के बाध्यकारी स्वरूप से घृणा थी। उनका विश्वास था कि रामराज्य (आदर्श राज्य) में जनता की नैतिक शक्ति का प्रभुत्व होगा और हिंसा की एक व्यवस्था के रूप में राज्य का विनाश हो जाएगा किंतु वे राज्य की शक्ति को तत्काल समाप्त करने के पक्ष में नहीं थे। गाँधी के आदर्श समाज या राम राज्य में भी न्यायालय, रेल, उद्योग, सड़कें आदि होंगी, सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध होंगी, इस राज्य में किसी भी वर्ग का शोषण नहीं होगा, सभी वर्गों को समान अधिकार प्राप्त होंगे। इस रामराज्य में हिंसा का कोई स्थान नहीं होगा।

गाँधी जी राजनीति का आध्यात्मीकरण करना चाहते थे। वह राजनीति में उच्च नैतिकता को स्थापित करना चाहते थे। आज की राजनीति में हम देखते हैं कि मूल्यों तथा नैतिकता का कोई महत्व नहीं रह गया है। ऐसी वर्तमान स्थिति में गाँधी के राजनीति में नैतिकता के इस्तेमाल का महत्व बढ़ जाता है। गाँधी जी पश्चिमी राजनीति प्रणाली को भारत में अपनाने का समर्थन नहीं करते हैं। उनके अनुसार उत्तर प्रबुद्धवाद (Postenlightenment) के बाद पश्चिमी देशों में जो राजनैतिक व्यवस्था आई वह शोषण के लिए इस्तेमाल की जाने लगी। अतः गाँधी जी ने भारत में पारम्परिक व्यवस्था को अपनाने का समर्थन किया है जैसे कि पंचायती राज व्यवस्था।

गाँधी के उपरोक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि गाँधी जी एक अलग प्रकार की राजनैतिक व्यवस्था, राजनीति तथा नैतिकता को एक साथ देखते हैं। वह ऐसा रामराज्य स्थापित करना चाहते थे, जिसमें किसी भी व्यक्ति का शोषण न हो, सभी व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत करें। वह राज्य द्वारा की जाने वाली हिंसा को समाप्त करना चाहते थे। उनके रामराज्य द्वारा राज्य का अस्तित्व समाप्त होता हुआ प्रतीत होता है। इनके राज्य संबंधी इन विचारों से लगता है कि

वह एक आदर्शवादी अराजकवादी हैं। वह राजनीतिक शक्ति को एक व्यक्ति के हाथों में केंद्रित नहीं होने देना चाहते थे। अगर हम गाँधी जी के विचारों को आज की वर्तमान स्थिति में देखें तो यह विचार आज की राजनीति को बदलने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। ये विचार आज की राजनीति में व्याप्त हिंसा, भ्रष्टाचार आदि को समाप्त करने में सहायक हो सकते हैं।

**अब्दुल कलीम**

बी. ए. राजनैतिक विज्ञान तृतीय वर्ष

## गाँधीजी का व्यक्तित्व

गांधीजी जिनका नाम न केवल भारत में प्रचलित है बल्कि विदेशों में भी गांधी जी को उतना ही सम्मान मिला जितना भारत के अंतर्गत मिला स्वतंत्रता संग्राम में अपना पूर्ण योगदान देते हुए भारतवर्ष की एक नई नींव रखते हुए अपने विचारों कर्मों से सभी व्यक्तियों को आसानी से लुभाने वाले ऐसे व्यक्ति थे गांधी। गांधी जी भावुकता मिश्रित ऐसे कार्यक्रमों को प्रस्तुत करते थे जिससे वह समाज के सभी वर्गों को प्रभावित कर सकें स्वतंत्रता संग्राम के अंतर्गत कई मुख्य नामों का योग है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण व प्रभावशाली नाम हमें सदैव गांधीजी का मिलता है समाज के सभी वर्गों के साथ मिलकर चलना सदैव एकता का भाव रखना कर्तव्य का पालन करना ऐसी और अतिरिक्त बातें हैं जो हमें गांधी जी द्वारा सीखने को मिलती हैं समाज के साथ जोड़कर सफलता की राह में वह आजादी के भाव को सदैव अपने दिल में रख कर गांधी जी द्वारा विभिन्न आंदोलन का उदय हुआ जिसमें से कई आंदोलन ऐसे भी रहे जिनको सफलता मिली वह कई आंदोलन अपने चरम तक पहुंचे गांधी जी उस दौर में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उभरे जो सदैव अहिंसा पर बल देते थे एवं अहिंसा के बल पर ही सभी गतिविधियां करते थे 'खिलाफत आंदोलन' 'चंपारण आंदोलन' से लेकर 'भारत छोड़ो आंदोलन' तक गांधी जी के नेतृत्व में हुए अंग्रेजी शासन की नींव हिला देने वाला एकमात्र ऐसे व्यक्ति गांधीजी रहे गांधी जी द्वारा रचित पुस्तक 'हिंद स्वराज' एक ऐसी पुस्तक है जिसको पढ़ कर सभी व्यक्ति की जीवन शैली में भरपूर परिवर्तन आया उनकी जीवनशैली आज भी आज के युग को उतना ही प्रभावित करती है जितना उस समय उस दौर को तो करती थी 'हिंद स्वराज' के अंतर्गत गांधीजी ने स्वराज की परिभाषा को दर्शाया ही नहीं बल्कि यह भी बताया कि राजनीति के अंतर्गत किस प्रकार औद्योगिक क्षेत्र कृषि क्षेत्र सामाजिक क्षेत्र सांस्कृतिक क्षेत्र में किस प्रकार प्रभावशाली परिवर्तन आ सकता है। एक सर्वश्रेष्ठ सम्मानजनक व्यक्ति के रूप में उभरे गांधी जी 19वीं शताब्दी के अंतर्गत भारतवर्ष में नई राह की ओर को समाज को लेकर चलें एक नई सोच उमंग जोश रुतबा प्रभाव जो उस समय समाज के अंतर्गत था गांधी जी द्वारा समाज के व्यक्ति को ऐसा सामाजिक नेता मिला जो सफलता की लड़ाई में व्यक्तियों को आगे लेकर बढ़ा व सफलता की चोटी पर अपने लक्ष्य को समानता पूर्वक प्राप्त किया। 19वीं शताब्दी में जब गांधी जी साउथ अफ्रीका से भारत लौटे तब देश में हिंदू मुस्लिम में एकता थी परंतु अंग्रेजी शासन काल में एकता को तोड़ा गया और शासन को कायम रखा इस स्थिति में भी गांधीजी द्वारा एकता को स्थापित करने में सक्षम रहे वह सदैव धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की नींव रखी।।

एक देश का भाव हो, एक देश का साथ हो  
मिलेगी सफलता एक दिन, हर दिल में ये बात हो।।

**शाहरुख खान**  
हिंदी, प्रथम वर्ष

## गाँधी के विचार और बदलता समाज

**Live as if you were to die tomorrow.  
Learn as if you were to live forever.**

महात्मा गांधी द्वारा दिए गए इस विचार से शिक्षा के महत्व को बहुत ही सरलता से समझा जा सकता है। गांधी ने शिक्षा को बहुत अधिक महत्व दिया है। गांधी का विचार है कि केवल शिक्षा के द्वारा ही मानव का सम्पूर्ण विकास हो सकता है। केवल शिक्षा के द्वारा ही मानव के मस्तिष्क शरीर और आत्मा का विकास होता है। शिक्षा का प्रमुख और प्राथमिक उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह यह सिखाए कि अच्छे और बुरे में क्या अंतर है? अगर व्यक्ति को यह ज्ञात हो जाए कि क्या सही है और क्या गलत, तो यह व्यक्ति और समाज दोनों के हित में होगा। शिक्षा तक सभी लोगों की पहुंच होनी चाहिए, चाहे वह व्यक्ति गरीब हो या फिर अमीर, सभी को शिक्षा मिलनी चाहिए। शिक्षा पर खर्च किया जाता है, तब वह समाज को उस खर्च का दस गुना या उससे भी अधिक लाभ पहुंचाती है और इससे देश के लोगों के साथ साथ समाज और देश का भी कल्याण और प्रगति होती है। शिक्षा को केवल धन अर्जन और व्यवसाय तक संकुचित करना कदापि उचित नहीं है, यह वास्तविक शिक्षा नहीं है। अमीर और गरीब दोनों को एक समान शिक्षा मिलनी चाहिए, इसमें कोई भी भेदभाव नहीं होना चाहिए। गांधीजी का विचार था कि पुरुषों और महिलाओं के बीच शिक्षा को लेकर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा के लिए विशेष सुविधाओं का प्रबंध भी करना चाहिए। गांधी जी ने शिक्षा को संपूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण और आवश्यक समझा।

### गांधीजी के विचार और वर्तमान समय

वास्तविक शिक्षा केवल तथ्यों के ज्ञान तक ही सीमित नहीं है यह उससे भी कुछ अधिक है और मानव के मस्तिष्क, शरीर और आत्मा के विकास से संबंधित है। लेकिन हम वर्तमान में देखते हैं कि शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्ति तक सीमित किया जा रहा है और इसके फलस्वरूप मानव का संपूर्ण विकास नहीं हो पाता इसीलिए शिक्षा का यह तरीका सही नहीं है।

सरकार के द्वारा शिक्षा पर अधिक से अधिक व्यय किया जाना चाहिए। ताकि समाज के अधिकतम लोगों की शिक्षा सुविधाओं तक पहुंच हो सके और गरीब से गरीब लोगों को भी शिक्षा मिल सके। लेकिन हम वर्तमान में देखते हैं कि सरकार के द्वारा शिक्षा पर बहुत ही कम व्यय किया जाता है। जिस कारणवश भारत में शिक्षा संस्थानों, स्कूलों, कॉलेजों, और विश्वविद्यालयों की संख्या बहुत कम है। और वर्तमान में जितने भी शिक्षा संस्थान, स्कूल, कॉलेज, और विश्वविद्यालय उपस्थित हैं, उनमें शिक्षकों की संख्या बहुत कम है, शिक्षकों को उचित वेतन नहीं मिल पाता, और बहुत वर्षों तक कार्य करने के पश्चात भी संस्थान में शिक्षकों को स्थाई पद नहीं मिल पाता, और शिक्षकों की नौकरी पर संकट बना रहता है जिससे उन पर एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक दबाव होता है।

भारत में शिक्षा संस्थानों की बाहरी और आंतरिक संरचना की स्थिति बहुत दयनीय है। भारत में शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारे जाने की आवश्यकता है। और साथ ही साथ शिक्षा को कौशल आधारित किए जाने की भी आवश्यकता है।

सभी व्यक्तियों की शिक्षा तक पहुंच होनी चाहिए, चाहे वह अमीर हो या फिर गरीब। परंतु वर्तमान में हम देखते हैं कि शिक्षा दिन प्रतिदिन अत्यंत महंगी होती जा रही है और गरीब व्यक्ति की पहुंच से बहुत दूर होती जा रही है ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि जो व्यक्ति दो वक्त की रोटी नहीं जुटा सकता वह वर्तमान में इतनी महंगाई की हालत

में अपने परिवार का पालन पोषण कैसे करेगा और अपने बच्चों को शिक्षा किस प्रकार दिलवा पाएगा ?

समाज में स्त्रियों और पुरुषों दोनों को एक समान शिक्षा सुविधाएं मिलनी चाहिए। और आवश्यकता पड़ने पर महिलाओं के लिए शिक्षा के विशेष प्रबंध भी करने चाहिए। परंतु भारत में आज भी बहुत से ऐसे परिवार हैं जो लड़कियों की तुलना में लड़कों को शिक्षा के लिए अधिक प्रोत्साहन देते हैं और लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखते हैं और उन्हें किसी भी प्रकार के शिक्षा संस्थान में नहीं भेजते हैं। और बहुत से परिवार अपनी लड़कियों को बहुत ही कम स्तर तक पढ़ाते हैं।

लोगों द्वारा अपने बच्चों को मेहनत और मजदूरी का महत्व बताना और समझाना भी एक प्रकार की शिक्षा है। ताकि बच्चों को मेहनत और मजदूरी का महत्व ज्ञात हो सके। लेकिन जैसे-जैसे आज का समाज तीव्रता के साथ आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है, वैसे वैसे बच्चों और युवाओं में इंटरनेट और मोबाइल के प्रति झुकाव बढ़ता जा रहा है आज बहुत से बच्चे और युवा अपना अधिकतर समय मोबाइल और इंटरनेट चलाने में बिताते हैं और अपना समय व्यर्थ करते हैं और मेहनत करने में आनाकानी करते हैं।

### वर्तमान स्थिति और गांधी के विचारों की आवश्यकता

जिस प्रकार आज वर्तमान स्थिति है उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि आज के समाज को गांधी जी के विचारों को अपनाने की बहुत अधिक आवश्यकता है। भारत में शिक्षा की वर्तमान स्थिति को सुधारने के लिए, गांधी के शिक्षा संबंधी विचारों को अपनाने की आवश्यकता है। गांधी के विचारों को अपनाने के फलस्वरूप भारत में शिक्षा की गुणवत्ता और स्तर में सुधार होगा और साथ ही साथ भारत के लोगों और समाज का भी विकास होगा।

अनील

बी.ए. (ऑनर्स) सामाजिक विज्ञान  
तृतीय वर्ष

## वो कर गया आबाद हिन्दुस्तान को

वो कर गया आबाद हिन्दुस्तान को,  
सत्य, अहिंसा की तलवार से।  
हो पतन परदेसी का,  
स्वदेशी उसने अपनाया था।  
वो महात्मा लाखों दिलों में,  
अपना 'बापू' कहलाया था।  
'बापू' हमारे शान हैं,  
'भारत छोड़ो आंदोलन' का आगाज़,  
युद्ध की आखिरी ललकार थी ब्रिटिश साम्राज्य से,

थी लड़ाई तूफ़ान से,  
मगर जीता उसने आराम से,  
सत्य, अहिंसा, शांति का प्रतीक,  
'बापू' हमारे शान हैं।  
'बापू' हमारे शान हैं,  
जात-पात का भेद मिटाकर,  
'हरिजन' को अपनाया था,  
वो महात्मा लाखों दिलों में,  
अपना 'बापू' कहलाया था।

—असीम मुद्गल

बी.ए. हिस्ट्री, प्रथम वर्ष

## बापू आज भी जिंदा हैं

गांधी पहले से महात्मा नहीं थे। उन्हें महात्मा उनके सामाजिक कार्यों ने बनाया था। गांधी विदेश से भारत आने के बाद उन्होंने भारत की व्यवस्था देखी, जिससे वह बहुत आहत हुए। बीते वर्ष देश में ही नहीं बल्कि पूरे देश में महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ मनाई गई। महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा की राह पर हमें चलना सिखाया। जो बातें उस वक्त अहम थी, अगर उन्हीं बातों को हम पीछे मुड़कर देखें तो वह आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। जितनी पहले थी। आज हम सब गर्व से कहते हैं “बापू आज भी जिंदा हैं”।

गांधी केवल एक व्यक्ति नहीं है बल्कि गांधी एक विस्तृत विचार है। हमें अपने जीवन में गांधी जी के कदमों पर चलना चाहिए। गांधी एक पूर्ण व्यक्ति थे। चाहे मनुष्य हो या जानवर दोनों से एक समान प्रेम करते थे। उन्होंने देश की स्त्रियों को अपने हक के लिए लड़ना व बोलना सिखाया। गांधी एक वकील के साथ-साथ पत्रकार भी थे। गांधी जी की बेबाक पत्रकारिता को आज भी याद किया जाता है। गांधी में सभी रूप समाहित थे। महात्मा गांधी को महात्मा उनके कार्यों ने बनाया।

आज के संदर्भ में महात्मा गांधी जी को याद करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। क्योंकि जिस प्रकार देश के मौजूदा हालात हैं उन्हें किसी से छुपाया नहीं जा सकता। गांधी के समय में जो देश के हालात थे। उससे थोड़ा बहुत फर्क के साथ वही हाल आज भी मौजूद हैं।

**‘किसान:** गांधी जब 1914 में विदेश से भारत लौटे तो उनका सबसे पहला ध्यान किसानों पर गया। वह किसानों की हालत देख व्यथित थे। वे उन किसानों के लिए लड़े। लेकिन आज भी हमारे देश के किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हैं। वर्ष तो बदले लेकिन हमारी व्यवस्था नहीं बदल पाई। पहले सत्ता अंग्रेजों के हाथों में थी तब किसानों का दमन हुआ और अब सत्ता अपने लोगों के हाथों में है तब भी किसान सड़कों पर अपनी मांगों के लिए निकल रहे हैं। आज भी गांधी की लड़ाई किसानों के लिए जारी है।

**‘सामाजिक:** गांधी एक सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। उन्होंने भारतीय समाज को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को सामाजिक दृष्टि प्रदान की। लेकिन भारत का समाज तो आज भी वर्ग-भेद की हथकड़ी से जकड़ा हुआ है। हमें मानना होगा कानून व समानता का अधिकार केवल पुस्तकों तक ही सीमित है। गांधी के समाज में तो सब बराबर हैं। लेकिन असल जीवन में हमें यह बहुत कम देखने को मिलता है। गांधी सभी वर्ग को लेकर साथ चलना चाहते थे। यह कोशिश काफी हद तक पार भी हुई। लेकिन हमें इसे पूर्ण करने की जरूरत है।

**‘स्त्रियां:** आम तौर पर यह माना जाता है कि स्त्रियों का जीवन पुरुषों से अधिक कठिन होता है। लेकिन गांधी जी ने स्त्रियों को एक नई आवाज दी। जिसके चलते उन्होंने आजादी के समय पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाया। लेकिन स्थिति अभी भी साफ नहीं हो पाई क्योंकि आज भी महिलाएं घर से बाहर निकलने से डरती हैं। गांधी जी ने महिलाओं के लिए खुले समाज की कल्पना की थी लेकिन हमने उन्हें आगे आने से रोका। महिलाएं आज भी अपने हक व वजूद के लिए लड़ रही हैं। गांव तो बहुत दूर की बात है, शहरों में भी महिलाएं रात को निकलने से डरती हैं। अभी भी गांधी जी के सपनों को हम पूरी तरह पूरा नहीं कर सके हैं; हालांकि कुछ हद तक स्त्रियों की स्थिति में सुधार जरूर हुआ है।

**‘पर्यावरण:** गांधी जी स्वच्छता प्रेमी थे। लेकिन स्वच्छता हमारे जीवन से हमेशा से दूर रही। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सत्ता संभालने के बाद स्वच्छता पर अधिक ध्यान दिया गया। जिसके चलते उन्होंने घर-घर शौचालय बनवाए। पहले

लोग खुले में शौच करने को मजबूर थे। लेकिन अब गांधी जी के सपनों को साकार किया जा रहा है। गांधी जी के जीवन पर अगर हम एक नजर डालें तो वह पर्यावरण प्रेमी भी थे उन्होंने हमेशा पेड़ों को कटने से रोका। लेकिन आज ऐसा नहीं हो रहा है। भारत का ही नहीं बल्कि पूरे विश्व पर्यावरण के बिगड़ने से प्रभावित हो रहा है। जिससे आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है।

**‘अहिंसा:** गांधी जी ने अहिंसा का सिद्धांत हम सबको दिया। लेकिन इसका अभाव हमें देखने को सबसे ज्यादा मिलता है। आज देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में अहिंसा उत्पन्न हो चुकी है। यह हमें मानना होगा कि एक देश दूसरे देश के प्रति नफरत का भाग लिए चल रहा है। जो कि गलत है। हमें अहिंसा का साथ देना होगा और इस सिद्धांत के साथ चलना होगा। गांधी केवल एक व्यक्ति नहीं थे बल्कि अहिंसा के पुजारी भी थे।

महात्मा गांधी ने जिस भी मुद्दे को उठाया उसमें पूरे विश्व की भलाई नजर आती है। गांधी एक आदर्श व्यक्ति थे। उनके आदर्शों को हमें अपने जीवन में लाना होगा। गांधी जी के सपनों का भारत बनाने की जरूरत है। उनके दिखाए गए सत्य, अहिंसा के कदमों पर चलने की आवश्यकता है।

गांधी एक विचारक हैं उनका जीवन भर अतुलनीय कार्य रहा है। हमें उनके सपनों को साकार करना होगा, अन्यथा उनके विचार केवल विचार बन कर रह जाएंगे। आज हर व्यक्ति को उनकी बातें पढ़ने की जरूरत है। वही उनके विचार अपनाने की सख्त जरूरत है। इसके अलावा अगर हम देखें तो उनके बंदरों को शायद हम अपने जीवन से धूमिल कर चुके हैं। उनके तीनों बंदरों को अगर हम सब ने अपने जीवन में अपना लिया तो जरूर हम सब एक दिन एक अच्छे समाज का निर्माण कर पाएंगे। वहीं अगर हम देखें तो गांधी जी आज भी जिंदा हैं क्योंकि उनके विचार व बातें हमें समय-समय पर राह दिखाती हैं। हमें गांधी जी की शैली को अपने जीवन में अपनाना होगा। तभी हम उनके सपनों को पूरा कर सकते हैं।

**आशीष**

हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

## गांधी दर्शन सामाजिक एकता पर

वर्तमान सामाजिक परिदृश्य को देखते हुए एक सवाल मेरे दिमाग में उठा है कि क्या आज समाज को गांधी के धार्मिक विचारों तथा आदर्शों की जरूरत है? आज का समाज जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है और जिस प्रकार सांप्रदायिक कट्टरता ने समाज को बांटने का काम किया है ऐसे में गांधी के विचारों की प्रमुखता और ज्यादा बढ़ जाती है। इन परिस्थितियों को सुधारने के लिए उनके विचारों को स्पष्टता से समझना पड़ेगा और हमें ही उनके विचारों को समझ कर वास्तविकता में लाना पड़ेगा।

गांधी दर्शन सभी धर्मों तथा मजहबों को भी मानवता के संरक्षण संबंधी धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित नैतिकता का कर्तव्य मानते हैं। इसी आधार पर गांधी ने जिंदगी भर सामाजिक एकता को स्थापित करने तथा सांप्रदायिक कट्टरता से बचने के लिए लोगों को प्रेरित किया वह धर्मों को बुराई से निपटने के लिए भलाई का मार्ग प्रस्तुत करने वाला मार्ग समझाते हैं वे कहते हैं " जहां भलाई है वहां प्रेम है और जहां प्रेम है वहां सत्य है जहां सत्य है वहां अहिंसा है जहां अहिंसा है वहां सामाजिक एकता है। " गांधी ने सभी धर्मों को नैतिक कर्तव्य से जोड़कर देखा है वह धर्म और

नैतिकता को एक दूसरे का प्रेरक समझते हैं उन्होंने कहा धर्म नैतिकता के बिना धर्म उसी बालू के घर की तरह है जो हवा आने पर गिर जाएगा ।

गांधी ने सामाजिक एकता लाने के लिए विभिन्न धर्मों के बीच एकता लाने की कोशिश की और उन्होंने धर्म के वास्तविक अर्थ तथा महत्व से अवगत कराने का प्रयास किया । ताकि धर्म के असली अर्थ को लोग जानें तथा अज्ञानता का चश्मा उतार कर इस वास्तविकता से रूबरू हों ।

गांधी ने धर्म को राजनीति में शामिल होने तथा एक साथ चलने पर बल दिया और वह बताते हैं कि राजनीति में धर्म के मिलने से राजनीति को नैतिक शुद्धता प्राप्त होती है राजनीति में धर्म का मिलने का अर्थ पंथ कट्टरता नहीं है बल्कि यह शुद्धता की नैतिक श्रद्धा को बढ़ावा देती है ।

गांधी ने धार्मिक सांप्रदायिक कट्टरता के पीछे धार्मिक रूढ़िवादिता और धर्म की अज्ञानता का कारण बताया जिसके कारण विभिन्न धर्म में कट्टर भाव का कारण आपस में दंगे तथा बिखराव की स्थिति उत्पन्न करता है आज इसी तरह की प्रवृत्ति हमारे समाज में फैली हुई है इस स्थिति में गांधी के द्वारा सुझाए गए आदर्श और विचारों को सामाजिक वास्तविकता में उतारने की जरूरत है ।

वर्तमान समाज में भी रूढ़िवादिता सोच तथा धार्मिक अज्ञानता का प्रभाव इस कदर है कि इंसानियत और नैतिकता का कोई स्थान ही नहीं है समाज धार्मिक कट्टरता के कारण पतन की ओर अग्रसर हो रहा है इस तरह के सामाजिक माहौल में धर्म का गांधी दर्शन अपनाया जाए तो कुछ हद तक समाज की प्रवृत्ति को बदलने का यह दोबारा धार्मिक एकता को स्थापित करने का प्रयास होगा ।

एक तरफ गांधी विचारों को सामाजिक एकता के लिए विशेष महत्व दिया जाता है वहीं दूसरी तरफ उनको लेकर विरोधाभास भी है इस विरोधाभास का एक मूल कारण महात्मा गांधी के बारे में अज्ञानता भी है जो समाज में उनकी छवि को बार-बार धूमिल करती रहती है अगर आपको गांधी को लेकर विरोधाभास है तो उसके लिए गांधी को समझने तथा पढ़ने की तथा उनसे जुड़े ऐतिहासिक तत्वों को बारीकी से जानने की जरूरत है पर आज अज्ञानता के साथ हर एक इंसान सामाजिक तथ्यों को चलाने और अपने अनुसार बदलना चाहता है ।

गांधी का इसी तथ्य पर विशेष बल था हमें चीजों के वास्तविक अर्थ जानने और समझने के बाद ही अपनाना चाहिए और उससे ही आगे चलने की दिशा निर्धारित करनी चाहिए इसी कारण गांधी ने विभिन्न ग्रंथों को पढ़ा और उसके बाद उन्होंने अपने विचार को सामने रखा वेद, गीता, उपनिषद इत्यादि को पढ़ा और इसी के साथ विभिन्न धर्मों को गुरुग्रंथ, बौद्ध धर्म, जैन धर्म को भी पढ़ा । इसी आधार पर उन्होंने सभी धर्मों को समान बताया और अपने आपको राम का भक्त बताया उनके लिए राम अर्थ अलग था गांधी उन्हें मार्गदर्शक, कर्तव्य, दिशा निर्देशन देने वाला ईश्वर समझा ।

गांधी विचार और आदर्श का दर्शन समाज के लिए हमेशा उपयोगी और महत्वपूर्ण रहा है और रहेगा जो समाज को दिशा निर्धारण और गलती को सुधारने का काम करेगा ।

**करन वर्मा**

बी.ए. राजनैतिक शास्त्र, तृतीय वर्ष

## स्वतंत्रता संग्राम के भीष्म पितामह

महात्मा गाँधी जिनको स्वतंत्रता संग्राम का भीष्म पितामह कहा जाता है। आज वो कहीं गुम से हो गए हैं। आज हम उन्हें केवल 2 अक्टूबर के दिन ही याद करते हैं। जिस व्यक्ति ने देश को आज़ाद कराने में अपने प्राण त्याग दिये। आज वे किताबों की दुनिया में कहीं गुम से हो गए हैं। आज़ादी की लड़ाई तो गाँधी जी के आने के पहले से चल रही थी, लेकिन उस लड़ाई को जैसे बापू का इंतजार था। बापू के आने के बाद ही स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई ने जोर पकड़ा। बापू के आगमन के साथ ही भारतीयों में भी आज़ादी की आग लगी। गाँधी जी ने अपने विचारों को दूर-दूर तक फैला दिया था। वो गाँधी ही थे जिसने इतनी बड़ी लड़ाई को हिंसक रूप नहीं लेने दिया। गाँधी जी कहते थे—“हम आजादी लेंगे लेकिन हिंसक रूप से नहीं अहिंसक रूप से”। गाँधी जी से पहले भी कई स्वतंत्रता सेनानी थे। जिन्होंने भारत को आज़ादी दिलाने में योगदान दिया जैसे— सुभाष चंद्र बोस, लाला लाजपत राय, चंद्रशेखर आज़ाद आदि, लेकिन ये सभी उग्रवादी विचारधारा के थे। गाँधी जी का मानना था कि “देश तब तक आज़ाद नहीं होगा, जब तक इस देश की महिलाएँ सड़कों पर सुरक्षित नहीं होंगी” देखा जाए तो हम आज़ाद होकर भी आज़ाद नहीं हैं, क्योंकि आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी महिलाएँ सड़कों पर खुलेआम नहीं घूम सकती। भारत में महिलाओं के खिलाफ बलात्कार चौथा सबसे आम अपराध बन चुका है। 16 दिसंबर 2012 को निर्भया का बलात्कार हुआ था। जिसके दोषियों को अब तक सजा नहीं मिली। बापू का सपना आज भी अधूरा है क्योंकि जिस देश में नारी को पूजा जाता था, आज वो उसी देश के कुछ दरिंदों के हाथों बलात्कार जैसी घटना का शिकार हो रही हैं।

बापू के बिना हम कभी आज़ाद नहीं हो पाते। गाँधी जी के विचार इतने प्रभावशाली थे कि अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा भी उनके आदर्शों पर चलते हैं। गाँधी जी अपनी विचारधारा और इतने शांत व्यक्तित्व के कारण ही लोकप्रिय थे। चंपारण की लड़ाई में अगर गाँधी ना जुड़े होते तो शायद किसानों को अंग्रेजों के अत्याचार से निजात नहीं मिल पाता।

स्वच्छ भारत अभियान की नींव गाँधी जी ने ही रखी थी। बापू हमेशा अपने आस-पास की जगहों पर सफाई करते थे, लेकिन उनका सपना था “स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत” लेकिन वो सपना आज भी सपना ही है। विकास की अंधी दौड़ में हम स्वच्छता को भूल गए, बापू को भूल गए। अब बापू हमें 2 अक्टूबर को ही याद आते हैं। उससे पहले शायद हम उन्हें याद भी नहीं करते। लेकिन जब भी 2 अक्टूबर आता है, सब उनको फूल अर्पित करने राजघाट पहुंच जाते हैं। आज बापू की 150 वीं जयंती है क्या इस बार भी हम उन्हें याद करके भूल जाएं? अगर देश का हर व्यक्ति बापू के विचारों के साथ आगे बढ़े तो शायद इस देश की महिलाएँ खुद को सड़कों पर सुरक्षित महसूस करेंगी।

इस आधुनिक दुनिया के दो-दो आंदोलनकारी “नेल्सन मंडेला” और अमेरिकी अश्वेत “मार्टिन लूथर” ने गाँधी जी के आदर्श अपनाकर अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हुए हैं तो हम क्यों नहीं हो सकते।

अंत में मैं बस इतना कहना चाहूँगी कि गाँधी जी को केवल 2 अक्टूबर को याद ना करें बल्कि उनके बुने हुए कदमों पर चलने का प्रयास करें। “केवल हिंदुओं का देश नहीं है भारत यहाँ हर धर्म का व्यक्ति हर हवा, वर्षा, बूंद में समाया है यहाँ हिंदुत्व की राजनीति ना करें।”

**जिस दिन महिलाएँ रात को स्वतंत्र रूप से सड़कों पर चलने लगेंगी,  
उस दिन से हम कह सकते हैं, भारत ने स्वतंत्रता हासिल कर ली।।**

— महात्मा गाँधी



## महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई. में पोरबंदर, गुजरात में हुआ था। महात्मा गाँधी का हमारे देश की आज़ादी में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने हिंसा का मार्ग ना चुनकर अहिंसा का मार्ग चुना और अहिंसा के मार्ग से हिंदुस्तान के गरीबों को कई बंधनों से मुक्त कराया। उनकी माता धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं इसी कारण गाँधी जी में भी उनकी माता के गुण थे। वे पढ़ाई में साधारण छात्र थे, परन्तु जो भी पढ़ते थे वो बड़ी लगन से पढ़ते थे। उनके पिता राजकोट में दीवान थे। गांधी जी डॉक्टर बनना चाहते थे परन्तु उनके माता पिता चाहते थे कि वे नौकरी करें। मैट्रिक पास करने के बाद वे इंग्लैंड गए वहां एडवोकेट की पढ़ाई की। उसके बाद वे दक्षिण अफ्रीका गए और वहां कांग्रेस लीडर टीम की स्थापना की और उसकी सहायता से दक्षिण अफ्रीका में फंसे भारतीयों को आज़ाद कराया और उन्हें उनके अधिकार दिलाये।



गाँधी जी का एक ही नारा था " अहिंसा परमो धर्म : " अर्थात अहिंसा ही हमारा परम धर्म है। अहिंसा से हर जंग जीती जा सकती है। गाँधी जी ने कई आंदोलन चलाये जिसमें असहयोग आंदोलन, चिपको आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, नमक सत्याग्रह, चम्पारण सत्याग्रह।

गाँधी जी ने बिहार में दबे किसान मजदूरों को उनका हक दिलवाया उनके अथक प्रयासों से आज हम आजादी की ज़िन्दगी जी रहे हैं। गाँधी जी कोई कार्य करने से पहले खुद वह कार्य करते थे।

गाँधी जी के कुछ प्रेरक वचन थे :-

- 1) जो इंसान जैसा सोचता है वह वैसा ही बन जाता है।
- 2) कायर व्यक्ति कभी भी प्रेम नहीं कर सकता, प्रेम तो बहादुर व्यक्ति ही कर सकते हैं।
- 3) किसी देश या राज्य की उन्नति उसके जानवरों से कैसा व्यवहार किया जाता है से जानी जा सकती है।
- 4) स्वस्थ शरीर ही एक धन के बराबर है ना कि सोना और चांदी।
- 5) हमेशा सत्य एवं अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए।

गाँधी जी ने भारत को आजादी ही नहीं बल्कि यहाँ के लोगों को एकजुट रहना सिखाया और कहा कि सभी धर्म बराबर हैं।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि अगर कोई एक दूसरे को बुरा भला बोलता है तो वे हिंसा पर उतर आते हैं बल्कि हमें चाहिए कि हम हिंसा त्याग कर प्रेमपूर्वक रहें जो गाँधी जी का सपना था। और हमें गाँधी जी के गुण एवं उनके विचारों से बहुत कुछ सीखना चाहिए तभी हम एक सफल व्यक्ति के रूप में उभरेंगे।

शिवम् कुमार सागर

बीएससी (ऑनर्स) माइक्रोबायोलॉजी, तृतीय वर्ष

## सुरक्षित समाज के बिना अधूरी हैं महिलाएं

भारत में महिलाओं को देवी का रूप माना और कहा जाता है। जब हम महिलाओं की बात करते हैं तो हमारे देश में महिलाओं की स्थिति बहुत धुंधली नज़र आती है। किसी भी देश की स्थिति जानने के लिए उस देश की महिलाओं की स्थिति ज्ञात करके उस देश की स्थिति मापी जा सकती है। बदलते समय के साथ-साथ महिलाओं की भी स्थिति बदलती रहती है। लेकिन इस वक़्त जहाँ महिलाएँ अपने हुनर के पंखों से आसमान में उड़ान भर रही हैं ठीक उसी वक़्त देश की सड़कों पर महिलाएँ सुरक्षित नहीं हैं।

महिलाओं के बिना यह संसार वीरान है। आज भी महिलाएं हाशिए पर पड़ी हुई हैं। पितृसत्ता समाज उन्हें दोगुना दर्जे का समझता है। यह दुर्भाग्य ही कहा जाएगा आजादी से पहले भी उन्हें अपने जीवन में संघर्ष, क्रूर व्यवहार सहना पड़ता था और आज भी वो अपने संघर्षमय जीवन जीने को मजबूर हैं। यह स्थिति आज से ऐसी नहीं है बल्कि उन्हें वर्षों से पीड़ित किया जा रहा है। जो देश व समाज अपने आपको सर्वोच्च कहता और विश्व में अपना लोहा मनवाता है वहाँ आज भी महिलाएं नरक जैसा जीवन जीने को मजबूर हैं। न जाने कितनी ही महिलाएं ऐसी हैं जिन्होंने अपने घर की चार दीवारी या फिर घर के आंगन तक पार नहीं किया है। उनके लिए उनका आंगन ही पूरा संसार है। कोई महिला अगर घर से बहार कदम रखती है तो उसे गलत समझा जाता है।

हालांकि समाज में अब थोड़ा फर्क आया जरूर है लेकिन उतनी वृद्धि नहीं हो पाई है या हमारे पुरुषों ने उन्हें वो दर्जा नहीं दिया है। शहर की महिलाएं घरों से अब जरूर बाहर कदम रख रही हैं लेकिन उनकी सीमा शाम ढलने तक ही विराजमान है। गौरतलब है कि हमारे समाज ने उन्हें अभी तक अपनी परम्पराओं की बेड़ियों में कस रखा है। महिलाओं का शोषण कहाँ नहीं होता घर से शुरू होता है और समाज के साथ निरंतर चलता है और उन्हें बंदिशों में बाँध देता है।

आलम यह है कि हमारे संसद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटें तक आरक्षित नहीं हैं। लेकिन आज भी देखा जाए तो इस वक़्त या पहले के वर्षों से तुलना करें तो कभी पूरी नहीं हुई। आज भी हमारे यहाँ महिलाओं के चेहरा के दम पर चुनाव लड़ा जाता है लेकिन उनके पीछे की वजह कोई पुरुष ही होता है। हमें मानना होगा महिलाएं आज भी संघर्ष कर रही हैं। 'जर्नल ऑफ़ इकोनॉमिक बिहेवियर एण्ड आर्गेनाइजेशन में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार जिस देश की सरकारों में महिलाओं की स्थिति अधिक होती है उस देश में भ्रष्टाचार कम होता है।'

हाल ही में जारी हुई वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (WEF) की रिपोर्ट बताती है कि महिलाओं की स्वास्थ्य और आर्थिक भागीदारी बेहद खराब स्तर पर है। इससे स्त्री-पुरुष असमानता में भारत एक साल पहले के मुकाबले चार पायदान नीचे लुढ़ककर 112 स्थान पर पहुँच गया है। यानी कि पिछले वर्ष भारत 108 नम्बर पर था। इस रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि स्त्री-पुरुष असमानता दूर करने के लिए 108 साल लगेंगे। वहीं स्त्री-पुरुष के बीच आर्थिक गहराई को कम करने में 257 वर्ष लगेंगे।

महिलाएं आज भी पूरी तरह से आजाद नहीं हैं। जबकि हमारे लिए और एक अच्छे समाज के लिए ठीक नहीं है। क्यों अभी तक उन्हें बराबर का दर्जा प्राप्त नहीं हो सका? देश को आजाद हुए 70 बरस से ज्यादा हो गए हैं लेकिन स्थिति जस की तस बनी हुई है।

रोजाना हमारे देश में महिलाओं के साथ बलात्कार व सामूहिक बलात्कार की घटनाएं सामने आती रहती हैं। शायद हमारा समाज अब इतना मजबूत हो चुका है कि उसे अब इन खबरों से न तो ठेस पहुंचती है न ही उन्हें इससे कोई फर्क पड़ता है। यह घटनाएं रोजाना हमारे अखबारों या समाचार चैनलों में पटी रहती हैं। अब हमारे लिए यह खबरें रूटीन की खबर बन चुकी है। कभी 8 महीने की बच्ची की खबर तो कभी बुजुर्ग महिला के साथ रेप की खबर आती रहती है। वहीं अभी हाल ही में हैदराबाद में घटी घटना ने पूरे देश को हिला कर रख दिया। हमारा समाज इतना क्रूर बन चुका है कि उसे अब कानून से डर नहीं लगता, क्योंकि इसके पीछे बड़ी वजह यह है कि उसे पता है कानून व्यवस्था बहुत ही लाचार है और धीमी है, जिसकी वजह से वो बच सकता है। बड़े-बड़े नेता, मंत्री इन दुष्कर्म में शामिल हैं। महिलाओं को देह व्यापार में डाला जाता है।

उच्च शिक्षा में भी महिलाओं की स्थिति कुछ खास नहीं है। महिलाओं की दुर्दशा आज भी निंदनीय है। अगर हमें अपने समाज को आगे बढ़ाना है तो महिलाओं को साथ लेकर चलना होगा। उन्हें आजाद करना होगा। महिलाओं को सुरक्षित समाज देने की बहुत जरूरत है। महिलाएं तभी सक्षम हो पाएंगी जब वह अपने आपको सुरक्षित महसूस करें। पुरुषों की मानसिकता बदलने की भी जरूरत है।

भले ही हम कागजी तौर पर कितना ही कह लें कि महिलाएं पुरुषों के समान हैं लेकिन हमें यह भी मानना होगा व्यवहारी तौर पर नहीं हैं। हवा हवाई किले न बनाकर असल जीवन में समानता लानी होगी। वहीं सरकार को भी अपनी जवाबदेही तय करनी होगी। अन्यथा यह व्यवस्था निरन्तर चलती रहेगी और महिलाएं पीछे होती रहेंगी।

**नंदिनी लवानियाँ**

बी.ए. राजनीति विज्ञान (प्रथम वर्ष)

## गांधी: धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिकता

महात्मा गांधी का चरित्र भारतीय स्वतंत्रता इतिहास में अनेक कार्यों के लिए विख्यात है गांधी को केवल स्वतंत्रता या भारतीय आजादी के लिए महत्व नहीं दिया जाता बल्कि गांधी द्वारा भारत में सांप्रदायिकता तथा धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के लिए किए गए काम के लिए भी उन्हें जाना जाता है। गांधी जब दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे तो उन्होंने भारत में दो महत्वपूर्ण धार्मिक संप्रदायों (हिंदू और मुस्लिम) के बीच एकता कायम करने की कोशिश की। गांधी के लिए दो चीजें काफी महत्वपूर्ण थी: पहली हिंदू और मुस्लिम के बीच एकता और दूसरी सत्याग्रह। हालांकि गांधी के लिए इन दोनों में से सत्याग्रह काफी महत्वपूर्ण था क्योंकि उनका मानना था कि सत्याग्रह से समाज के किसी भी लक्ष्य को हासिल किया जा सकता था। गांधी के द्वारा सत्याग्रह आंदोलन तथा सविनय अवज्ञा के अंतर्गत दोनों संप्रदायों के बीच एकता कायम करने की कोशिश की गई और गांधीजी ने अपने आंदोलनों को खिलाफत आंदोलन के साथ जोड़ा जिससे समाज में धार्मिकता के सूत्र को मजबूती मिली। लेकिन गांधी के इस धार्मिकता के एकजुट के सिद्धांत को खत्म किया जब 1947 में भारत और पाकिस्तान का बंटवारा किया गया धर्मनिरपेक्षता पर गांधी काफी संवेदनशील रहे हैं उन्होंने भारत में धार्मिक समुदायों के बीच राजनीतिक सत्ता को हमेशा जोड़कर देखा। गांधी के अनुसार समाज में धर्म और राजनीतिक सत्ता या राजनीति अलग नहीं चल सकते थे यह हमेशा साथ रहते आए हैं और साथ ही रहेंगे।

गांधी की हत्या को भी सांप्रदायिकता के साथ देखा जा सकता है क्योंकि गांधी ने हमेशा से दोनों धार्मिक समुदायों के विकास तथा अल्पसंख्यकों के पक्ष में कार्य किए हैं ऐसे में हिंदुत्व की अलग परिभाषा देने वाले लोगों को गांधी के किए गए कामों से गांधी को मुस्लिम पक्षधर की संज्ञा दी वर्तमान में गांधीजी के विचार को अनेक सत्ताधारी दल अपने मनमाने ढंग से अपनाते हैं गांधी अब केवल किताबों में तथा नैतिक मूल्य में ही दिखाई देते हैं अभ्यास में गांधी की छवि धूमिल होते चली जा रही है। गांधी जो समाज की कथा धार्मिक एकता पर बल देते थे क्योंकि उन्हें भारतीय स्वतंत्रता पृथक रहकर नहीं बल्कि दोनों समुदायों के एकजुट प्रयास तथा संघर्ष करने पर प्रतीत होती थी। गांधी के इन सभी विचारों पर ऐसा नहीं है कि सब सहमत हों गांधी के साथ अपने विचारों को जोड़ने वाले या उनके आदर्शों पर चलने वाले नेहरू भी उनसे अलग विचार रखते थे वर्तमान में गांधी के सभी धार्मिक सिद्धांतों तथा व्यवहारों को खत्म करने का प्रयास किया जाता रहा है। महात्मा गांधी स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान निरन्तर साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ते रहे। वे साम्प्रदायिकता के घातक परिणामों को जानते थे। उनका मानना था कि यदि हिन्दुओं और मुसलमानों में आपसी झगड़ा रहा, वे एक दूसरे पर अविश्वास और संदेह करते रहे तो न तो भारत को कभी गुलामी से ही मुक्ति मिल पाएगी और न ही भारत एक सुखी और समृद्ध समाज बन पाएगा, इसलिए वे हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता के सूत्र हमेशा खोजते रहे। हिन्दू मुस्लिम एकता की चिन्ता उनके चिन्तन का जरूरी पहलू थी। महात्मा गांधी स्वयं एक धार्मिक व्यक्ति थे जो स्वयं को सनातनी हिन्दू कहते थे, जनेऊ धरण करते थे। प्रार्थना सभाएं करते थे, रघुपति राघव राजा राम की आरती गाते थे। हिन्दू रिवाजों—मान्यताओं में विश्वास जताते थे, ईश्वर में विश्वास करते थे, हिन्दू—ग्रन्थों का आदर करते थे। लेकिन महात्मा गांधी साम्प्रदायिक नहीं थे, सभी धर्मों का और उनके मानने वालों का आदर करते थे। धर्म—निरपेक्ष राज्य के पक्षे समर्थक थे, धर्म को व्यक्ति का निजी मामला मानते थे। उन्होंने धर्म के आधार पर राष्ट्र बनाने का विरोध किया। साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए गांधी जी ने अपनी जान तक दे दी। सांप्रदायिकता आधुनिक परिघटना है, अंग्रेजों ने भारत की सत्ता संभाली तो राजनीति और आर्थिक व्यवस्था प्रतिस्पर्धात्मक हो गई, जिसके कारण दोनों संप्रदायों द्वारा एक दूसरे से उच्च स्थान प्राप्त करने के कारण सांप्रदायिकता का जन्म हुआ। अंग्रेजों ने दोनों संप्रदायों के बीच में फूट डालकर अपनी सत्ता को मजबूत किया। गांधीजी का मानना था कि, साम्प्रदायिकता का धर्म से गहरा ताल्लुक होते हुए भी धर्म उसकी उत्पत्ति का मूल कारण नहीं है, हां धर्म का सहारा जरूर लिया जाता है। चूंकि धर्म से लोगों का भावनात्मक लगाव होता है, लोगों की आस्था जुड़ी होती है इसलिए इसका सहारा लेकर उनको आसानी से एकत्रित किया जा सकता है। लोगों की आस्था व विश्वास को साम्प्रदायिकता में बदलकर, दूसरे धर्म के लोगों के खिलाफ प्रयोग करके स्वार्थी—साम्प्रदायिक लोग अपने स्वार्थ की सिद्धि कर लेते हैं। धर्मनिरपेक्षता असल में समाज की इस बहुलतापूर्ण पहचान की स्वीकृति है, जो अलग—अलग धार्मिक विश्वास रखने वाले, अलग—अलग भाषाएं बोलने वाले समुदायों व अलग—अलग सामाजिक आचार—व्यवहार को रेखांकित करती है और इन बहुलताओं, विविधताओं व भिन्नताओं के सह—अस्तित्व को स्वीकार करती है, जिसमें परस्पर सहिष्णुता का भाव विद्यमान हैं। सांस्कृतिक बहुलता वाले देशों को धर्मनिरपेक्षता ही एकजुट रख सकती है। किसी भी राष्ट्र की शांति व एकता के लिए जरूरी है कि उसमें रहने वाले सभी समुदायों व वर्गों को विकास के उचित अवसर मिलें व सबमें बराबरी की भावना विकसित हो। धर्म, जाति, भाषा या अन्य किसी कारण से किसी के साथ भेदभाव करना राष्ट्रीय हितों के प्रतिकूल तो है ही मानवीय गरिमा के प्रतिकूल भी है। गांधी जी पूरे जीवन धर्मनिरपेक्ष राज्य के लिए और लोगों में धार्मिक सहिष्णुता व साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए संघर्षरत रहे। उनका जीवन आदर्शों व विचारों को अपनाकर भारत को साम्प्रदायिक वैमनस्य के विष से मुक्ति मिल सकती है।

**सद्दाम हुसैन**  
राजनीति विज्ञान, तृतीय वर्ष

## भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में गांधीजी का योगदान

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का योगदान अविस्मरणीय है। महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। वे स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं अध्यात्मिक नेता थे। महात्मा गांधी ने अहिंसा की विचारधारा का पालन किया जिसके द्वारा उन्होंने भारत को आजादी दिला कर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता के प्रति आंदोलन के लिए प्रेरित किया। वे भारत के गरीब किसानों व मजदूरों के साथ मिलकर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध कई छोटे बड़े आंदोलन शुरू किए, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम व भारतीय समाज की दिशा बदलने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

सबसे पहले गांधीजी ने प्रवासी वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु सत्याग्रह करना शुरू किया। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी ने भारतीय मजदूरों व अन्य लोगों के साथ मिलकर वहां के सरकार की नीतियों (काले-गोरे में भेदभाव) के विरुद्ध आवाज उठाई इस लड़ाई में गांधीजी ने राजनीतिक हथियार के रूप में सत्याग्रह व अहिंसा का प्रयोग किया। दक्षिण अफ्रीका में दो दशक रहने के बाद जनवरी 1915 में गांधीजी भारत वापस लौटे। जब महात्मा गांधी भारत आए तो उस समय का भारत 1893 में जब वे यहां से गए थे तब के समय से अपेक्षाकृत भिन्न था। हालांकि यह अभी भी एक ब्रिटिश उपनिवेश था लेकिन अब यह राजनीतिक दृष्टि से अधिक सक्रिय हो गया था।

### चम्पारण सत्याग्रह:

भारत के लोगों ने गांधी जी के तौर-तरीकों का पहला परीक्षण 1917 ई. में बिहार के चंपारण सत्याग्रह में देखा। चंपारण में ब्रिटिश सरकार व उनके पिट्टू जमींदारों द्वारा वहां के किसानों से खदान की बजाए नील एवं अन्य नगदी फसलों की खेती करने के लिए मजबूर किया जा रहा था। चंपारण के एक किसान राजकुमार शुक्ल ने दिसंबर 1916 में लखनऊ में हुई कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में अंग्रेज नील उत्पादकों द्वारा किए जाने वाले दुर्यवहार से अवगत कराया। जब गांधीजी पहली बार चंपारण गए तो वहां के जिला कमिश्नर ने उन्हें चंपारण छोड़ने का आदेश दिया। किंतु गांधी जी ने जिला कमिश्नर के इस आदेश को मानने से इनकार कर दिया। उसके बाद गांधी जी वहाँ के किसानों की समस्या सुनी तथा उसे लिखित रूप में ब्रिटिश सरकार के सामने पेश की। ब्रिटिश सरकार इन विपूर्ण तथ्यों को नकारने में असमर्थ थी। गांधीजी उस समय के जमींदारों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन और हड़ताल किए तथा उन्होंने कहा कि जो किसानों से लगान लिया गया है, उसका 50% वापस कर दें। तब उनके समर्थन में हजारों की संख्या में अन्य किसान भी एकत्रित हो गए। अंततः ब्रिटिश सरकार को उनकी मांग पूरी करनी पड़ी, परंतु उन्होंने लगान का केवल 25% ही वापस किया। उस घटना से अंग्रेजों के साथ लगान देने की परंपरा खत्म हो गया और किसानों का डर भी समाप्त हो गया। गांधी जी के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध चलाया जाने वाला यह पहला सत्याग्रह था।

चंपारण सत्याग्रह की सफलता के बाद गांधी जी का अगला प्रयोग 1918 में अहमदाबाद की एक "कॉटन टेक्सटाइल मिल" में किया गया था। यहां पर गांधीजी ने मजदूरों के साथ मिलकर उनके मजदूरी बढ़ाने के सिलसिले में मिल मालिकों के विरुद्ध आवाज उठाई। अहमदाबाद टेक्सटाइल मिल में "प्लेग बोनस" को लेकर विवाद था। 1917 में यहां के मिल मालिकों ने मजदूरों को दिया जा रहा प्लेग बोनस बंद करने का निर्णय लिया था फरवरी-मार्च 1918 में गांधी जी ने मिल मालिकों और मजदूरों के बीच मध्यस्थता करना प्रारंभ किया। मिल मालिकों की नामंजूरी पर गांधीजी ने

मजदूरों को हड़ताल पर जाने को कहा और घोषणा की कि उन्हें 29% बोनस मिलना चाहिए।

इसके अलावा गांधीजी ने गुजरात के खेड़ा में फसल चौपट होने पर राज्य से किसानों की लगान माफ करने की मांग की। 1918 के अंत तक गांधी जी ने अपने अनूठे तौर-तरीकों के द्वारा (जो कि उन्होंने अन्याय और शोषण के विरुद्ध लड़ाई लड़ने के लिए प्रयोग किया) अपने आप को भारत में स्थापित कर लिया और गांधीजी की शांतिपूर्ण और सरल जीवन ने लोगों के साथ जोड़ दिया।

### असहयोग आन्दोलन:

असहयोग आंदोलन गांधी जी के द्वारा चलाया गया प्रथम जन आंदोलन था। इस आंदोलन में सहयोग एवं व्यास कला की नीति प्रमुखता से अपनाई गई। इस आंदोलन की लोकप्रियता के प्रमुख कारण जनाधार था। शहरी क्षेत्रों में मध्यम वर्ग तथा ग्रामीण क्षेत्रों में किसान तथा आदिवासियों द्वारा इस आंदोलन को पूर्ण समर्थन मिला। साथ ही महिलाओं ने पहली बार इस आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। श्रमिक वर्ग के लोगों की भी इसमें भागीदारी थी। इस प्रकार का एक प्रमुख जन आंदोलन बन गया था।

1914-18 के प्रथम विश्वयुद्ध ने भारत के किसान एवं बुद्धिजीवी वर्ग के लोगों के जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया। इसी समय भारतीय मुसलमानों एवं अन्य जन प्रतिभागियों ने युद्ध में अंग्रेजों की मदद एवं सेवा किए थे और अब अपने सेवा के बदले वे इनाम की अपेक्षा कर रहे थे। लेकिन इसके जगह पर उन्हें "रॉलेट एक्ट" दिया गया। रॉलेट एक्ट के अंतर्गत भारत के लोगों को बिना जांच के कारावास में बंद करने का प्रावधान था।

इस काले कानून के विरोध में गांधी जी ने सत्याग्रह सभा करने का सुझाव दिया। साथ ही उन्होंने 30 मार्च 1919 को एक देश व्यापी हड़ताल करने की योजना बनाई, जिसे किसी कारणवश 6 अप्रैल 1919 तक स्थगित कर दिया गया। पुनः 13 अप्रैल 1919 को पंजाब में अमृतसर के जलियांवाला बाग में लोग इकट्ठे हुए। शांतिपूर्ण चल रही जनसभा पर अचानक जनरल डायर ने अपने सैनिकों को अंधाधुंध गोलियां बरसाने का आदेश दे दिया, जिसमें एक आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार 379 निशस्त्र एवं निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया तथा अन्य को यूरोपियों के सामने पेट के सहारे रेंगने पर मजबूर किया गया तथा अंततः एक आधिकारिक आदेश के अनुसार पंजाब में सैनिक शासन लागू कर दिया गया।

इस घटना ने पूरे देश में उत्तेजना पैदा कर दी। भारतीय नेताओं के द्वारा अलग-अलग स्थानों पर विद्रोह प्रदर्शन किया गया तथा रवींद्रनाथ टैगोर ने "नाइटहुड" की उपाधि (जो ब्रिटिश सरकार द्वारा उन्हें दिया गया) वापस कर दी। भारतीय नेताओं के द्वारा विद्रोह प्रदर्शन के लिए "हंटर कमीशन" का प्रयोग किया गया, लेकिन गांधीजी के शब्दों में यह एक लीपापोती वाली रिपोर्ट थी। असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में नवंबर 1920 को पारित कर दिया गया। इसके बाद यह आंदोलन पूरे देश में छा गया। असहयोग आंदोलन के शुरू होने का एक ऐतिहासिक कारण यह भी था कि प्रथम विश्व युद्ध के बाद की प्रशस्तियों ने भारतीयों के अंदर असंतोष, वहम तथा ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भावनाएं पैदा कर दी थी, जिनमें खिलाफत आंदोलन, जलियांवाला बाग हत्याकांड एवं 1919 के चार्टर एक्ट में अप्रिय सुधार प्रमुख कारण थे।

जो लोग भारतीय उपनिवेशवाद को खत्म करना चाहते थे उनसे आग्रह किया गया कि वे स्कूलों, कॉलेजों एवं न्यायालय ना जाएं तथा कर ना दें। साथ ही विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने पर बल दिया गया। गांधी जी ने कहा कि असहयोग के नीतियों को यदि सही ढंग से पालन किया गया तो एक वर्ष के अंदर

भारत स्वराज प्राप्त कर लेगा। बंगाल में मौलाना अबुल कलाम आजाद और अकरम खान मोहम्मदी ने स्वदेशी की विचारधारा को फैलाया। मोहम्मद अली के द्वारा चलाए गए हमदर्द एवं कामरेड तथा अबुल कलाम आजाद द्वारा संचालित अलहिलाल ऐसे महत्वपूर्ण माध्यम थे जिन्होंने आंदोलन के संदेश को लोगों तक पहुंचाया।

अपने संघर्ष को और विस्तार देते हुए गांधी जी ने खिलाफत आंदोलन के साथ हाथ मिला लिए जो हाल ही में तुर्की के शासक कमाल अतातुर्क द्वारा स्थापित किए गए सर्व-इस्लामवाद के प्रतीक "खलीफा" की पुनर्स्थापना की मांग कर रहा था। खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन एक साथ मिलकर काम किए जिसमें भारत का प्रथम महाशक्तिशाली आंदोलन उभरकर आया। कांग्रेस नागपुर में पहले ही घोषणा कर चुकी थी कि हम स्वराज के उद्देश्यों को शांतिपूर्ण व विधि संगत तरीकों से ही प्राप्त करेंगे। स्वतंत्रता को लेकर लोगों में एक नया जोश था, जो कि गांधी जी ने एक साल में दिलाने का वादा किया था।

असम के किसानों के साथ-साथ मणिपुर की पहाड़ियों में रहने वाले लोग भी इस आंदोलन में शामिल हुए। एक नया नेतृत्व ग्रामीण क्षेत्र में उद्भूत हुआ। गांधीजी के इस आंदोलन ने जनजातीय वर्ग के लोगों के जीवन को भी प्रभावित किया। लेकिन 4 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चौरी-चौरा में लोगों के एक समूह ने पुलिस के उकसाए जाने पर पुलिस थाने पर हमला कर आग लगा दी, जिसमें 22 पुलिसकर्मी जल कर मर गए। इसके बाद गांधी जी ने आंदोलन को वापस ले लिया और ज्यादातर नेताओं के द्वारा आलोचना करने पर भी अपने फैसले पर अडिग रहें, क्योंकि उन्होंने अहिंसा के सिद्धांत को छोड़ने या ढील देने से पूर्ण इनकार कर दिया था।

आंदोलन के विरोध करने का प्रभाव गांधी जी की लोकप्रियता पर पड़ा। 13 मार्च 1922 को गांधीजी को गिरफ्तार किया गया और न्यायाधीश "ब्रूम फिल्ड" ने गांधीजी को असंतोष भड़काने के अपराध में 6 साल की कैद की सजा सुनाई। 18 मार्च 1922, से लेकर वे केवल 2 साल ही जेल में बिताए थे कि फरवरी 1924 को उन्हें आंतों के आपरेशन के लिए रिहा कर दिया गया।

### **सविनय अवज्ञा आंदोलन:**

भारत की जनता के हितों और स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से असहयोग आंदोलन के पश्चात गांधी जी द्वारा चलाया गया अगला आंदोलन 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन था। इससे पहले भारत में भावी सुधारों की सिफारिश के लिए ब्रिटिश सरकार ने "साइमन कमीशन" को भेजा। महत्वपूर्ण बात यह थी कि भारत के समस्याओं को सुलझाने आए इस कमीशन में एक भी भारतीय शामिल नहीं थे। कांग्रेस ने 1927 के अपने अधिवेशन में इसे बहिष्कार करने का निर्णय लिया। तत्पश्चात यह कमीशन देश में जहां भी गया, उसे काले झंडे और हड़ताल से स्वागत किया गया। दिसंबर 1928 में गांधी जी ने कोलकाता में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने की बात कही गई। साथ ही अधिवेशन में आए कार्यकारी समितियों को एक नागरिक अवज्ञा कार्यक्रम शुरू करने के लिए प्रेरित किया गया। गांधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चंद्र बोस और पंडित जवाहरलाल नेहरू को आज़ादी के विचारों से फलीभूत किया बल्कि देश के स्वाधीनता के लिए लोगों को जागरूक किया।

गांधीजी ने अपने कार्यक्रम के बारे में विस्तार से लिखते हुए सरकार को आगे आने और नमक कानून को तोड़ने से रोकने की चुनौती देते हुए वायसराय को एक अंतिम चेतावनी भेजी। उसके बाद गांधी जी 12 मार्च 1930 को अपने 78 स्वयंसेवकों के साथ अहमदाबाद से दांडी के तट तक पैदल यात्रा की। 6 अप्रैल 1930 को उन्होंने शांतिपूर्वक नमक कानून को तोड़ा। उसके बाद पूरे देश इस नागरिक अवज्ञा आंदोलन में कूद पड़ा। तमिलनाडु में सी राजगोपालाचारी

ने दांडी की ही तरह एक यात्रा निकालकर तिरुचिरापल्ली से वेदारण्यम तक गए और के कल्लपन ने पहली बार मालाबार तट पर नमक कानून तोड़ा।

नागरिक अवज्ञा का एक नया केंद्र उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत के रूप में उद्भूत हुआ, जहां खान अब्दुल गफ्फार खान व उनके अनुयायियों खुदाई खिदमतगार ने नागरिक अवज्ञा आंदोलन शुरू किया। ब्रिटिश सरकार ने उन पर गोली चलाने का आदेश जब पारित किया तो गोढ़वाली के सैनिकों ने उन पर गोली चलाने से इनकार कर दिया। उसके बाद ब्रिटिश सरकार ने उन्हें बंदी बनाकर जेल में डाल दिया। इस घटना ने आंदोलन को आगे बढ़ाने का काम किया गांधीजी ने भारतीय महिलाओं को चरखा के प्रयोग से सूत काटने का सुझाव दिया। तत्पश्चात सभी सरकारी कार्यालयों एवं शराब व विदेशी वस्तु बेचने वाली दुकानों के सामने विरोध प्रदर्शन किया गया। जिसमें भारतीय महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। 4 मई 1930 को गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। जिसके परिणामस्वरूप पूरे देश में घटनाएं होने लगीं। यह आंदोलन तब स्थगित हो गया जब गांधी जी "गांधी इरविन पैक्ट" पर हस्ताक्षर कर दिए। इसके बाद गांधीजी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (जो ब्रिटेन में आयोजित होने वाला था) में भाग लेने के लिए चले गए। लेकिन इस द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से भी कुछ हासिल नहीं हुआ और कांग्रेस को भी विचार करार दिया गया।

गांधीजी नवंबर 1933 को 10 महीने की लंबी यात्रा हरिजनों के उत्थान के शुरू की। इस बीच कांग्रेस पार्टी को पुनर्जीवित करने की बात चलने लगी। मार्च 1934 को दिल्ली में कांग्रेस जनों की एक बैठक हुई और उसमें काउंसिल के चुनाव में भाग लेने का फैसला हुआ और अंत में गांधी जी की सलाह से 20 मई 1934 को सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लिया गया।

### **भारत छोड़ो आन्दोलन:**

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 9 अगस्त 1942 को गांधीजी के आवाहन पर पूरे देश में एक साथ शुरू हुए "भारत छोड़ो आंदोलन" ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दिया। भारत छोड़ो आंदोलन सही मायने में एक जन आंदोलन था जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ युवाओं को आकर्षित करना था। उन्होंने अपने स्कूल व कॉलेजों का रास्ता छोड़, जेल का रास्ता अपनाया। जून 1944 में गांधी जी को रिहा कर दिया गया। जेल से निकलने के बाद वे कांग्रेस और मुस्लिम लीग के फासले को पाटने के लिए कई बार जिन्ना से बात किए, क्योंकि इस समय जब कांग्रेस नेता सभी जेल में थे। तब मोहम्मद अली जिन्ना और मुस्लिम लीग की पार्टी अपने प्रभाव क्षेत्र को फैलाने में लगे हुए थे।

द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों के जनमत की सलाह लिए बगैर जबरदस्ती युद्ध में धकेलने के बाद ब्रिटिश सरकार ने अपनी चालाकी दिखाते हुए इस युद्ध को लोकतंत्र की लड़ाई के रूप में घोषित कर दिया। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह थी कि ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों के प्रति कोई सहानभूति नहीं दिखाई। इन सभी बातों पर ध्यान पूर्वक विचार करने के बाद गांधी जी ने एक हल्का सत्याग्रह शुरू करने का निर्णय लिया और सत्याग्रह को सावधानीपूर्वक चलाने के लिए उन्होंने सत्याग्रही का चुनाव किया। गांधी जी द्वारा चुने गए सत्याग्रहियों में पहले सत्याग्रही विनोबा भावे और दूसरे पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ युद्ध में सहयोग को लेकर सार्वजनिक भाषण दिया।

1941 में जापान भी युद्ध में शामिल हो गया तथा उसने भारतीय सीमाओं को चुनौती दी। जापानियों के दया पर भारतीयों को उनके हाल पर छोड़ ब्रिटिश फौज के पीछे हटने के साहस ने भारतीयों में असंतोष, द्वेष व घृणा की



भावना पैदा कर दी। गांधीजी ने भारतीयों के इस बढ़ते असंतोष को समझा और अधिकतर नेताओं से बातचीत करने के बाद एक आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया। 9 अगस्त 1942 को मुंबई में गांधीजी ने "करो या मरो" का नारा के साथ ब्रिटिश सरकार को भारत छोड़ने के लिए कहा। तत्पश्चात हजारों—लाखों भारतीय उनके समर्थन में जुट गए। अगले दिन गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया। जिसके बाद पूरे देश में लोग अपने घरों से निकलकर खुले में आ गए और एक उपनिवेश विरोधी आंदोलन शुरू हो गया। दूसरे शब्दों में ब्रिटिश सरकार को भारत से खदेड़ने के लिए आंदोलन शुरू हुआ। परिणामस्वरूप सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाया गया और पूर्वी यूपी में बलिया, बंगाल में मदिनापुर, महाराष्ट्र में सतारा में कृषक ठिकानों पर समानांतर सरकार स्थापित की गई। जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन और अरुणा आसफ अली ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उषा मेहता ने भूमिगत रेडियो को संचालित किया। लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों के द्वारा इस आंदोलन को सख्ती के साथ दबा दिया गया।

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी का योगदान अद्वितीय है। महात्मा गांधी भारत के उन महान विद्वानों में से एक हैं जिन्होंने विश्व पटल पर अपनी एक अलग छाप छोड़ी है। उनके दर्शन को भारतीय जनमानस ने खुले मन से आत्मसात किया। सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों पर चलकर उन्होंने भारत को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इन सिद्धांतों ने पूरी दुनिया में लोगों को नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रेरित किया।

## गांधी

वो पतला सा वो दुबला सा इंसान  
जिसने इंडिया को हिंदुस्तान कहलवाया  
जो आगे जा कर बापू कहलाया

दलितों को हरिजन कहलवाया  
भारत को आदर्श बनाया  
वही महात्मा कहलाया

वो पतला सा वो दुबला सा  
जो धोती पहने लाठी पकड़े  
शांति से अहिंसा से अंग्रेजों के नाक में दम करा  
गुलामी के माहौल में आजादी का मोल समझाया

हम अपने ऊपर राज करें वही स्वराज है  
और वह स्वराज हमारी हथेली में है  
समझ कर स्वराज का मतलब समझाया

आजाद हो तुम अपने विचारों से  
समझा कर भारतीयों को भारतीय होने का मोल करवाया

नहीं थे जो कभी शारीरिक रूप से पके  
उन महात्मा ने,  
अंग्रेजों के दिमाग की चूड़ियों को हिलाया

पहले अंग्रेजों को देख कर छोटे—बड़े सब भारतीय भागते थे  
अब नहीं डरते उन अंग्रेजों की अंग्रेजी से ..  
मार—पीट से, जेल जाने से, देश निकाले से  
न रहा रास्ता कोई

तब छोड़ कर जाना पड़ा हिंदुस्तान हमारा  
फूट डाली टुकड़े करवाये  
निराश तो बहुत हुए बापू  
फिर भी इंडिया को भारतीयों का हिंदुस्तान बनाया

वही महात्मा वही बापू कहलाया हमारा

**वसुन्धरा**

बीजेएमसी द्वितीय वर्ष

## A SUPERHERO

This is the story of a poor or I can say a loser guy. He lived in a small village of Bardhaman district, West Bengal. He had 2 sisters and a brother. He was the eldest among all siblings. He had a very simple life, waking up in the morning he went to his farm, helped his father in farming and when he came home, he went to school. After coming from school, he again went to the fields to help his father and this way, it went on. When he was in eighth standard, he failed. His father being very strict, beat him a lot. He scolded him about family situations, marriage of two younger sisters, etc. Then, after some days, his father ordered him to leave studies and home, to go somewhere else to and some work and earn.

At the age of thirteen, wearing a nicker, a T-shirt, having 17 rupees in his pocket, he went to the local railway station, Patuli Station, and caught a local train. From there, he went to Howrah Junction. It was the nearest to his home and all the interstate and inner city trains halted there. There were different trains on the platforms and he caught the one which was standing on Platform nine, 12307 Jodhpur Howrah Superfast Express. After 21 hours of travelling, he got down at a station named Jaipur Junction.

Unknown city, the small 13-year old boy started walking through the streets of Jaipur asking for some work. Without even knowing proper Hindi, he tried to communicate. He met a man named Dinesh Khandelwal, who somehow understood that the boy needed some work. He took him to a small room full of 22 other people, the room was barely equal to the first floor at your home. It was closed, poorly ventilated. He had to stay there, eat there, sleep there, and spend some golden years of his life there! They all worked, and work was to fix gemstones in the ornaments you wear like necklaces, rings, lockets, bracelets. He got 2 rupees on Sundays as the pay for whole week. One rupee he saved for himself and with the other rupee, he went out to have his Favourite samosa. At that time, a samosa costed 25 paisa.

At the age of 19, he went back to his village in Bengal. All his family members were very glad to see him after almost 7 years. He was now a grownup boy, long hair, lean body and handsome. It was on the occasion of one of his sister's wedding where he gave all his savings. After that, he went back to Jaipur and resumed his life. At 22, he left the place and started working on his own. He rented a room, setup some tables, got some work from his Seth Ji, Dinesh Khandelwal, and started to work on his own. When he went home again, he took some young lads with himself to work with him. He saw that they couldn't afford to study and staying there would eventually lead them to bad habits. When he was 27, he had 22 people working under him doing the same gemstone work, earning good, eating good, living happy. He got married at 27.

On 8 May 1999, his strict, beloved father passed away. At that time, his wife was 4 months pregnant. Everything shattered in front of him, his dreams of gifting his father a home of his own. He recovered from that incident and became more patient and strong. Both his sisters had 2 children each. He took the responsibility of them, their studies, their everything and obviously his own son too. All his nephews and nieces were very bright in studies and eventually his son also. They all grew up and are well settled at different places. This man travelled a journey from 25 paisa per samosa to 15 rupee per samosa. He gave food to a lot of poor kids who are well settled now. He is patient like no one, he faced the hardest times of his life like no one, and he handled situations like no one.

His son is now in Ram Lal Anand College, University of Delhi. His son is the one writing this journey of his beloved father.

This is me Pronay Dey, writing my father's journey to being my superhero, not superman or batman, my superhero, my inspiration, my everything. I can't be like him, even if I try to be. He owns a house of his own, is well settled, satisfied and still struggling with some chronic diseases. I just want to give him everything he gave me. I love you papa.

**PRONAY DEY**

B.Sc. (Hons) Maths, Second year

## MAHATMA'S IDEA OF MANAGEMENT

“Happiness is when what you think, what you say, and what you do are in harmony.” - Mahatma Gandhi

What forms the essence of the Gandhi style of Management can be best summarized in the above quote. Gandhi, a man of words and actions had long ago set the examples of utmost punctuality, discipline and humility. His ‘servant leader’ style of leadership has left behind a legacy of work, before honor.

He was one of the pioneers in setting standards for a manager to be an ace marketing person. He knew how to grab the attention of Indians as well as the British. Such charming abilities helped him make his team devoted singularly to the cause of Poorna Swaraj. Management works best in an equitable fashion and Gandhiji had set his principles right. His work ethic ensured that people from all languages, caste, religion and creed were involved in working towards the mission. Such efforts gave more room to flexibility in leadership and openness to novel ideas.

The father of our nation was a fervent practitioner of the philosophy of “Trusteeship”. He believed that every person who spends a penny to buy the Young India magazine, is a shareholder to that. When people invest their trust in the magazine, they deserve to know the truth. This ethical management style can be tough to adopt in the contemporary business world, but the rewards are worth the effort. The German Bundesbank stands tall as an example of a Central bank, about whom it is quoted ‘Not all Germans believe in God, but they all believe in the Bundesbank’. Such reputation is only maintained when one works with a commitment to truth.

Gandhiji was an excellent communicator. He understood the art of being assertive without being arrogant. When faced with situations of crisis, he kept his calm and put his point across with clarity and peace. Despite fighting for Poorna Swaraj, his words were never provocative to harm another person. It is rightly said- words have power, and Mahatma never used his power to exercise undue influence on the citizens who believed in him. He had the instinctive ability to communicate to all with equal ease- whether it is rich or the poor, the elite educated or the illiterate. He used his words to mobilize support and energize his people. His idea of micro-managing has long been discussed in management schools. Gandhiji, despite delegating responsibilities, himself ensured that every little detail was planned meticulously before any action was made.

One can learn a lot from Gandhiji and yet more will be left to talk about. In essence, Gandhiji was a noble human being. He lived a modest life and was sensitive to his surroundings. He knew that hate cannot be countered with hate, but can only be conquered with love. As Sant Kabir Das quotes:

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।  
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े तो पंडित हो।।

If one can love their country, their team, environment and the cause they are working towards, nothing can stop them from success.



**OJASVITA ARORA**  
BMS Third Year

## MOUNTAIN IN A MOLEHILL

General, your tank is a powerful vehicle.  
It smashes down forest and crushes a hundred men.  
But it has one defect:  
It needs a driver

General, your bomber is powerful.  
It flees faster than a storm and carries more than an elephant.  
But it has one defect:  
It needs a mechanic

General, man is very useful  
He can fly and he can kill  
But he has one defect:  
He can think.

-Bertolt Brecht

Reason is rebellion. All the politicians, abstract national identities and religions are terribly afraid of reason. Reasoning is inherent in human beings. This reasoning is ruthlessly killed during the upbringing of a child. The clever masters of the world, be it priests, politicians or corporators, have institutionalised two mechanisms for 'De-reasoning' of human race. These two mechanisms are the modern education system and the force of discipline that feeds this education system. The education system, both formal and informal, that the world has devised and the robust force of imposed discipline amalgamates to produce plain, order following human machines. This process of 'De-rationalization' is very cleverly done before reasoning actually develops in a child. This is done in early stages of life because as soon as rationality develops in a child, he begins to challenge. In addition, it is impossible for a rational being to be violent. It is impossible for him to be Hindu or Muslim. It is impossible for him to be Indian or American. It is impossible for him to be leftist or rightist. But once a child becomes Hindu or Muslim, American or Indian, leftist or rightist; it is very difficult for him to be rational again.

In India, like in the rest of the world, the most difficult task of our times is to cross the complete education and keep our reasoning intact. The current education system that India follows has become an expert in destroying the fundamental human talents of reasoning.

Let us look at the upbringing of an Indian child to understand this mechanisation of human race. When a child is born, he is given a name and a national identity. Hindu parents fold their hands before the temples and ask this two-year old neo-natal to do the same. When this child enters the school, the formal education system does not miss a chance to destroy his reasoning. From the 'left-right-left' of the playground to the examination patterns, all that this child learns, is following orders. All of this refinement continues for years and when he turns twenty-five years old and crosses a temple, his hands get folded automatically. When this very same man joins a military, he does not think for a second before killing a fellow human being because all that he has learned till now is obligation to orders and defending fake ideals. Let us now look at the death of reason in the process. The child's folded hands before the temple in early life do not symbolise his religious nature, it rather reflects the brutality of the society, since his folding of hands is completely 'deceiving'. This child has no idea of God or devil. Before this child learns to distinguish between right or

wrong, he is crafted into an order following machine. It seems as if the parents, teachers and the complete social setting is keen to transfer all its diseases to the offspring through this pattern of upbringing.

This scheme of education is the reason that India has failed to produce any rational- intellectual being, at least in the recent past, and those who possessed reasoning were the products of the Western environment, be it Mahatma Gandhi or Dr. Bhimrao Ambedkar.

Mahatma Gandhi was the one who diagnosed this problem for the very first time, and accordingly tried to reform this system with what he called 'Basic Education' or 'Bunyadi Talim'. For Mahatma Gandhi education means - 'the realisation of best in a man' and that can only be brought about by reasoning. Mahatma Gandhi carried out his educational experiments at Shanti Niketan, Sabarmati Ashram and Gujarat Vidyapeeth and proposed a new philosophy of education by placing 'Vardha Education Scheme' before the nation in 1937.

Gandhiji pointed out not only the ineffectiveness of the existing education system but also the auxiliary harms of the same. In his words, 'I am fully convinced that present system of education is not only wasteful but positively harmful'.

In July 1937, Gandhiji wrote in Harijan, 'By education I mean an all round drawing out of the best in child and man - body, mind and spirit. Literacy itself is not education.'

However, Mahatma Gandhi has diagnosed the problem accurately; nonetheless, the remedy that he suggests is fundamentally flawed, at least in the contemporary times. For Mahatma Gandhi, education is a means to achieve a non-violent and non-exploitative social order but the model that he proposed in 'Vardha Educational Scheme' is production centric where ultimately the students will become money-earning machines rather than productive-intellectuals. Secondly, only 'single-craft' cannot develop the logical faculty of children's mind. Thirdly, Mahatma's scheme of education gives a pushback to modern scientific and technological development. In implementation of this system is like going back to bullock-carts in the age of supersonic - rockets, for a nation like India it would be like digging its own grave.

The events in the personal life of Mahatma reveals that even the 'father of the nation' was not a good 'father of his children'. Mahatma's iron hand discipline that he forced and imposed upon his children made Harilal, his eldest son a rebel. He tried to impose his 'mahatamaship' upon his children that culminated into unfavorable outcomes. When Harilal accepted and converted to Islam publicly, Mahatma Gandhi preached 'Ishwar-Allah tero naam'. This rigidness made Harilal non-rational.

This super imposed discipline makes the generations violent. On the other hand, reason in itself leads to discipline- one that comes from within. But since we prefer to impose discipline upon the young generation rather than to teach them reason, we end up producing violent human race characterized by 'reasonlessness'.

Mahatma Gandhi was an ideal human, all the attributes of a rational man can be traced in Mahatma Gandhi, despite all these qualities, he failed to inculcate reason in his children.

The world desperately needs independent and rational human beings. The demand of the hour is to dismantle the existing education systems and explore the possibilities of development of sleeping reason in a child, to the maximum extent possible. Reason would itself bring self-regulation. The discipline that would arise out of reason could not be used by militaries for war, could not be exploited by politicians for violence and could not be institutionalised by priests for riots. Such discipline would bring peace in the world.

**NISHANT SAINI**  
B.A. (Hons) Pol Sc, Third Year

## MAHATMA GANDHI- AN ENIGMA

Mohandas Karamchand Gandhi, popularly known as the Mahatma, was small and diminutive in his built but towering in his stature. His journey from a simple but a smart barrister in London to a barely clothed man in a loin cloth with a simple walking stick, was a long and arduous one. He came from a business family based in Gujarat, but was meant to create history that would be an example for generations world over. He might be called the Father of India, but his lessons and teachings are worth being emulated across the globe. His foresight, wisdom and tenacity made him a revolutionary and a reformist that taught the world how mountains can be moved without having to break the rocks: how the tool of Ahimsa could melt the hardest of stones. A deeply spiritual person, he believed in the oneness of humankind. He said, in 1947, “The bane of our life is our exclusive provincialism, whereas my province must be co-extensive with the Indian boundary so that ultimately it extends to the boundary of the earth. Else it perishes.”



If we were to define it in a modern religious context, he could well be an amalgamation of all the great saints and thinkers known to humankind, for he displayed exemplary wit, determination and gentleness through one of the toughest times history had witnessed. As Martin Luther King said in a speech, “Gandhi was probably the first person in history to lift the love ethic of Jesus above mere interaction between individuals to a powerful and effective social force on a large scale.” He had gone to England to study Law to bring justice through legal aid, little realising that an incident in a train in Africa would forever alter his journey; and he would bring justice to millions by Ahimsa and Satyagraha. He strove to shake the fundamentals of the mighty British Raj that had spread its tentacles viciously all over the globe. He fought tooth and nail to bring dignity and justice to the oppressed by bringing in the hands and resources of the most privileged. While we cannot think of coaxing the rich of today to gladly part away with their wealth and comfort to bring ease and succor into the lives of the oppressed and enslaved citizens of the world, he did just that and more. He evoked in people deep empathy, compassion and understanding for the forgettable. Who would have thought that a small, thinly built, almost emaciated- looking man could shake up the whole world? When he reminded the sleeping native population of Africa that they should rise up in unison and fight for their rights, justice and freedom, he realized that he had a bigger obligation to his own motherland India, which too was facing an almost unsurmountable oppression by the British Raj. He gladly gave up his own dreams of having a luxurious life and prestigious law practice to fight for self-determination and freedom of the Indians. He, thus, set a beautiful example to which even the proud and arrogant Churchill had to concede and bow his head. He fought the British who were oppressing the world with their might and amour, with his soft, gentle and coaxing voice. His steely determination that was visible in his Satyagraha shook them to their core. The Dandi march, the spindle or the charkha, Swaraj, the Quit India Movement and Satyagraha were the only weapons that Mahatma and his followers used against the barrels, guns and cannons of the British. While the British had an answer to guns, they had no answer to the strong mettle of character shown by the Mahatma and his millions of followers, not only in India but across the globe. In a few years time, he had won the hearts, souls and imagination of great leaders of the world. As Martin Luther King said, “It was in this Gandhian emphasis on love and nonviolence that I discovered the method for social reform that I had been seeking.”

**SARAVANI HAJELA**

BSc. (Hons.) Microbiology, Third Year

## GANDHI IS NOT A RELIGION, IT IS A NATION

The breezy wind brushes past my cheeks as I read the newspaper headline with tear-filled eyes. 800 killed in stampede, 1000 injured, police lathi charges as stone pelting continues between students and authorities.

I am too numb to feel anything after reading this, succumbed to see these everyday headlines on the newspaper. I question my existence. Every night as I go to sleep a question haunts me to death, "Is this my India?" I grew up listening stories of how hard my country fought for its freedom. Grandpa was a soldier. My bedtime stories were all about how my motherland had been raised by the blood of its warriors. Nights were all about praising our unsung heroes and aspiring to serve the nation one day. Tales of warriors were usual with a cup of morning tea and patriotism was inbuilt in blood. Ever since my birth, I have known an India of peace, brave hearts, discipline, loyalties, peace and of pride. I have known an India of Gandhi- Father of the Nation, Mahatma Gandhi.

Gandhi was born when India was in a political turmoil. He not only took the responsibility of the nation but also of each and every countryman. He practiced his holistic approach of "Sarvodhya" which means taking all together with peace and harmony by catering to the needs of all. His thoughts, tales of bravery and courage are inevitable with India's history. Gandhi is in one and all, amongst us today. Talking about today's political scenario, I am sure that he would be ashamed of our deeds and the relentless killing of mankind is nothing less than creating a hypocrite India. India has always been known for its unity in diversity, for its varied richness, beautiful and brave history. Gandhi did not live with narrow concepts of hiding women behind the curtains, of discussing hypocrisy on television screens, of beating people in the name of God. He stood for Equality, Women Empowerment, Unity, Peace, Courage, Enlightenment, Integrity, Diversity, Non-violence and Harmony. I was brought up in classrooms where all religions prayed together and sang hymns of the Christ. I still go to the church whenever I feel disturbed, Jesus never asks me my religion! We have grown up sharing tiffin boxes together, our boxes never closed the lid for a particular religion. Evening giggles, chit chats and games never sounded different for different communities. I have seen Qureshi uncle and my father have their evening tea together at the stall. Seeing the intolerance in the country today in the name of religion, race, gender leaves me with utter silence and a bubble of ferocious thoughts which scream loud and make me want to help my country from depleting. We all are witnessing nothing but the merciless killing of innocent humans who are seeking nothing but a shelter of love, humanity and freedom. To see the greatest virtue of Humanity dying is nothing less than making an India which is hollow from within. If my Grandpa was alive today, he would have been shaken by seeing the dreams of millions of youngsters rupturing. Everyday what we hear and see now is synonymous to the cotton freezing in mountains of tyranny, with masked faces and rods in hand. When under the feet of the oppressed men, the Earth lies dead, pregnant with dust bowls and on the head of the ministers in power, the sky showers soothing rain, where mothers shred tears of blood and heart screams in vain. We are seeing an India degrading to poverty, narrow minded concepts, violence, disintegration and when Gandhi sees this all from above, he would be just like the cold breeze who is too cold to feel and utterly depressed. When the people of my country sleep, they feel that their early mornings would be full of smoky skies and stones falling from terraces. The February we have witnessed this year has not only shaken the roots of mankind but also lacerated the existence of humanity. My friends of North-East Delhi have experienced the fear of their rights being taken away; they have spent nights crying inside the same room with their many other friends. The fear of seeing everything shattered and brothers hitting each other in the name of God is nothing less than a nightmare.

Now, is the time to rise and awaken to the morning sunlight which has hope and prosperity embedded in it.

My soul asks me to speak up and save my country from spoiling its beauty which is under threat of death and devastation because if not now then when? Let's save the angels of truth from being thrown into prison and try wrapping up the land into hands of brotherhood. Let the warmth of love and motherly care save the segregation of the Gods and the dividing souls. My India is not students being beaten up, sisters slitting the throats of each other. My India isn't a vandalized property strewn across. My India isn't dirty politics. My India isn't non violence. It is somewhere where I actually belong. My India is Sudesh uncle having seviyan in dhoti. My India is Mohammed and Arjun being best friends. My India is unit in diversity. My India is prosperity. My India is love, warmth, peace, prosperity. My India is a blessing. Whoever tries to disturb its peace and tranquility and shakes the ideals on which it was built should be aware of its fighters and brave countrymen. Are we waiting for someone to take the lead and become another Gandhi for the nation or are we a little of him in ourselves? It is the need of the hour to stand up for our country and protect it from the cruel eyes of the ones who are the cause of this mayhem. Let's join hands and practice non-violence, integrity, discipline, and brotherhood to rise together towards brightness before it's too dark to look around. We don't need to wait for someone to take the call. Let's be responsible for this place to which we belong and create it with care and love to make an India which is wiser, stronger and bolder. Suddenly, my mother pinches me hard and I wake up from the dreadful dream of such an India, but to my disgrace I acknowledge that all this is happening for real and my motherland is in a constant threat of devastation. If it's not now then it's never. It is the time to mold my nation into a beautiful country which we have always thought of. Gandhi's ideals have and always will form the basis of building this country India. Let us remember that Gandhi is not a name, a religion or freedom fighter but Gandhi is the entire nation in one. Jai Hind!

**TANIKA BISHT**

B.Sc. (Hons.) Statistics Third Year

## IN THE RAIN

The clouds wandered in the sky, making a call  
To the withered souls waiting in the rain.

The roses hung from the brick walls,  
Their fragrance waiting to get dispersed in the rain.

The lips have dried off by wine of love  
They now seek mercy – wetness in the rain.

People have left their prints on the window panes,  
Soon, they too got disappeared in the rain.

People have left the city in caravans  
Desolation has now entered the city in the rain.

There are no shadows now on temple walls,  
Preachers recite hymns, praising God in the rain.

There is no language of the loss  
How will it address us, in the rain.

Is there any promises left unfollowed?  
There are still many, waiting to get buried in the rain.

Rivers carry broken reflections of the ruin  
What else they could've carried in the rain?

Letters were only communication we carried then,  
Amidst the war, words too led in the rain.

**MIR UMAR**

B.A. (Hons.) English, Second Year



## GANDHIAN PILLARS

*"In a gentle way, we can shake the world"*

*Mahatma Gandhi*

One of my favorite inspirational and motivational quote, is written above, quoted by Father of our Nation, Mahatma Gandhi.

Gandhiji was born on 2nd October 1869, at Porbandar, Gujarat. This day is also recognized as the International Day of Non -Violence, as he was a great pioneer of Non – Violence.

Gandhiji at his early age was inspired by Harishchandra and led a plain life following his path of living. Later on, after completing his studies, he joined the political party of India, to find out the various problems suffered by people in different parts of the country. Thus, he decided to find out these problems and travelled extensively across various states.

After a long time, he began acting for the freedom for the country. He built four important pillars of his life, those were his strengths in the Gandhian Era (1920-1947). They were, Swaraj, Satya, Ahimsa and Sarvodaya.

Firstly, talking about Swaraj , "Swa" means self and "Raj" refers to governance, which means self-rule. I know just like me you would be thinking the same. But this is just a half runway my friend! He had a different view about it. To him, self-rule did not mean rule by Indians, but more importantly a rule by Indians rooted in Indian values and ethos. Just throwing out Britishers to get the rein of governance in our hands was not enough as it can be easily done by revolting against them. His way of enacting swaraj was a peaceful way, that was by refusing to obey unjust orders, standing up for them, being ready to go to jail, being beaten up, even getting killed. It was a cowardly thought of killing others. Putting it in Gandhi's style we can say "we want the tiger nature, but not the tiger". His ideology of self-governance lead people to many divergent areas such as self-resistance, self-love, self-awareness etc.

Sarvodaya (uplifting all) was the term he coined from John Ruskin's book, "Up to the last". He knew moving and uplifting all will make a greater difference to nation as a whole. And this is mentioned in our constitution in the form of Right To Equality, so that each one of us are treated equally and are treated in the same way so that no section of our society is left behind. But in present scenario, still many of us are facing some face of discrimination that can be either in the form of sex, religion, caste etc. Taking an example, is the Sabrimala Case. Women menstruating in the age group of 10-50 years are restricted to enter the temple of deity Swami ayyapa as he's a celibate. Why? A very form of sex discrimination is seen here. Aren't they allowed to practice their right to religion?

Next, talking about Satya and Ahimsa. They were the two top most strength of Gandhiji that made his even small movements a successful one. These two terms are considered as two sides of the same coin.

The term Satya is derived from Sanskrit, "sat" which means truth. But Gandhiji's idea was that Satya mainly refers to as existence with truth. He thus, coined this with a beautiful term i.e., Truth is God. It was a sovereign principle of Mahatma Gandhi. He strictly maintained the concept of truth as it is above and beyond all considerations and one must unfailingly embrace it throughout one's life. On the other hand, Ahimsa was the central concept of Gandhian ideals. Non-violence is the English translation of the word Ahimsa. It means non-injury, non-harm or inoffensiveness. It does not mean doing nothing, but making

enormous effects required to overcome evil. He taught us that without violence we can win a war and bring change in lives of millions people. But are we really following it? Are we? No. Every passing day we come through so many instances that are against this very rule Ahimsa. Talking about the recent one, the CAA( Citizenship Amendment Act) has led so many violent riots among people and has disturbed the communal harmony. Everyday some among us are being injured or are killed by our own people. If this is a way of resisting a movement then we are no more on a right path.

The time has come to change our priorities. The country is progressing fast economically, but people are receding back morally and ethically. Violence against nature has brought us to the door steps of global warming and climate change and violence against ourselves and our fellow beings has produced international terrorism. No one appears to be safe. Let us change our priorities. Let us think afresh. We need an economy where nature and people matter; we need money but we need love affection, integration and solidarity more. Let us look back and think over what the Mahatma had said and done. We need real decentralization of power to empower the people. Let us create conditions under which everyone feels secure and everyone takes part in the development-economic, social and political. This would be the true tribute to Mahatma Gandhi.

He rightly said this,

“The best way to find ourselves is to lose ourselves in the service of others”.

His selfless service for us will be remembered by us and our upcoming generations .So, like him, lets work for others, for each one of us, for our country, India. His way of life is an inspiration. And yes, he really shook the world Gently!

So, here's a salute from one Indian to our Bapu.

Truth is God.

Jai Hind! Jai Bharat!

**ANJALI**

B.Com (Program), Second Year

## TALE OF A MAN

Tale of a man who knew the world  
A man with many roles  
A man who gave many hopes  
An Indian, who symbolized dhoti  
Whom we all know as Gandhi  
A man who was born but never died,  
He saw a ray for the country  
and turned it into light

A brother with a helping hand,  
Believed in hard work and sacrifice

Never wanted India to cry  
He was a father who helped the country get free,

The only one among sheep who said free  
He made salt and promoted khaki,  
Called out 'Satyagraha'

A father every orphan has  
Yet killed by a son of his  
Tale of a man who knew the world,  
A man with a Charkha  
Who completed the Tiranga  
Still a man with many roles  
Who give many hopes

**RADHICKA**

BA (Hons.) English, Second Year

## GANDHI'S TRANSFORMATION

Everything does seem evitable when it has already happened. Whenever I look back at history, I get puzzled by one man – M.K Gandhi. There is no person like him before or after and surely history would have been different if he didn't exist. Scholars usually make a distinction between Young and old Karl Marx, the same goes for Gandhi. Gandhi lived for a long life span of 78 years and over this period, he had various personalities, hence predominantly open to accept the "Change" or "new". I know there are Ample amount of Gandhian quotes every time with a beautiful message but what I like about him the most is his attitude towards the "change", sure enough not majorly mentioned in many of his alluring quotes.

It is quite simple to read Mahatma's autobiography but it's hardly simple to do the same experiment with truth. It needs guts. Perhaps if you delve inside the Mahatma's autobiography, you will find many unusual facts about him. The major one which can't be forgotten is his poor ability to speak. Gandhi was a lousy speaker. As a lawyer, he wasn't able to deliver his own speech in Bombay once. He was hard working and Brilliant but when it came to speaking skills, it is beyond doubt to claim him as a crummy & lousy speaker. Another interesting event that takes a permanent place in my memory, which readers might ind monotonous was the completion of 3 vows given by him to his mother before taking a departure from India to England- to not touch "Wine, Women & Meat". You can itself evaluate, how hard it can be for a younger millennial like Gandhi in smart city like London to stand for such vows.

During his young Age, when he went to London, his influence seems limited as he was not very much into Politics in the purest sense nor any other Major field Except joining the Vegetarian Society, being another unusual step at his times. If my memory serves me well, it was E.M.S Namboodiri pad in the mid-1950s who wrote a book called "Mahatma and the isms" in which he satirically argued-

"The Fabians were in full low, the English Edition of Karl Marx's Das Kapital has just been published, George Bernard Shaw is making and presenting radical plays, the feminists were active on the streets and What does the Mahatma do? Simply join the Vegetarian Society”

Well, if you look at the other side of the coin, joining Vegan society does help him in majorly two aspects - He eventually came out of his comfortable bubble and made a lot of english friends in London (he was already outcast by his Baniya community before leaving London). He also got his first debut by the printing a Series of 6 articles at the age of 21 or 22 in 1887 & 1888. For us millenials getting an op ed (opinion) column printed in "The Hindu" or "The Indian Express" is sort of a big deal, just look at the Gandhi's first Debut. The ability to write and argue for moral and political issues is what Gandhi learnt, being a part of Vegan Society and of course making a lot of english friends.

When Gandhi was travelling in his initial days from South Africa to London, he wrote a book called "The Hind swaraj". After reading that piece of work, you might conclude Gandhi as an Anti-Modernist, Racist and misogynist. Gandhi wrote in the Hind Swaraj that it is the Railways which is responsible for the evils in the society, lawyers are the one who are making India impoverished and also the doctors who are practicing modern medicine and technology are responsible for making India impoverished, hence enhanced slavery.

On two major occasions, when Gandhi was almost going to die, it was Allopathic doctors who saved his life, first in 1919 when Dr. Dalal operated Gandhi for Piles and bacterial Infection. In 1924, again an allopathic doctor saved his life by operating Gandhi on an emergency basis for Appendicitis. After these two events, he accepted the Change and simply accepted modern medicine as a viable option, though he always gave

primary importance to Natural cure. Gandhiji during campaigning from 1913 to 1948 walked around 79,000 km, which is equivalent to walking around the Earth twice. Not many people know that Gandhi during his whole lifetime suffered from various diseases including Cholera, T.B, Malaria, leprosy and High B.P. and Gandhi initially left or skipped his diet and doctors somehow convinced him to eat the prescribed diet in order to live.

During the 1920s, Gandhi making casteist remarks when he said in one of his articles that Indian society is able to build mainly because of Caste system, and Prohibition of Intermarriage between different varnas was necessary for rapid Evolution of soul. But again in the late 1930s and early 1940's he accepted the "change" and published an article called "Caste has to go" and Dr. B.R Ambedkar played a major role in pushing mahatma to change his views on Caste and Varna System. It was the same Gandhi who mentioned blacks in Africa as Kairs and losers, but it must be noted that this is was the young Gandhi, later again serious up-gradation can be seen in his views on the blacks too.

I am quite prepared to accept the fact that Gandhi was an Excellent leader but when you compare his leadership virtue(mature Gandhi) with the underconfident and Nervous(young Gandhi), you will find that it was his ability or say "will" to accept the "new", Before we read how Gandhi changed the World, we must know how he changed himself along with the world. His numerous movements, be it passive resistance or non-violence or Satyagraha, it's all started by accepting himself as a novice and apparently with a will to improve.

**AMAN KUMAR**

B.A. (Hons.) Pol Science, Third Year

## MY EVERYTHING

Gave my clothes to his naked body,  
As if I didn't have a cold body.

Gave my happiness to his sadness,  
When all I had was sadness.

Gave my energy to his negativity,  
As if I was an orb of positivity.

Gave my youth to his thirsty loving,  
Only to realize it was fake loving.

Couldn't give my tears to his smile,  
As I ran out of tears, just to keep his smile.

Gave birth to the beauty of his children,  
Which was born out of my pain.

Gave my blood to his veins,  
When I were already dying in vain.

Gave my creation to his vision,  
But he couldn't see in this dark season.

Gave my harmony to his symphony.  
Now, I am just fading in his melody.

Gave my everything to his nothing,  
And pretended his nothing was my everything.

**ANJALI PAWAR**

B.A. (Hons.) English, First Year

## RUN

Even if someday,  
someone would untie your hands,  
Unfetter you,  
Set you free, and ask you to Run;  
The farthest and the fastest you can,  
You'd run, out of utter excitement,  
And out of mere inquisitiveness.

You'd truly run,  
For one huge reason.  
You'd run, to escape!  
You'd run, to flee!

The mundane around you; in attempts of finding  
something that allure you into it's embrace and  
would keep you :  
Constantly engaged!  
day in and day out.

But, how often?  
How often will you deny to seek refuge?

In the name of Humdrum.  
How long?  
How long will you aimlessly wander?  
In desperate search of something you want,  
Yet know not what.  
If you know not what you want  
And know not what you are searching for;  
Then you will embrace everything,  
That comes knocking your doorstep;  
Only to realise, that It was not "it"  
and bam! discard it!

There are dimensions of something,  
Of everything that remains unseen,  
No matter how deep you penetrate,  
Into the abyss of understanding,  
It is merely about understanding  
those facets that remain unseen to you!



You'd run,  
And only after you've had  
several rounds across the globe;  
Would you realise;  
that the same air lingers everywhere  
And that the same aura is sprinkled everywhere!

Just that some spill dark colours over themselves;  
and that some paint themselves bright!  
Just that some smell fresh as ever; and some smell stale.  
Because they've been warm, for too long.  
And when you'd return to what you once fled  
from, you'd embrace it! never to let go

**ISHA MAHAJAN**  
B.A (Hons.) English, Second Year

## THE DUSU ELECTIONS WILL BE RELEVANT FOR STUDENTS ONLY IF IT INCLUDES THEM

The DUSU election results are out and ABVP has won 3 out of the 4 seats while NSUI managed to win 1 out of 4. DUSU elections are fought annually along with the college's student union elections.

The purpose behind the DUSU elections is to strengthen the voice of the students and fight for their rights. Looking at the present scenario, it is very difficult to say that the Union is fulfilling its purpose. Being a student of DU and having seen two elections, I can say that most of the students don't even know the names of the candidates. If someone is unaware about the candidates, then how will they vote and decide who's a better candidate? This is definitely not a positive sign. In my first year of college, I was in the same situation. I saw the names of the candidates for the first time on the EVM and I had to make my decision in ten seconds to choose the person who will fight for my rights.

Looking at the condition of the university, it needs a lot of improvement. There is a difference between the infrastructure of north campus colleges and other colleges and the university has been unable to fill the differences in so many years. A hostel is one of those things that an outsider like me looks for in any institute. The lack of hostels is one of the primary concerns of the students coming from different parts of India. Finding accommodation in an unknown city is a tough job. Sports facilities can also be improved in many colleges. Placement cells of some colleges are unable to function properly. Why doesn't the student union make a placement cell for all the students of the university?

The above mentioned issues are raised in the DUSU manifesto of many student organisations but nothing happens after that, apart from mentioning the similar issues in the manifesto of the next student election. They are not even questioned because many are unaware about the name of candidates and even if they know the candidate, it is very unlikely that they will get a chance to question the candidate as they visit the colleges for only a few minutes.

DUSU elections are fought by spreading the pamphlets and wasting valuable paper. We can easily see thousands of pamphlets on the ground near the college gate of any DU college during elections. Whenever a DUSU candidate enters any college, they come with several students and start showcasing power. This has become the nature of DUSU elections which is very troubling.

After looking at this, we'll have to make or appeal for certain changes in DUSU elections. Since there are 90 colleges under DU, it will be very difficult for a candidate to approach each and every student. Therefore, the university can divide the DUSU into zones so that both the candidates and the students will be in a position to convey their message. The University can also restrict the number of pamphlets used by the candidate.

The DUSU elections will become relevant for students only when some positive changes are made to it. For this, both the students and the Union will have to work harder and force the University to make changes.

**KUMAR SUSHANT**  
BA (Hons.) English, Second Year

## कश्मीर है लहू-लहू

खून में डूबे हुए शाम व सहर देखे हैं,  
हमने कश्मीर में कटते हुए सर देखे हैं।

वही कश्मीर जिसे बाग-ए-जन्नत कहते थे,  
आज उसी बाग के वीरान शजर देखे हैं।

शब को तन्हाई में रोते हुए पाया है वहां,  
दिन के चेहरे पर उदासी के असर देखे हैं।

खौफ व दहशत भरे तूफान मुलाजिम में फंसे,  
गम के मारे हुए मजबूर बशर देखे हैं।

हमने हर दिल को तड़पते हुए पाया है वहां,  
हमने हर आंख में अशकों के घर देखे हैं।

कहीं लुटती हुई मां बहनों की इज्जत देखी,  
कहीं मजलूमों के जलते हुए घर देखे हैं।

दर्द से चीखते चिल्लाते तड़पते हुए लोग,  
जख्मी दिल, जख्मी नज़र, जख्मी जिगर देखे हैं।

राहें-पूरखार हैं दूशवारे मरहाल हैं बहुत,  
हमने कश्मीर में कांटों के सफर देखे हैं।

तपिश-अंदूज़ हर ख़ता कश्मीर है आज,  
चारों जानिब वहां शोलों के गुज़र देखे हैं।

गम का हम कैसे फरहान आज फसाना लिखें,  
हर तरफ उठते फसादात के सर देखे हैं।

**मोहम्मद फरहान**  
बी.एस.ई. जीआलॉजी (तृतीय वर्ष)

## ए माँ तेरी याद आई

आगोश में तेरी पलता था,  
मैं प्यार में तेरे ढलता था,  
थामे हुए तेरी उंगली को,  
मैं रफता-रफता चलता था।  
कदमों पर तेरे कुर्बान,  
है ये जीवन भर एहसान,  
ए माँ तेरी याद आई।

मेरे आने पर खुश हो जाती है,  
मेरे जाने पर उदासी है,  
ए माँ तेरी ममता का,  
यह आंचल मुझे याद आता है।  
ख्वाहिश यही है माँ  
करता रहूँ तेरा दीदार,  
ए माँ तेरी याद आई।

आती है तू ख्वाबों में अक्सर,  
जाने का तेरा है गम दिल पर,  
ए माँ तेरा दीदार करूँ,  
बेताबी है मेरी आंखों पर,  
होगी ना जो तेरी दीद,  
मैं कैसे करूँगा ईद।  
ए माँ तेरी याद आई।

आंखों में लहू लेकर  
लिखता हूँ मैं,  
तेरी यादों में खोए  
हुए लिखता हूँ मैं,  
खुशबू क्यों ना आए  
मेरी गजल से फरहान,  
आसुओं से वुजू करके लिखता हूँ मैं।

**मोहम्मद फरहान**

## प्रकृति

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसी प्रकृति पर निर्भर रहता है। लेकिन विकास की इस दौड़ में अपनी आवश्यकताओं के दोहन के लिए हमारी इस प्रकृति को बहुत क्षति पहुंचायी है। हमारी भारतीय संस्कृति में हमने इस धरती को मां का स्वरूप दिया है, जिसे हम धरती मां कहकर पुकारते हैं। यह बात सत्य भी है क्योंकि कहा गया है कि, 'मातृभूमिः' अर्थात् यह पृथ्वी मेरी माता है और मैं इसका पुत्र। इस बात की सार्थकता स्वतः ही प्रतिपादित हो जाती है, क्योंकि जिस प्रकार एक माता अपने बच्चे का लालन-पालन करती है, उसे बड़ा करती है उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। उसी प्रकार यह धरती रूपी माता हमें अन्न प्रदान करती है, हमारी सभी जरूरी वस्तुएं अन्न, जल, प्राणवायु इत्यादि सभी चीज यह धरती ही हमें देती है।



राष्ट्रीय कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने प्रकृति का कुछ इस तरह वर्णन किया है कवि ने अपनी इस कविता के माध्यम से प्रकृति का इतना सुंदर चित्रण किया है जो धरती मां के रूप की सार्थकता को सिद्ध करती है। आज हम देखते हैं कि दक्षिण भारत की एक नदी कावेरी लगभग पूरी तरह सूख चुकी है। लाखों किसान और कर्नाटक, तमिलनाडु के लोग इसी नदी पर निर्भर थे। पर वहां कावेरी के सूख जाने से भयावह जल संकट पैदा हो गया है। इसका कारण क्या है? पिछले 25 सालों में कावेरी घाटी के किनारे लगभग 208 करोड़ से अधिक पेड़ काटे जा चुके हैं, यही कारण है कि कावेरी की इतनी दयनीय स्थिति है। यह सिर्फ कावेरी की ही नहीं अपितु भारत की कई ऐसी नदियां हैं जो सूख चुकी हैं और अपना अस्तित्व खो चुकी हैं। इन सभी को बचाने का एक मात्र ही उपाय है, वृक्षारोपण। पेड़ वर्षा के जल को सोख कर भूजल स्तर को बढ़ाते हैं। वृक्ष जमीन के अंदर छोटे-छोटे छिद्र कर वर्षा-जल का पानी जमीन के अंदर से होते हुए हमारे नदियों में पुनः प्रवाहित होता है। वृक्ष लगाना इसलिए भी जरूरी है कि हमारी 80% पानी की पूर्ति वर्षा के माध्यम से होती है एवं यदि हम पेड़ लगाएं तो बाढ़ और सूखा दोनों संकटों से बचा जा सकता है। प्रकृति साफ-सुथरी और हरी भरी बनी रहती है।

इस धरती पर हम लोड लोड करके पले हैं,  
घुटनों के बल सरक-सरक कर हम बड़े हुए।  
तू जननी हम संतान तेरे तूने हमें बड़ा किया,  
तेरा संरक्षण हमसे ही होगा।

अविनाश

मेथमेटिक्स, ओनर्स (द्वितीय वर्ष)



## मूर्तिकार

गिरजाघर में भरी दोपहर में शांति का माहौल छाया है।  
फर्श के पत्थर के मन में एक अजीब सा ख्याल आया है।  
पूछ बैठा अपने सामने खड़ी थी मूर्ति से  
यह क्या बात हुई भाई आए तो दोनों साथ थे।  
तुझे भी वहीं से खोदा था।  
मैं भी वहीं से निकला था  
फिर ऐसा क्या हुआ कि आज लोग मुझ पर चल कर आते हैं।  
और तेरे सामने हाथ जोड़ शब्द गुनगुनाते हैं।  
मूर्ति के पत्थर ने अब चुप्पी तोड़ी बोल बैठा हूं।  
हां भाई मुझे पता है हम दोनों साथ आए थे।  
तुझे भी वहीं से खोदा था मैं भी वहीं से निकला था।  
पर ट्रक से उतारते वक्त मुझ पर एक मूर्तिकार की नजर पड़ गई।  
उस मूर्तिकार ने मुझे खूब छेनी हथौड़े की मार दी।  
मुझे खूब दर्द दिया उस मूर्तिकार ने मुझ पर जी जान लगा दी।  
और मुझे पत्थर से तब्दील कर शानदार मूर्ति बना दी।  
मैं मूर्ति यूं ही नहीं बना हूं कई बार बनकर बिगड़ा और बिगड़ कर बना हूं।  
इतने में फर्श के पत्थर ने लपाक से जवाब दिया  
मान गए भाई तुम क्यों ऊपर हो अब जान लिया तुम ही सबसे सुपर हो।  
अब जाना क्यों तुम हजारों लोगों के हाथ जोड़ने का पात्र बनते हो  
दर्द सहना पड़ता है, ठोकर खानी पड़ती है।  
इस पूरे किस्से को सुन मेरी अक्ल ने भी दौड़ लगाई।  
तब जाकर मेरे बात समझ आई  
हमारे बड़े भी हमें खूब छेनी हथौड़ी की मार और ताने देते हैं।  
ताकि हम भी एक शानदार मूर्ति बन सके  
शायद यही वजह है मैं कहने को उत्सुक हूं कि  
यूं ही नहीं अपने पैरों पर खड़े हैं।  
कई बार बनकर बिगड़ी और बिगड़ कर बनी हूं।

अंजलि बीजेएमसी  
(2nd year)

## काफिया-ए-अहसास

ऐ मेरे दिल का सुकूं चैन चुराने वाले,  
तू बेवफ़ा है ये बताते हैं ज़माने वाले ।

तुमने भी छानी हुई है खाक-ए-सेहरा शायद,  
तुम भी लगते हो मोहब्बत के घराने वाले ।

इतना तो तू मेरे पहलू में ठहरा भी नहीं,  
जितने किस्से बयां करते हैं सुनाने वाले ।

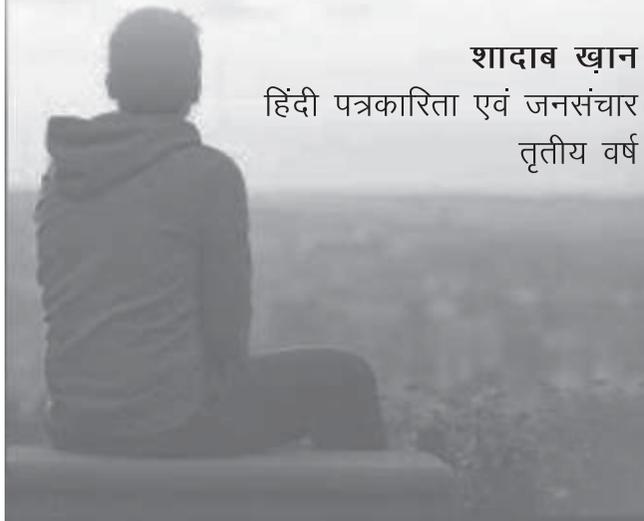
जिस तरह मैंने तुझे पाया है वो क्या पाएंगे,  
तेरे बदन के लिए तुझको चाहने वाले ।

वो अहल-ए-बज़्म से बस बात ही तो करता था,  
होश से जाते रहे होश से जाने वाले ।

मुझपे ये फ़र्ज़ है रूठा रहूं अज़ल तक मैं,  
नहीं आते हैं तो ना आएँ मनाने वाले ।

ज़िंदा कौमैं हैं, सोई जाती हैं मुर्दों की तरह,  
जाने कब आएंगे कौमों को जगाने वाले ।

मिट ही जाता है हर इक दौर में यज़ीद-ओ-जुलम,  
ज़िंदा रह जाते हैं मोहम्मद के घराने वाले ।



**शादाब ख़ान**  
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार  
तृतीय वर्ष

## मुसाफिर हूं तुम्हारी तरह

मुसाफिर हूं तुम्हारी तरह  
नित नये, अनगिनत, अनजान चेहरों को ताकता  
कुछ याद कर कुछ भूल जाता  
मंजिल के सफर में निकल पड़ा,  
मुसाफिर हूं तुम्हारी तरह!

मन में उभरता एक सवाल हूं।  
अनसुलझा, शांत हूं, उन्माद हूं।  
आंधियों से लड़ता एक इंसान हूं,  
तुम्हारी तरह ।

नाफरमानों की महफिल में गुमनाम हूं,  
अज्ञात एक पहचान हूं,  
टूटते रिश्तों की दीवार हूं,  
अखंड, अथक, अटूट, अंत हूं,  
अनंत हूं, आरंभ हूं उम्मीद की  
तुम्हारी तरह ।

सूर्य से पिछड़ी एक किरण हूं,  
पर आस हूं विश्वास हूं,  
हूं शून्य और संपूर्ण भी  
देव भी दानव भी  
जो थक गया पर टला नहीं  
जो तुम्हारा है पर तुम्हारा नहीं,  
वही सच हूं जो हारा नहीं तुम्हारी तरह ।

**विकास कुमार**  
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग  
(द्वितीय वर्ष)

## संघर्ष

दिल्ली में एक परिवार रहता था जिसमें 4 सदस्य थे। घर के मुखिया किसानी करते थे। लगभग सभी उसी कार्य में हाथ बंटाते थे। घर में बेटी बड़ी थी उसके बाद एक लड़का था। परिवार खुशहाल था। खुशी-खुशी वो कार्य किया करते थे। परंतु एक दिन जब यह खबर आई कि उनके खेतों को सरकार ने खरीद लिया है और अब वहां पर सरकारी बिल्डिंग बनाए जाएंगे। तब वह परिवार हताश और निराश हो गया था कि अब क्या होगा! खेती उनकी रोजी रोटी का एकमात्र जरिया था। वह परिवार उस जगह को छोड़कर दूसरी जगह चला गया और वहां भी खेती करने लगे। यह खेती घर के मुखिया नसीम को उनके बड़े भाई ने दिलाई थी। लड़का और लड़की पढ़ाई करते थे। कुछ समय वहां खेती करने के बाद नसीम के साले की शादी थी जो कि बिहार के जिला पटना में थे। संपूर्ण परिवार खुशी-खुशी उस शादी में जाने के लिए सुबह ही अपने घर से रवाना हो गए। दोपहर में नसीम के पास फोन आता है कि तुम्हारे घर में आग लग गई है। लेकिन यह खबर सुनने के बाद भी वह शादी में शरीक हुए। वापस आने के बाद उन्होंने पाया कि उनका घर पूरी तरह से जल चुका है। कुछ भी नहीं बचा यहां तक कि उनके जीवन भर की जो पूंजी थी वह भी जलकर खाक हो चुकी थी।

नसीम ने अपने बड़े भाइयों से मदद मांगी पर किसी ने उसका साथ नहीं दिया। नसीम की बीवी इस समय प्रेगनेंट थी। मदद न मिलने के कारण उन्हें रात सड़क के किनारे फुटपाथ पर गुजारनी पड़ती थी। कुछ दिन इसी तरह ही बीते फिर उन्हीं के गांव के किसी व्यक्ति ने उन्हें एक जगह किराए पर रहने के लिए एक कमरा दिलाया। नसीम अब मजदूरी करता था और उसकी बीवी लोगों के बर्तन मांजती जिससे कुछ कमाई होती थी। कुछ महीने इसी तरह बीते फिर नसीम के एक भाई ने उन्हें खेती करने के लिए जमीन दिला दी जो कि अच्छी नहीं थी उसमें आधे खेत में फसल होती थी और आधे में नहीं। नसीम ने इन परिस्थितियों से हार नहीं मानी और लगातार परिश्रम करता रहा। ऐसा करके उसने जो कमाया उससे अपनी बड़ी बेटी की शादी कर दी। नसीम का बेटा स्कूल में फेल हो गया और नसीम ने उसके लिए बड़े-बड़े सपने देखे थे कि वह अपने बेटे को बड़ा अफसर बनाएगा। परंतु बेटे के फेल होने से उसके सपने टूटते दिखाई दिए। दुनिया के तानों से नसीम के बेटे ने आत्महत्या करने की सोची पर नसीम ने उसे समझाया और आगे बढ़ते रहने को कहा। नसीम उसे समझाता कि तुम मेहनत करो बेटा अल्लाह तुम्हें इसका फल जरूर देगा। नसीम के कहने पर उसके बेटे ने पढ़ाई पर ध्यान दिया और उसने 10वीं और 12वीं में अच्छे अंक भी प्राप्त किए। अब उसका नामांकन दिल्ली विश्वविद्यालय में हो चुका था। इनकी जिंदगी फिर से खुशहाल हो गई थी परंतु इन सभी के जीवन में फिर से दुखों के बादल ने अंगड़ाई ली। नसीम जहां खेती कर रहा था उस जमीन को सरकार ने खरीद ली और वहां पर रह रहे किसानों को हटाने का निर्णय लिया। नसीम के लिए अब समस्या यह थी कि वह अपने बेटे की पढ़ाई पूरी कैसे करवाएगा। नसीम ने अभी भी हार नहीं मानी और कड़ी मेहनत करने का निर्णय लिया। परंतु वह अब बूढ़ा हो चुका था उसने इरादा तो कर लिया पर शायद ऐसा करने में असमर्थ सा महसूस करता था। अब तो नसीम को ऐसा लगता कि जैसे समस्याएं उसके सामने थी वैसे ही समस्याएं उसके बेटे के सामने भी रहेंगी क्योंकि पढ़ाई पूरी होने में अभी समय था और नसीम मेहनत करने में असमर्थ हो चुका था।

**रिजवान अली**  
हिंदी विभाग (द्वितीय वर्ष)

## प्रबल कौन भाग्य या कर्म

प्रबलता की बात करूं तो कर्म हमेशा भाग्य पर अपनी प्रबल दावेदारी देती रही है, चाहे वह छात्रों, अध्यापकों, कर्मचारी, प्रबंधक हों वह सभी अपने-अपने जगह पर हैं तो इसका सिर्फ एक ही कारण है और वह अपनी परिश्रम से कर्म करते हैं।



मेरा मानना है किसी भी व्यक्ति को सर्वश्रेष्ठ उसका परिश्रम बनाता है ना कि भाग्य। भाग्य तो

हर जगह उपस्थित है बस उसे देखने का नजरिया चाहिए। उदाहरण के तौर पर सूर्य हमेशा पूर्व से निकलता है पर यह कहना सही नहीं होगा क्योंकि सूर्य तो कभी उदय होता ही नहीं वह अपने जगह पर स्थित है परंतु पृथ्वी उसके तरफ-तरफ अपना रुख अपनाती है, ठीक उसी प्रकार से भाग्योदय है। भाग्य हर जगह उपस्थित है बस हमें इसके तरफ रुख करने की देरी है। दुनिया के सबसे बड़े महाकाव्य महाभारत में कर्म को ही श्रेष्ठ माना गया है। कृष्णा भी अपने कर्म के कारण ही सर्वश्रेष्ठ है। कर्म का संबंध कार्य से है, जैसा कि श्री कृष्ण ने कहा है कार्य किए जा सफलता की चिंता मत कर। हमारा धर्म भी कर्म करने को प्रेरित करता है चाहे वह व्यक्ति हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई हो सबको अपना धर्म बचाना है तो कर्म करना बहुत जरूरी है, बिना कर्म के तो भाग्य भी साथ छोड़ देता है, अगर जीवन में सफलता की ओर जाना है तो कर्मनिष्ठा से किसी भी कार्य को करें तो उसके साथ किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं रह जाएगी।

भाग्य का क्या है आज तुम्हारे पास है तो कल किसी और के पास पर जीवन में हमने जो भी कर्म किए हैं चाहे वह अच्छे हों या बुरे इससे ही किसी भी व्यक्ति का अस्तित्व का पता लगाया जा सकता है कि वह किस कार्य को करने में मदद करेगा। अध्यापक कर्म है कि वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे और बच्चों का कर्म है कि वह अपने आने वाली पीढ़ी को अपना ज्ञान देकर अपने कर्मों का परिचय दिया जाए। हम किसी भी व्यक्ति को उसके कर्मों से पहचानते हैं और लोग कहते हैं कि वह व्यक्ति आज अपने भाग्य, धर्म से नहीं बल्कि अपने कर्मों से सर्वश्रेष्ठ है।

आज लोग किसी भी ग्रंथ को पढ़ते हैं चाहे वह भगवत गीता हो, कुरान हो, बाइबल हो या महाभारत हो सब अपने अपने धर्मों के किताब में कर्म को ढूंढने की कोशिश करते हैं ताकि वे बहुत अच्छे कर्म कर सकें और लोगों के बीच अपना एक अस्तित्व बनाए रखें। लोग उन्हें भी उनके कर्मों के कारण जानें इसलिए एक धारणा बना लीजिए कर्म किए जा और फल पाए जा। भाग्य के भरोसे मत रहिए हो सकता है, भाग्य आपके कर्मों के भरोसे बैठा हो।

**कृष्णा कुमार**

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

(प्रथम वर्ष)

## क्या धर्म को पहचानो तुम

क्या धर्म है पहचानो तुम, इतिहास खोल कर जानो तुम  
पुतले जलाना धर्म नहीं, क्या करना प्रकृति को दूषित भी एक अधर्म नहीं।

हर साल जलाकर रावण तुम कहते हो अधर्म का नाश हुआ,  
गलियों में चलती सीता को छोड़े उस रावण का कब जन्म हुआ,  
पुतलों में आग लगाने से पहले भीतर आग लगाओ तुम  
मानव में जो है पल रहा उस रावण को जलाओ तुम  
क्या धर्म है पहचानो तुम, इतिहास खोल कर जानो तुम

रावण की महिमा जानो तुम  
पहले जरा उसे पहचानो तुम  
शीश चढ़ा कर उसने अपना  
महादेव को प्रसन्न किया  
दस सिर का वरदान था मांगा  
दशानन तब वह कहलाया था  
देख उसका प्रचंड रूप  
मृत्यु लोक घबराया था

भ्रम कर न लोगों से, रावण को गलत न समझो तुम  
था कौन रावण? पहचानो तुम, इतिहास खोल कर जानो तुम

राजा जनक ने स्वयंवर रचाया  
वधू पद पर सीता को बैठाया  
रख शिव धनुष सभा में पर  
कोई न धनुष को तोड़ पाया

हार गई थी सभा सारी, हर राजा वहां घबराया  
रावण ने भी सम्मान था हारा, वह भी धनुष ना उठा पाया

रावण ने बड़ा ज्ञान पाया था

सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण का पद उसके हिस्से आया था।

भूल के राजकाज सारा

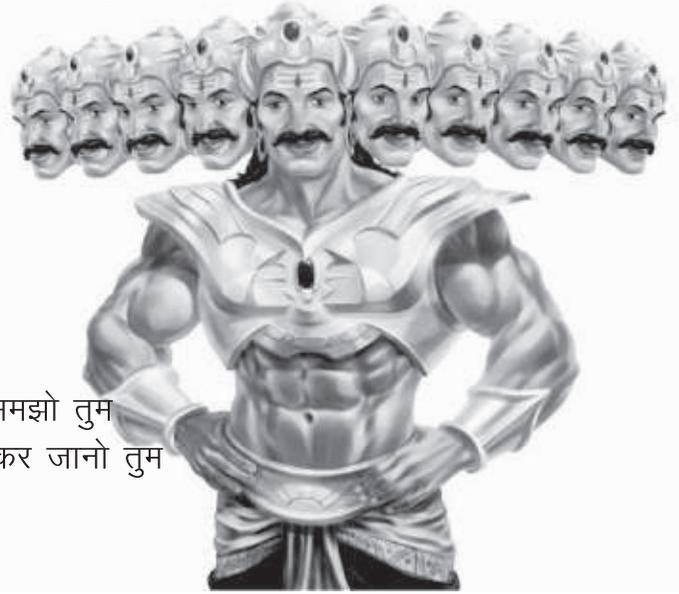
बहन के सम्मान पे आई आंच

प्रतिशोध की आग में पूरी दुनिया को हिलाया था

माना रखा सीता को बंधक बनाकर

पर उसने उसे हाथ ना लगाया था

हां कहते हो रावण तुम मुझको रावण बनना चाहता हूं  
पर शर्त मेरी है इतनी सी अंहकार न भरना चाहता हूं।



शिवा शर्मा

हिंदी विभाग (प्रथम वर्ष)

## संघर्ष से सिद्धि तक

एक रोज मैंने जाना जिंदगी की हकीकत को! बैठा हुआ सड़क के उस पार कोई अर्धनग्न बदन, चेहरे पर मानो राख की एक परत सी हो, पैरों में छाले, हाथ में रंगीन चमचमाते गुब्बारे हकीकत हैं, मैंने खुद अपनी आंखों से उसे देखा था। थोड़ा करीब जब गया उसके बड़ी खुशी हुई और चमक भरी मुस्कान से वह बोला, दस रुपये का एक है ले लो, मैं मौन रहा शांत—चुपचाप सा बस सोच में डूबा हुआ! दस रुपए के दो दे दूंगा अब तो ले लो ना? मैंने चुप्पी तोड़ी लड़खड़ाती जुबां से बोल पड़ा लाओ दे दो! तुम्हारा नाम क्या है? मुस्कुराती सी सूरत में जवाब आया मैं? मुझे नहीं पहचाना? मैं अस्तित्व हूँ। घर लौटकर मैं सिरहाने पर तकिया लगाए लेटा था तभी मैं उठ खड़ा हुआ मेरा जमीर मुझे था कह रहा— था कौन वो? चूंकि मुझमें इक आस थी बची कहीं थोड़ी प्यास थी पा लेने की उसे जिसे मैं चाहता था वह मेरा ख्वाब! वह अस्तित्व ही था, मैं ही था वह... जो मेरा वजूद था! वो रंगीन गुब्बारे नहीं वही मेरी सिद्धि थी। छाले लगे जो पांव में वही मेरा संघर्ष था हां मैंने पा लिया उस ख्वाब को जो मेरे अजीज था।

पारसमणि

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग (तृतीय वर्ष)

## प्रकृति

प्रकृति ने हमें मनुष्य बनाया था  
अबके जो हवा बहे  
उसमें पतंग ना उड़ाना  
जो कट चली अली के घर  
कहीं मुसलमां ना हो जाए  
और फिर छू ना सकोगे  
तुम गीता के सार को  
कहीं मांझे का रंग लगकर  
वो कुरान हो जाए  
पर जानते नहीं  
यदि पढ़ जाओ कोई एक  
तो ये भेद की धूल  
बयार हो जाए  
गीता का सार शायद

कुरान कह सकेगी  
एक बार अगर हम  
सिर्फ इंसान हो जाएं  
ये धर्म के बंधन  
कब तक रोकेंगे  
प्रकृति को  
या इरादा है कुछ ऐसा  
कि वो भी हैरान हो जाए  
उसने तो बस यहां  
मानुष बनाया था  
हम कहते हैं प्रकृति भी  
हिन्दू – मुस्लमां हो जाए।

चेतना काला

## वो पल याद हैं

जब स्कूल ना जाने के बहाने करते थे  
कभी पेट और सर दर्द का बहाना ही काम आते थे  
मम्मी—पापा के डर का हम  
अच्छे से फायदा उठाते थे ।

स्कूल बस से स्कूल जाने तक का अनुभव  
परीक्षा के दिन परीक्षा देने का सस्पेंस  
पिकनिक के दिन वो दिनभर का उत्साह  
और यहां तक पिछले दिन की हरकत की घबराहट ।

याद तो याद है अच्छी हो या बुरी  
दोनों ही जेहन में बस जाते हैं अधूरी हो या पूरी ।  
स्कूल पहुँचते ही असेंबली  
और फिर वहाँ ना जाने का बहाना  
बहाने मारने के ट्रिक्स हमारी रगों में दौड़ता है  
यहाँ एक का खत्म नहीं होता  
वहाँ दूसरे का चालू हो जाता है ।

क्लास पीरियड शुरू होते ही  
दूसरे सबजेक्ट का याद आना  
फिर चुपके से असाइनमेंट पूरा करना  
जब किस्मत का साथ ना हो  
तब टीचर की नजर हमपर पड़ना ।

वो लन्च बेल का बेसब्री से इन्तजार करना  
बेल बजते ही दोस्तों से उनके लन्च के बारे में पूछना  
एक टिफिन में 6—6 हाथ हुआ करते थे  
दोस्त सारे जब साथ खाते थे  
कैंटीन में फिर दोस्त की जेब खाली करते थे  
लन्च—ब्रेक अपने में ही एक महत्वपूर्ण हिस्सा था ।

‘दोस्तों से मिलना’ ‘दूसरे क्लास की खबर लेना’  
‘पढ़ाकू का, नोट्स बनाना’  
‘फॉइल पेपर से क्रिकेट खेलना’  
और बहुत कुछ  
मैथ्स का नाम सुनते ही ना जाने हमें क्या हो जाता था  
और पी.टी. पीरियड से पहले ही  
मन उत्साहित सा हो जाता था ।

अपना पहला प्यार भी, वहीं हुआ था  
हमारी नादानी थी या जो कुछ  
पर जब तक के लिए वही सच्चा था  
अटेंडेंस भी तो पहले से ज्यादा  
उसके वजह से ही होता था ।

लड़कियों को ताड़ना  
और फिर उनको उनके हिसाब से नंबर देना  
सीधे—सीधे दोस्त को  
उसको उसके नाम से छेड़ना ।

दोस्तों को उनके नाम से बुलाना  
हमारे उसूलों के खिलाफ था  
दोस्ती—यारी के मामले में हमारा  
हमेशा से बेहिसाब था ।

हमसे ज्यादा ज्ञानी तो शायद ही कोई होगा  
जो परीक्षा से एक रात पहले  
पूरा सिलेबस चाट सकता हो ।

वो कैंटीन के रोल और समोसे की आदत पड़ गई थी  
वो यादें भी हमारे संग कुछ  
इस तरह से खुद से जुड़ गई थी ।

आज भी क्लास—टीचर की बहुत याद आती है  
जो हमेशा से सहायक थी  
हम चाहे कितने भी शरारती हों  
तब भी कहती,  
हमारी क्लास औरों से बेस्ट थी।

“लेट होने के बाद भी, स्कूल बस का वेट करना”  
“दोस्ती—यारी हमेशा, निभाने के वादे करना”  
“पेन्सिल का जमाना गया, लेड—पेन से लिखना”  
“वॉशरूम के बाद, पूरे स्कूल का चक्कर लगाना।

ब्रिजित  
प्रथम वर्ष

## माँ

माँ शब्द बोलने और सुनने में बहुत छोटा है। परंतु एक शब्द में पूरी दुनिया समा जाती है। माँ वो होती है जो अपने बच्चों के चेहरे देखकर ही उनकी परेशानियों को जान पहचान लेती है। माँ हमेशा अपने बच्चे पर आने वाली दुविधा से लड़ती है। अपने बच्चे को हर सुख सुविधा देने की कोशिश करती है। सदा वह अपने बच्चे की पहचान समाज में बनाती है और ऐसी पहचान जिसपर कभी कोई उंगली न उठे यही मैं अपनी माँ का संस्मरण लिख रही हूँ। मेरी माँ ने मुझे बचपन से बहुत प्यार दिया। हम मध्यम वर्ग से हैं। परंतु उन्होंने किसी वस्तु या किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं होने दी। आज भी मैं अपनी माँ से जो भी माँगती हूँ। वो मुझे मिल जाता है। जब भी मैं कहती हूँ मम्मी मुझे ये खाना है तो वह उस चीज को बनाने में लग जाती हैं। ताकि मुझे बुरा ना लगे मेरी मम्मी ने मुझे एक अच्छी लड़की ही नहीं साथ ही समाज में रहने और खुलकर जीवन व्यतीत करने वाली लड़की बनाया। कुछ पाबंदियाँ भी लगाई परंतु यह भी समझाया कि ये पाबंदियाँ क्यों लगाई। पाबंदियाँ लगाई तभी तो आज मैं गर्व से समाज में चलती हूँ। मेरे ऊपर एक औरत ने यह इल्जाम भी लगाया कि तुम्हारी बेटा एक लड़के के साथ घूम रही थी, मेरी माँ ने मेरा साथ देते हुए कहा कि ये मेरा भाई है। मेरी माँ मुझे हर बुराइयों से बचाती हैं और परेशानियों से डटकर सामना करना सिखाती हैं। मेरी माँ ने कभी भी मुझ में और मेरे भाई में कोई अंतर या भेदभाव नहीं किया। जो चीज मुझे खाने के लिए मिलती है वही मेरे भाई को भी और मैं यही चाहती हूँ कि जो सुख मुझे मेरी माँ देती हैं वही सुख मैं अपनी माँ को भविष्य में दूँ। जो माँ अपने बच्चों के लिए दुनिया से लड़ जाती है उन्हें भविष्य में कभी भी वृद्धा आश्रम न भेजें और अपने ऊपर बोझ न समझें क्योंकि वो बहुत परेशानियों का सामना कर के आपको इस मुकाम तक पहुंचाती है।



श्वेता कुमारी  
हिन्दी विभाग (प्रथम वर्ष)



## हाँ मैं लिखूंगा



तुम लिखना चाँद की खामोशियाँ...!  
मैं पत्तों की सरसराहट लिखूंगा...!!

तुम लिखना रात की मदहोशियाँ...!  
मैं साँसों की गरमाहट लिखूंगा...!!

तुम लिखना सुबह का इंतजार...!  
मैं परिंदों की चहचहाहट लिखूंगा...!!

तुम लिखना अपनी हर चाहत...!  
मैं तुमको अपनी चाहत लिखूंगा...!!

कहानी लिखूंगा, किरदार लिखूंगा...!!

अगर तुम मिल जाओ, खुशिया बे हिसाब लिखूंगा...!!

कुछ किस्से लिखूंगा, कुछ हिसाब लिखूंगा...!  
अभी मसरूफ हूँ थोड़ा, पर एक दिन तुमपे किताब लिखूंगा...!!

कुछ सवाल लिखूंगा, कुछ जवाब लिखूंगा...!  
तुम्हारी आँखों की गहराई से, सुबह शाम लिखूंगा...!!

हर एक एक लम्हे को, एक एक साल लिखूंगा...!

तुमको मशहूर, खुद को बदनाम लिखूंगा...!!

मैं तो नसीब का मारा हूँ, तो क्या हुआ...!  
तुमको देवता, खुद को इंसान लिखूंगा...!!

लिखे होंगे किस्से, तुमने भी बहुत...!  
पर जो मैं लिखूंगा, लाजवाब लिखूंगा...!!

लिखूंगा तुम्हें बचपन वाला इतवार कभी...!  
तो कभी गर्मियों की छुट्टी का इंतजार लिखूंगा...!!

कल का भरोसा कम रखता हूँ मैं...!  
तो आज सहर होने तक तेरा नाम लिखूंगा...!!

तुम चाँद से रोशन हो जानता हूँ मैं...!  
फिर भी तुम्हे ईद से पहले वाली शाम लिखूंगा...!!

नफरत के लिए दुनिया बहुत है...!  
मैं सारे किस्से मुहब्बत के तेरे नाम लिखूंगा...!!

मैं रुह का प्यासा हूँ मुझे सुकून की तलाश है...!  
मैं फिर भी अपने किस्से तेरे नाम लिखूंगा...!!

मैं मज़हबों में विश्वास नहीं रखता...!  
पर कभी रहीम तो कभी तुम्हे राम लिखूंगा...!!

कह दिया जो भी कहना था, गर फिर भी कुछ बाकी हो...  
तो खुद को आगाज़ तुमको, अंजाम लिखूंगा...!!

अंकुर रगुवंशी

## स्त्री

मां की कोख से जन्मी  
प्यारी नन्ही कली हूं मैं  
नादान मासूम सी आई हूं इस दुनिया में  
न कोई ख्वाब था न कोई सपना  
सारा जहां लगता है बस अपना  
आज मिला है ऐसा दर्पण  
बस मां के चरणों में हूं अर्पण  
जिसके सिवा न कोई अपना  
सब है झूठा सपना  
स्त्री की ऐसी है माया  
जिसे आज तक कोई न समझ पाया  
स्त्री का करना सम्मान  
वरना मिलेगा सदा अपमान  
स्त्री के बिना न सफल हो पाओगे  
जो मिलेगा उसे भी खो जाओगे ।



“आसान नहीं है किरदार औरत का निभा पाना  
एक सफेद चादर है, दाग तो पानी से भी लग जाता है।”

एक स्त्री जो अपने सम्मान के लिए कुछ भी कर सकती है, क्या उसे समाज के बराबरी का हक मिलना जरूरी नहीं? उसे सम्मान का बराबर अधिकार है। जो कि उसे मिल नहीं रहा। आज समाज क्या पूरे भारत वर्ष में हम आंकड़े देखें पीड़ित महिलाओं के तो करोड़ों में हैं। जगह-जगह महिलाओं का शोषण किया जा रहा है जिससे वह आत्महत्या तक कर लेती हैं। उन्हें समान सम्मान नहीं मिल रहा। न जाने ऐसे दुनिया भर में कितने किस्से होते हैं जिनका हमें पता भी नहीं चल पाता है। समाज में बस स्त्री को प्रयोग में लाने वाली वस्तु समझ लिया जाता है।

एक तरफ महिलाएं उन्नति कर आगे बढ़ रहीं हैं, दूसरी तरफ वह पीड़ित भी हो रही हैं जिसके कारण वह उस मात्रा में आगे नहीं बढ़ पाती हैं जिस मात्रा में उन्हें आगे आना चाहिए।

क्यों एक स्त्री को ऐसे देखा जाता है कि वह तो एक प्रकार से काम में लाने वाली चीज़ है। सही कहा जाता है कि स्त्री पैदा नहीं होती, स्त्री बनाई जाती है। कैसे? उस सोच से, वातावरण से, उसके आसपास हो रहे माहौल से, इन सभी कारणों से। स्त्री जन्मजात नहीं होती, वह तो बना दी जाती है।

“कभी ना हो स्त्री का अपमान,  
हर घर में हो उसका सम्मान।”

स्त्री भी सम्मान हक पाने की अधिकारी है। उसे अपने आप को ऊपर लाने के लिए स्वयं भी अपने कदम उठाने चाहिए। और हमेशा एक आदर्श स्त्री की तरह अपने आपको उजागर करना चाहिए। शादी के आगे भी स्त्री का जीवन है। उसे अपना जीवन जीने दिया जाए। वह भी अपना हक प्राप्त करना चाहती है। उसे भी हक है अपना जीवन साथी चुनने का। उसका सहयोग करना चाहिए। स्त्री जीवन का आधार है। उसके बिना जीवन संभव नहीं है। स्त्री सर्वोपरि है। स्त्री का सम्मान करें।

ललिता

हिंदी विभाग (तृतीय वर्ष)

## माँ का आँचल

माँ का आँचल वो छाता है जिसके नीचे बरसात नहीं,  
केवल खुशियों की बौछार है,  
माँ के आँचल में नींद तो है,  
लेकिन सुखों का सवेरा भी ॥

माँ के आँचल में खुशियों की बौछार है तो,  
लोरी की गूँज भी है,  
माँ के आँचल में तो जन्नत है,  
और ये जन्नत चारों धामों के जैसी है ॥

माँ के आँचल ने युगों-युगों से इस बह्मांड को पाला,  
लेकिन बदले में माँ ने क्या माँगा ?  
खुद रूखा-सूखा खाकर,  
बस अपने बच्चों के लिए  
सुखी जीवन माँगा ॥

**शिल्पी कुमारी**  
हिंदी पत्रकारिता एवं  
जनसंचार विभाग  
(प्रथम वर्ष)



## मेहनती

बेजुबाँ परिंदे हैं  
मगर ख्वाहिशें हजारों हैं  
कोई रजा अगर पूछे  
तो कहना हम मेहनती हैं।

मेहनती होना बेशक आसान नहीं  
कोई बिना कुछ करे ही हार मान जाए  
तो उससे कहना वो इंसान नहीं।

वह लाखों कोशिशें करते हैं तुम्हें सताने की  
तुम बस एक प्रयास करो उन्हें हराने की  
वो मान जाएंगे एक दिन हर बातें कहानी की  
तुम्हें बस जरूरत है कुछ हासिल कर दिखाने की।

वह सब तुम्हारे आगे मस्तक टेकेंगे  
वह सब तुम्हारी सारी हसरत देखेंगे  
तुम बस रुकना मत और मेहनत करना।

वह सब तुम्हारे हर सच होते सपने देखेंगे  
कोई बोले तो उसे कहना हम मेहनती हैं  
कोई टोके तो उसे कहना हम थमते नहीं।  
क्योंकि हम मेहनती हैं।

अशवनी

इतिहास (प्रथम वर्ष)

## मन में कोई अल्फाज़ है क्या

कि खुदा करे ऐसी रहमत तुझ पर  
कि तेरी जमीं की आसमां पर मूरत बन जाए।

कि खुदा करे ऐसी रहमत मुझ पर  
कि मेरा रंग तेरी सूरत बन जाए।

मुझे नफरतों से मोहब्बत सी हो गई है  
भले तुम मतलबी सही लेकिन न जाने  
क्यों तुमसे दूर जाने की ख्वाहिश सी हो गई है।

चुप तो तुम तब भी थी, चुप तो तुम अब भी हो  
लेकिन सिर्फ फर्क इतना है कि अब इन कानों को  
तुम्हारे अल्फाज़ों को सुनने की आदत सी हो गई है।

टूटे हुए पत्तों को उठाकर मैंने साफ कर दिया  
कुछ पत्थरों की मदद से लिख कर उस पर तेरा नाम  
मैंने राख कर दिया।

मेरे छज्जे से उसके छज्जे की दूरी कुछ ना थी  
मुझे मालूम था कि कुछ होगा नहीं  
पर मेरी कोशिश में कमी कुछ न थी।

मैं चल कर घूम कर लौट के देखता हुआ  
पर उसकी खूबसूरती में कमी कुछ न थी।

क्या देख रहे हो क्या कोई बात है लगता है  
लड़खड़ा रहे हो मन में कोई अल्फाज़ है क्या,  
घूर रहे हो लगता है तुम्हें मुझसे प्यार है क्या।

सचिन चौहान  
बी ए प्रोग्राम (द्वितीय वर्ष)

## आखिर क्यों?

इन अंधेरी रातों को सूरज सा जलाते हुए  
हम आज सड़कों पर निकले हैं।  
इंसाफ इंसाफ चिल्लाते हुए  
पर न जाने क्यों इस शोर में भी  
मुझे कुछ नहीं सुनाई देता है।  
और अचानक उसका बचपन  
मुझसे आकर ये कहता है –  
मृत नहीं है मेरी देह  
बस मिट्टी में जगह है बना रही  
मौत तो उस मासूमियत को मिली  
जो समय में है दफना गई  
उसकी बातें सुनकर भी  
मेरी आंखें नम नहीं हो पाती  
खुद के लिए घृणा भर उठी  
पर आवाज मूक हो जाती  
और ऐसा ही होता है  
जब घटनाएं घटती हैं  
हम कितना भी गुस्सा करें  
पर ये जनता बस तमाशबीन ही बनती है  
असल में हम इंतजार करते हैं  
किसी हादसे के होने का  
किसी निर्भया के रोने का  
और फिर कभी जब हमारी पीढ़ी  
नारेबाजी में लग जाती है  
तब भीड़ चीरता हुआ एक सवाल आता है  
की आखिर क्यों एक लड़की  
आसिफा बन जाती है?

चेतना काला  
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग  
(प्रथम वर्ष)

## विभिन्नताओं के लिए जाना जाता है हमारा भारत

विभिन्नताओं के लिए जाना जाता है हमारा भारत  
पर करनी है मुझे इस मां से बच्चों की शिकायत ।  
लड़कर अपने आप में बदल सी गई है इनकी आदत ।

करने लगे हैं यह एक वर्ग के ठेकेदारों की अंधभक्ति,  
क्यों भूलने लगे हैं विवेक का यह सपना,  
कि विश्व गुरु बने यह भारत अपना ।

क्यों मिटने सी लगी है सरदार की 'वह एकता का मंत्र',  
विभिन्नताएं होकर भी जिसमें थी ताकत अनंत ।  
कैसे भूल गए तुम भी सावरकर की कहानी?  
जिसने भारत मां के लिए दी थी अविश्वसनीय कुर्बानी ।

है हमारा इतिहास अमर  
जिसके आगे स्वयं झुकता है शिखर ।  
फिर क्यों बंट रहे हैं हम पहर दर पहर ।  
अपनी अखंडता खत्म करने की ओर बढ़ रहे अग्रसर ।

लगता है बच सा गया है गुलामी का असर ।  
अगर खत्म कर रहे हो भारत मां का महत्त्व,  
सोच लो फिर कैसे बचाओगे अपना अस्तित्व ।

कभी लड़ पड़ते हम बेतुकी बातों पर,  
ना कहेंगे हम वंदे मातरम्  
इसकी इजाजत न देता है हमारा धर्म ।

अरे कह तो दे तेरे लिए देश बड़ा या धर्म?  
कलाम ने तो नहीं की थी कभी इस पे शिकायत,  
क्योंकि अब बात बात पर लड़ना बन गई है हमारी आदत ।

बड़ा अच्छा कहा है किसी ने कि,  
हमने तो गीता—कुरान को आपस में लड़ते नहीं देखा,  
और जो लड़ते हैं इनके लिए उन्हें पढ़ते नहीं देखा ।

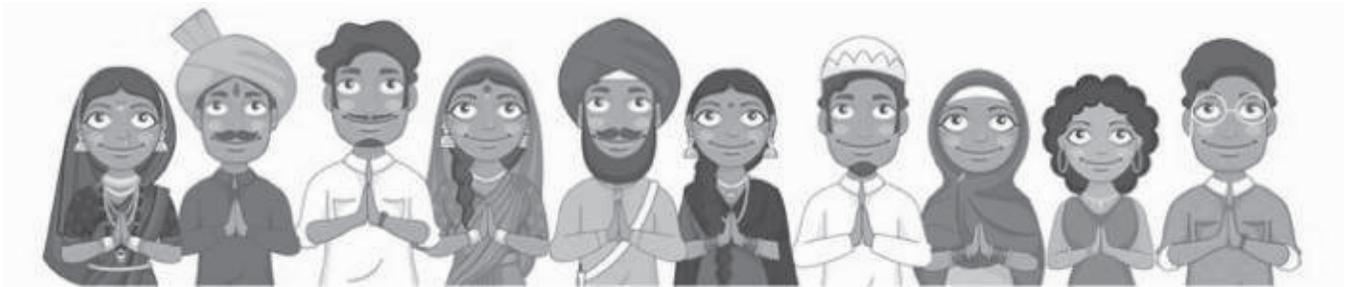
कभी आते हैं हम किसी फिल्म के विरोध में,  
फूंक देते हैं सारा शहर,  
अरे आओ कभी उन लोगों के विरोध में  
जो फूंक देते हैं गरीबों का घर ।

क्या हम एक नहीं हो सकते?  
इस भेदभाव भरे विचार को तोड़ नहीं सकते?  
आओ साकार करो विवेक का वह सपना  
बनाएं ऐसा भारत जिनमें हो हर कोई अपना ।

तोड़ दें सारे भेदभाव की दीवारों को  
बुझा दें सारे देश विरोधी अंगारों को ।

जहां पर हो गीता और कुरान एक समान,  
न हो किसी का भी अपमान  
आखिर यही तो कहता है हमारा वेद—पुराण ।

साक्षी कुमारी  
राजनीति विज्ञान



## प्रौद्योगिकी और मानव स्वास्थ्य

आज के समय में पूरा विश्व जिन सुविधाओं का भोग कर रहा है उसमें प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा योगदान है। मनुष्य द्वारा किए जाने वाले हर कार्य को सरल, सहज व सारी समस्याओं का समाधान करने में सहायता करने वाली प्रौद्योगिकी ही है। आज हम सभी प्रौद्योगिकी को ऐसे समझ सकते हैं कि मनुष्य के हर कार्य को ज्ञान विज्ञान की सहायता से बैठे-बैठे सरलता से किया जा सके आज का मनुष्य पूर्ण रूप से प्रौद्योगिकी पर निर्भर है। चाहे फिर खाने के लिए सब्जी मंगाना हो या बैंक में बड़ी से बड़ी रकम जमा कराना सब घर बैठे बैठे एक क्लिक से संभव है।

आज बिना प्रौद्योगिकी के मनुष्य अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता। परिवार से बात करने के लिए फोन, मनोरंजन के लिए टीवी, खाना पकाने के लिए मिक्सर ग्राइंडर, थोड़ी सी दूरी तय करने के लिए भी अपनी गाड़ियों का प्रयोग, ग्रीष्म ऋतू में एयरकण्डिशनर या कूलर, सर्दियों में हीटर, काम करने के लिए कंप्यूटर या लैपटॉप, खेलने के लिए विडियो गेम इतना ही नहीं आज का मानव बाल सुखाने जैसी छोटी सी क्रिया के लिए भी हेयर ड्रायर का सहारा लेता है।

अपने जीवन में आने वाली समस्या में प्रौद्योगिकी की सहायता लेना और प्रौद्योगिकी का आदि हो जाना दोनों में बहुत फर्क है। अगर आप अपने आस-पास के लोगों को देखें तो आपको दिखाई पड़ेगा कि वह आपस में वार्तालाप करने के बजाए हर व्यक्ति मोबाइल में ऊँगलियां चला रहा होगा नहीं तो कानों में लीड लगा के संगीत सुनता हुआ दिखाई देगा।

प्रौद्योगिकी के मानव स्वास्थ्य के प्रभाव को दो प्रकार से समझा जा सकता है।

**शारीरिक प्रभाव:**— प्रौद्योगिकी के कारण आज पूरा विश्व बैठे-बैठे कार्य कर रहा है हर व्यक्ति की शारीरिक क्रियाकलाप खत्म होने के कगार पर है मानव प्रौद्योगिकी का इतना आदी हो गया है कि वह हद से ज्यादा उसका प्रयोग कर रहा है जहां पहले शारीरिक क्रियाकलाप होते थे आज दफ्तरों में कंप्यूटर के आगे बैठने तक सीमित है जिससे रक्त संचालन पर प्रभाव पड़ता है पीठ व सिर दर्द भी होता है आंखों पर भी नकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ते हैं हेडफोन का इस्तेमाल करने से भी कानों को हानि पहुँचती है आज हर दूसरा व्यक्ति मोटापे, मधुमेह, हृदयरोग, रक्तचाप, आदि जैसी बीमारियों से पूरा विश्व जूझ रहा है घर से 5 मिनट की दूरी से सामान लाने के लिए भी लोग पैदल चलने के बजाए अपनी गाड़ियों का प्रयोग करते हैं।

**मानसिक प्रभाव:**— डॉक्टर के मुताबिक बच्चे को 8 घंटे व वयस्क को कम से कम 6 घंटों की नींद लेनी चाहिए परंतु आज मानव टीवी, स्मार्टफोन, लैपटॉप, कंप्यूटर का इतना आदी हो रहा है कि वह नींद की भी परवाह नहीं करता वह रात रात तक जागता रहता है प्रौद्योगिकी के असंतुलित



प्रयोग के कारण बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है उदाहरण के लिए हाल ही में आई दो गेम पब्जी और ब्लू व्हेल – पब्जी गेम के कारण बहुत से लोगों की मृत्यु हुई व बहुत से लोग सड़कों पर अपने आप को पुलिस समझते हुए पुलिस की वर्दी में घूमने लगे व पूरे दिन फोन में गेम खेलते हुए नज़र आये जिसके कारण इस गेम को प्ले स्टोर से ही डिलीट किया गया इसी की तरह ब्लू व्हेल गेम के कारण पूरी दुनिया में लगभग 250 लोगों की मृत्यु हुई अगर आप किसी रेस्टोरेंट में जाते हैं तो वहां भी आप को बच्चों के हाथ में आईपैड व बड़ों के हाथ में मोबाइल दिखाई देगा। लोगों के लिए रोटी कपड़ा मकान के बाद मोबाइल एक दैनिक आवश्यकता बन गई है जिसके कारण न केवल भारत में पूरे विश्व में मानसिक रूप से स्वास्थ्य लोगों की मात्रा घटती जा रही है।

प्रौद्योगिकी का उद्देश्य मानव की समस्याओं का हल करना था। मानव की सहायता करना था। परंतु आज मानव प्रौद्योगिकी का हृद से ज्यादा प्रयोग कर रहा है। जिसके कारण न केवल मानव जाति प्रभावित हो रही है बल्कि प्राकृतिक संसाधन भी नष्ट होते जा रहे हैं मनुष्य को उपकरण का उपयोग संतुलन में करना चाहिए व एक सीमा बनानी चाहिए।

गीतू

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग (प्रथम वर्ष)

## माता-पिता धरती पर भगवान

“कौन कहता है भगवान इस दुनिया में नहीं  
मां-बाप किसी खुदा से कम नहीं।”  
जब तू इस दुनिया में आया था,  
सबसे पहले मां का तूने दूध पिया था।  
पिता ने अपनी बाँहों का झूला झुलाया था,  
बहुत से रिश्ते नातों को तूने तब बनाया था।  
माँ है तो बच्चे को कोई गम नहीं,  
पिता है तो वह परमेश्वर से कम नहीं।  
“कौन कहता है भगवान इस दुनिया में नहीं,  
मां-बाप किसी खुदा से कम नहीं।।”

माँ के जैसा खाना कोई खिलाता नहीं,  
रोटी की बुरखियाँ तोड़-तोड़ कर कोई खिलाता नहीं।  
पिता की तरह कोई समझाता नहीं,  
बाजार से हर मांगी चीज कोई दिलाता नहीं।  
“कौन कहता है भगवान इस दुनिया में नहीं?  
मां-बाप किसी खुदा से कम नहीं।।”

लोगों ने घूमे चारों धाम हैं,  
लेकिन मेरे मुख पर सिर्फ माँ बाप का ही नाम है।  
रेलगाड़ी से सारे धामों की यात्रा मुझे करनी नहीं,  
मां बाप ही जहाँ ना खुश  
वहाँ की पोढ़ी मुझे चढ़नी ही नहीं।  
“कौन कहता है भगवान इस दुनिया में नहीं,  
मां-बाप किसी खुदा से कम नहीं।।”

आज की पीढ़ी को कहना चाहूंगी मैं यही,  
कि माँ बाप को कभी ना झुकाना होगा तुम्हारे लिए सही।  
टेलीफोन पर कितना भी दोस्तों से बतलाओ  
माँ बाप के आगे कभी, बोलना नहीं।  
घमंड कितना भी करो माँ बाप के आगे बोलना नहीं,  
“कौन कहता है भगवान इस दुनिया में नहीं,  
माँ-बाप किसी खुदा से कम नहीं।।”

प्रतिभा

बी.एस.ई (माईक्रोबाइलॉजी प्रथम वर्ष)

## Forever Grateful

Ram Lal Anand College is much beyond an institution, it denotes a culture. A culture of excellence, empowerment & enrichment. Being part of RLAC I have felt blessed & proud. The college has moulded my personality and clarified my vision for the future.

I had an interest in biology since a young age & wished to have a career in applied science where I could learn new things everyday & apply my knowledge towards innovative ideas. I was told RLAC had one of the best department for microbiology in University Of Delhi.

The microbiology department gave me a wonderful environment for growth. I am very grateful to all my professors for providing me with guidelines and inspiring me to achieve my goals. I got infinite love and support from my teachers at every step. Dr. Perna Diwan, Dr. Kusum R. Gupta & Dr. Nidhi S. Chandra will forever remain close to my heart. They gave me confidence and opportunities which I never imagined I would receive.

I will cherish the laughs I shared with my friends in the canteen, the moments I spent working till late evenings in the lab, going on field trips with my classmates & professors, participating in various clubs & co-curricular activities, all of which any student looks forward to in their college journey & I was lucky enough to have experienced it all at RLAC.

I have moved on to pursue M.Sc. Microbiology at University of Delhi, South Campus where I am working on growing my skill set as a scientist & as an entrepreneur. The experiences I had during my three years in RLAC has surely made me capable of hard work, tackling obstacles & striving for the bigger things in life. It gives me great pleasure to know that the current students of RLAC are setting the bar at even greater heights.

**Shrabani Snigdha**

B.Sc.(Hons). Microbiology  
(Batch of 2016-19)

## NIRBHAYA

I am a fighter  
I wonder why they chose me  
I remember every word I heard  
Those words are haunting me inside  
I cannot feel my senses  
But I can sense that my screams are enough  
To give them haunted dreams  
What I wanted was something worse than death  
For those who had ruined my life,  
My body, but not my soul.

**Manika**

B.Sc. (Hons) Geology First Year

## VINCENT VAN GOGH

I am insane and emotional  
I wonder about the vastness of the blue sea  
I see 50 shades of green which people assume  
Are all the same  
I drink yellow paint to make myself happy  
With one ear, sitting in rehab  
I hear the birds giving me  
Ideas for my next painting  
I am insane and emotional

**Savvy Gupta**

B.A. (Program) First Year



## HOPES OF A BETTER WORLD

As the gleam of light falls upon my barren soul  
Bombarding its elements to the core, where no mortal  
dares to think

Crafted and yarned by the imagination of wilderness  
Dumb and dead for others to follow

Embracing the random thoughts in a dark room  
Follow the buzzards, follow it my child  
Gathered with the smallest hopes of a better world

Hindered with fear, and fear to frail  
Isolated and shattered by the weight of the world

Jammed thoughts, seeking permission to be lose  
Knights and bishops of the game of life



**Kshitiz Kumar Singh**

B.A. (Programe) First Year

## RESULTS OF A WAR

Ashes and gunpowder scattered everywhere  
Blood and corpses coloured the battle ground

Cried the infant who lost his father  
Death and destruction are the results of a war

Eminent awards, the families of the brave and martyrs  
Footprints of death are imprinted on the pages of time

Graves, sorrows and tears lie in the graveyard  
Havoc then, now created children's play yard.

**Preksha**

B.A. (Hons.) English  
First Year

**Shubham**

B.A. (Hons.) Geology  
First Year

**Mohit**

B.A. (Hons.) Geology  
First Year

**Sourav**

B.A. (Prog.)  
First Year

## DIE ALONE?

Aurora lights lost in polluted skies  
Beloved by all, yet lost  
Caressing the child nature gave us, landed in fear and despair  
Depths of the forest call, focusing on the cries of  
Endangered species, they speak and yet inexpressible  
Faults of human deeds, lost in the trampled lowers overrun by cars  
Green valleys crisp with grass  
Hills strewn with Alpine lowers  
Indigo skies that echoed the laugh of a human child's heart  
Judgement of the Sun with a scorching heart, too dumb to consider this world a wild art  
Kissing in the ocean, moon by your side, no one realizing they're in an about to explode beehive  
Lately I've realized, things don't work out when you're sane, this world needs saving even if insane  
Melancholic, monotonous and don't know what  
Nests, and caves, are left to fraught alone  
Oh! Dear Nature, what happened to you,  
Why so silent, would you die alone like humans too?

**Rupali Sindhu**  
B.A. (Hons.) English  
Second Year

**Divyanshi**  
B.A. (Hons.) English  
First Year

**Lokesh Yadav**  
B.A. (Prog.) English  
First Year

**Sanjana**  
B.A. (Hons.) Geology  
First Year

## ENSLAVED SOULS

Angelic feet running down the shattered glass  
Bestowed upon the burden of sorrow  
Catastrophes running down my spine  
Like a dagger, cutting across my throat  
Enslaving my soul and  
Falling in the cold

**Anshika**  
B.A. (Hons.) English First Year

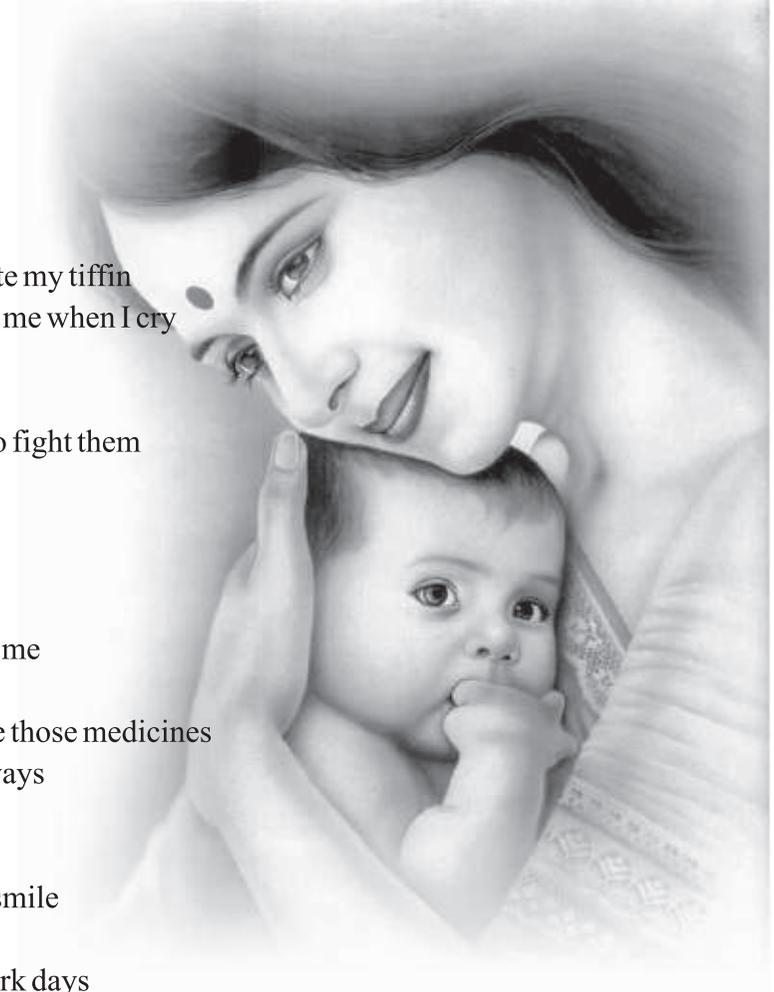
## SMILE

Love through the heart,  
You smile till the end  
In this era of pain,  
It's only a smile that you gain  
Different situations, different brains  
The way you smile, is the only thing  
you can maintain

**Ashwani Kumar**  
B.A. (Hons.) History First Year

## SHE

I opened my eyes, I saw her  
The only time she smiled seeing me cry  
She took me in her hands  
To bring me to life  
She introduced me to the world  
From playing with me, to working for me  
From sending me to school, to making sure I ate my tiffin  
From scolding me over bad marks, to hugging me when I cry  
She made the world beautiful for me  
I tried to run away from things  
She made me understand how important it is to fight them  
She took the pain, to give me a smile  
She was the goddess of my life  
While I slept, she stayed awake  
While I played, she worked  
She gave me shade, while the sun tried to burn me  
She took the wounds, to heal my scars  
She used to pull pranks, when I refused to have those medicines  
When I ran ahead in life, she ran along me, always  
She was happy for me, teased me  
Made me eat food, even when I hated to  
She cried watching me cry, smiled seeing my smile  
She was everything to me  
The Moon of my dark nights, the Sun of my dark days  
She was the rain of my dry life, the medicine to all my pain  
She took my hand, left my hand, let me understand  
She raised me up, to let me make me understand  
And now, when I'm away from her home, each day,  
First thing she asks is "how's your health" Prays for my betterment  
She doesn't want anything from me, Except to see me stand on my feet  
It was all good until one day,  
The news came  
She left me from this world, to fight alone Now I'm at the door,  
But she isn't there to open it  
Now I scream mom,  
But she isn't there to hear it.



**Kshitiz Sharma**  
B.Sc. (Hons.) Maths, Third Year

## BROKEN: JUST HAPPENED



Empty sheets,  
Covered with grief  
Words broken in pieces  
Is this me or just a blank space?

I asked covering my face,  
Assaulted , broken, a lonely heart  
Do you want to be judged by frozen pasts?

I whisper in the ears of blowing wind,  
Take me away to the healing end  
But wait, there's a twist in the tale,  
I met someone at the entrance gate  
Is this picture enough to define?

Past profile and awaken light.  
I wonder if it's true,  
I texted on a text cruise.  
Mid-summer and now summer break,  
All that happened, a mind game.

Crushed more? I asked my little heart  
Illusion, it was all you needed, it whispered.

**Asim Mudgal**

First Year

## CLASSES I DON'T WANT TO ATTEND

A lasting pinch of uncertainty  
Bearable, yet profoundly destructive  
Confusing, all the way through  
Dumb and difficult to comprehend  
Enlightened they wanted us to be, but  
Fictitious their scenarios are  
Gentle and smooth, these times were meant  
Humbling and scintillating these times were  
promised  
I sit here, with my mind crossed and conflicted  
Juxtaposing my foolishness with creativity  
Kindling expressions spread all around  
Lost in useless daydreams  
Mingling among the crowd,  
Nothing to gain or lose from this  
Obstacle in my schedule this will be,  
Pestered by my peers to attend,  
Queuing outside in corridors to take a seat  
Realising how lives can be altered so easily,  
Sumptuous assumptions I was given,  
Tumbling side to side in anxious pain  
Undignified screams born from below,  
Ventures turning into chaos everyday  
Wasted these times and these days.

**Rahul Bhandari**

B.Sc. (Hons.) Geology First Year



## GREY

She saw stars, millions of them  
Shining like diamonds, across the velvet floor  
Looking at the moon, she wished to be white  
Transparently blank she stood, waiting to be mould  
She had a mind, one that could inspire a soul  
Eyes too young for the world, in search of connections deep  
she wanted to see the world, a mountain of expectations  
excited, she started the climb  
saw the yellow of smiles, the purple of memories sweet  
the green of gifts and red of emotions which lifted her off her feet  
the rainbow of people filled her eyes,  
and she was greeted with a surprise  
the same red, darker than before, started flowing out her chest  
stabbed by broken promises others were meant to keep  
blood trampled under bodies as she saw eyes weep  
slowly she turned blue,  
Left with a heart in a hollow body  
She wasn't at fault, yet she said sorry  
The glow began to fade away, the higher she climbed  
Became darker with the countdown of time  
She became black, reached the top  
Bleeding eyes, saw it all  
It starts beautiful, but everything falls  
A game of chess, the world has it all  
Conflicted she turned grey,  
No colour left, she faded away  
Fell to pieces as she held out her palm,  
To hold the moon again.

**Rupali Sindhu**

B.A. (Hons.) English, Second Year

## WHISPER OF THE HEART



Divulgence of frantic lunacies,  
Thoughts and choices running haywire,  
Feelings of mild and white intricacies,  
Fetish little stagnant desires.  
Remorseful sight of failures,  
Ungrateful functioning of the dysfunctional,  
With help from unknown cures,  
Galloped in work and function  
The heart flutters among the trees,  
The branches cluster among the roots,  
While kneeling down on its knees  
Shining off its unpolished boots  
Stifling sensations of uncertainty,  
Thump of trucks on the edges  
Whether to stride or save dignity  
Breaking loose of wheel's wedges  
Small whispers of the heart.  
Enchanting their way through,  
Not left unheard,  
But unattended too.

**Rahul Bhandari**

B.Sc. (Hons.) Geology, First Year

## EDWARD CULLEN

"If we never meet again...Remember that the look of love in your eyes was heaven for me"

It was one of those days in our workshop, the Special Friday, where we meet people from outside our stream... strangers...sitting in the same room.

As I entered the room, there was a strange boy in white shirt with sleeves folded and a broad smile, the way I had imagined Edward Cullen from the book Twilight.

In that workshop, chits were supposed to be distributed to the guys with the names of girls to make a team of two people, but all my focus was on the Edward Cullen in the room. Thinking it to be just a crush, I settled down and tried to focus on the book in my hand. But every time I lifted my head, my eyes followed the path that led to him. The seven bumpy heads in between us were the only obstacle my eyes struggled with, but somehow overcame it because the desire to have something is always bigger than the obstacles.

As soon as the chits were distributed, the guys started calling out the names of girls they matched with. Then in a soft, gentle voice, I heard someone calling my name. And an Atheist would have started believing in God after such a heavenly coincidence, as I got matched with my Edward Cullen.

We shook hands, introduced ourselves and chatted a bit. He was my complete opposite and yet I felt a force pulling me towards him. We participated in two activities, one in which we were potential partners at a blind date and another in which we were a happily married couple discussing about the dream house we wanted to build.

The second activity was interesting for me so I started about it with excitement, "I want a lot of flowers on my dream...my dream house should be near a water body...a beach or something..."

Surprisingly, he didn't even say a single word and just looked at me. Then he stopped and said, "you have beautiful brown eyes, Muskan". I got lost for a while and that look in his eyes was enough to make my day.

The workshop ended and everybody had a smile on their face. I was at the door when he asked me to join him for coffee in the cafeteria. We went to an open cafe and it started drizzling. It was the kind of evening common in novels, but not in real life.

That day...that evening brings a smile to my face every time I think about it. After that day, we never met again in real life. But maybe...

If years into the future, we accidentally meet, Will he remember me? Will my heart respond the same to his eyes? It is still a mystery but, I wish this story does not end here.

Just like we try to be best in the fields of education, career, a sincere student in school and college, to a responsible professional. I want to change the mindset that love is something to be done later in life. We should take it in a sincere manner and we should learn how to nurture it.

After all, even if you have it all in your hands, without love, its nothing. So take your baby steps in this field as well and be sincere.

It's the magic you may not find anywhere else.

**Muskan Mittal**

B.Sc. (Hons.) Microbiology, Third Year

## BA (PROGRAMME) SOCIETY 'SERENITY' COMMITTEE

During the year 2019–2020, BA (Programme) Society 'Serenity' organized various activities and events for the students throughout the year. Such as Department educational Trip, Departmental Tour and online Webinar.



An educational trip to Archives museum and waste to wonder park was organized, where

all students of BA (Prog) visited along with our teachers, so in museum we learned many things there and gained some knowledge, a grateful experience of our educational trip from Ram Lal Anand College to Archives museum. The museum was so informative and clean, It was beautifully managed by the staff of museum and they were really helpful and down to earth.

The society organized an educational Tour to Jaipur, Rajasthan with teachers and students we are all 25 in numbers, 5 teachers and 20 students and it was 2 nights & 3 days trip from college. It was best experience, it gave us so many memories that will be cherished lifelong, we got knowledge of different sites in Jaipur and learned many new things that will surely help us in our future as we all visited Amber Fort, Nahargarh Fort, Hawa Mahal, Albert hall and visited Chokhi Dhaani which is famous for Rajasthani culture itself.

A webinar for department on Literary and Visual Culture in Collaboration with Hindi Sahitya Parishad Society of Hindi (Hons.) was organized in which lecture was given by Professor Seema Bawa (Department of History) University of Delhi. It was wonderful lecture and she explained each and everything in detail, 58 students along with our teachers and principal sir joined this webinar, many students ask several questions from Madam it was very interactive webinar.

**Vikalp Chaudhary (President)**  
Serenity, B.A. ( Program) Society



## DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE

The department consistently strives to prepare its students for a bright future and academic & professional success. Last summer from 4th to 30th May 2020 the department successfully organized 'Learnathon2020: Learning Unblocked' in association with ICT Academy. Diverse set of students participated and enhanced their skills via online courses offered by different companies. Annual technical festival Automata was celebrated on 27th and 28th February 2020 which saw spirited participation of 380 students from different colleges. Highlight event was HR Conclave in which company leaders including Mr. Sudhanshu Gupta

Senior Director NTT Data, Mr. Ashutosh Sharma- HR Head Pearl Global, Mr. Sagar Rathi- HR Cognizant, interacted with students and discussed contemporary trends. A community service for Divyangjan of New Asha Special School was organized through a one week outreach event 'IT-FOR-ALL' from 2nd to 7th February 2020. A team of 16 students taught the basics of computers to deaf children so as to cater to the needs of underprivileged in society. Considering high stress levels in our present lives a three day FDP on the theme of stress management was also organized for faculty members in association with ICT Academy from 30th

January to 1st February 2020. Participants numbering 20 from various disciplines enthusiastically participated. Mr. B. Antony from ICT Academy was our distinguished speaker.

We believe our cherished alumni are best placed to guide current students in making informed career choices. In this spirit we organized an insightful Career Guidance Session and Alumni Interaction on 28th January 2020. Our very own former students Mr Gyan Prakash Tripathi, Ms. Preeti, Ms. Simran and Mr. Pradeep shared their relevant vocational experiences.

We also organized an educational trip to Indian Meteorological Department, Delhi on 21st October 2019 where our 32 students visited 3 laboratories of IMD – Central Hydromet Observatory, Satellite Meteorological Department, and National Weather Forecasting laboratory.

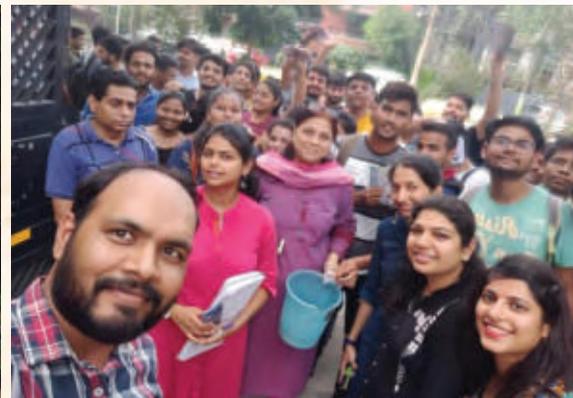
To highlight the growing importance of virtual tools & methods for enriched and experiential learning, the department organized a one day workshop on Virtual Labs with IIT Delhi on 3rd October 2019. 90 students of different disciplines of our college spiritedly participated. A national seminar 'Latest Trends in Blockchain Technology' was organized on 26th September 2019 to enhance employability skills of our students. 152 students plus academicians and researchers participated and were audience to eminent speakers like Mr. Rajat Gahlot and Mr. Tarun Rama (Quilhash Technology) and Mr. Jitendra Chhitodia (Chain Security).

Keeping pace with the current trend we organized a session on Digital Marketing on 6th September 2019. Our alumni Ms. Mansi Sabharwal and Mr. Bharat Sabharwal spoke at length on the crucial theme of digital marketing.

95 of our students also participated in the cleanliness drive under Swachh Bharat Abhiyan within college premises. Our sincerity in being socially committed can also be gauged from an open house poster making competition we organized on the theme of gender equality on 19th Aug 2019. Students from different courses participated. We are immensely grateful to our principal for all the consistent support; to our dedicated team of faculty; a very cooperative non teaching staff and highly well disciplined students in helping the department progress.

**Dr. Vandana Gandotra**  
Teacher-in-Charge





**RAM LAL ANAND COLLEGE**  
BEHETOJI, ANAPUR, NEW DELHI - 110021

**DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE**  
PRESENTS

ALUMNI INTERACTION  
 ON  
**Career Counselling**

**18TH JAN 2019**  
 Venue: PC-13  
 Timing: 11:30

**SPEAKERS**

1. Ms. Neha Agnihotri
2. Divyanshu
3. Mr. Cyan Prakash
4. Ms. Simran Mehta
5. Ms. Anshu
6. RAM, Present

**RAM LAL ANAND COLLEGE**  
BEHETOJI, ANAPUR, NEW DELHI - 110021  
UNIVERSITY OF DELHI

FACULTY DEVELOPMENT PROGRAM  
 ON  
**STRESS MANAGEMENT**

FROM  
**30TH JANUARY TO 1ST FEBRUARY**

ORGANIZED BY  
**DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE**  
IN COLLABORATION WITH  
**ICT ACADEMY**

**RAM LAL ANAND COLLEGE**  
 DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE



**POSTER COMPETITION ON GENDER SENSITIZATION**

LET US BRIDGE THE GAP,  
 TOGETHER WE CAN!

18th AUGUST, 2019  
 12PM - 2PM

LAR-AS (ONLINE, PHOTOSHOP),  
 PC-13 (OFFLINE, BRING YOUR OWN  
 STATIONERY)

EXCITING PRIZES!

REGISTER NOW: 

**RAM LAL ANAND COLLEGE**  
 UNIVERSITY OF DELHI  
 DEPARTMENT OF  
 COMPUTER SCIENCE

SE CONTENT

**DIGITAL MARKETING WORKSHOP**

ANALYTICS

**SPEAKERS: MS. MANSI SABHARWAL  
 MR. BHARAT SABHARWAL**  
[ALUMNI BATCH 2011-2014]

**DATE: 6 SEPTEMBER 2019**  
**VENUE: COMPUTER LAB 43**  
**TIMINGS: 1:00 P.M. - 1:00 P.M.**

## KACH!NG- REPORT, DEPARTMENT OF COMMERCE



Kach!ng- The commerce society of Ram Lal Anand College is a platform that empowers young minds to enhance various qualities of management.

Kach!ng organised several events for the session 2019-20:

- **STUDENT UNION ELECTION:**

The process of students' election was conducted efficiently on 6th September '19. All the representatives for the elected posts got good number of vote sand took responsibilities. Then, efficient students from different batches of the Commerce Department were selected and a team was formed.

- **YOUTH CONCLAVE- "ACCENDO CURO":**

Kach!ng started its success journey by organizing this most happening event on 15th October '19 in the college auditorium. The event was inaugurated with the lighting of a pious lamp by our honourable Principal Dr. Rakesh Kumar Gupta. This was followed by motivational speeches and other interesting activities by our renowned speakers. Famous YouTubers such as Shrawan Kurmavanshi, Kirti Mehra, Sushant Maggu, and Mayank Mishra empowered the students. The well known personalities like CA Himanshu Sarpal discussed the life of a chartered accountant which was followed by a career counselling session and Suman discussed various modern ways to remain healthy with the students. After this, MTV HUSTLE sensation Shetty Sa entertained the crowd by showcasing his rap art. The event ended with the Question Answer round of the Hasley India Panel consisting of Abhishek Kapoor, Twarita Nagar, Anushka Sharma, Rishabh Puri, Ankit Madaan and Anmol Sachar. The elegance of these speakers was showcased in the brief conversation.

- **BUSINESS CONCLAVE-: "THEBIZ-BUZZ":**

To continue its success journey KACH!NG threw another hit on 2nd March, 2020 by organizing its second event of the session that is Business Conclave; Bizz-Buzz. The event began with the speech of our honourable Principal Dr. Rakesh Kumar Gupta. In this event, our renowned speaker Vivek Atray who is a well known EX-IAS OFFICER and an author imparted the techniques to achieve success & organised an interactive motivation session with the students; Rahul Magan is a group CEO at TCG who talked about the changing dynamics of business thus including the effects of automation & technology in the coming times and Akanksha Bhargava who is a travel blogger and a business woman interacted with the students.

**Dr. Srishti Pathak**  
Convenor

# DEPARTMENT OF ENGLISH

The aim of the English Department and the English Literary Society is to evoke love and appreciation for literature in the students by organising various kinds of activities throughout the year.

The Society under the guidance of the TIC Dr Purna Malhotra and the Convener Ms Deepshikha Kumari, organised a talk on ‘Historical view on Diaspora’ by Mr Rajeep Kumar. Various movies were screened throughout the year for the benefit of the students followed by interactive sessions. A competition—Spin a Yarn- was organised which saw a large amount of participation.

The Department organised a Seminar on ‘Greek Literature and Theatre’ in collaboration with Indo-Hellenic Friendship League which saw eminent speakers from the field of Indian and Greek theatre. It included Prof. Devendra Raj Ankur, Ex-Director of National School of Drama and Dr. Bharat Gupt, Trustee Indira Gandhi National Centre for the Arts.

The Department also organised a three day Intensive Writing Workshop in collaboration with UDDAN (Unfolding Drama and Arts to awaken the nation). The workshop had eminent names from media and writing to interact - Prof. KG Suresh, Ex- Director General, IIMC, Pradeep Bhandari, Jan Ki Baat, Adv. Anirudh Sharma and others. The valedictory programme was honoured with the presence of the Chairman, Governing Body of the college, Padam Shri Daya Prakash Sinha.

Lit Fest’ 20 was organised as part of the annual departmental festival with various activities which saw a lot of enthusiastic participation



## DEPARTMENT OF GEOLOGY

The departmental orientation for the newly admitted students and their parents was held on 20th July, 2019 after the college orientation.

Kiran Jyoti (2016-19) motivated the students on 23rd July. She was selected in mineral exploration company in Odisha. Ajay Kumar (2014-17), pursuing Integrated MS-PhD, in IESER, Kolkata gave insights on 26th July about the methods to be employed to keep oneself ahead in the subject in an enjoyable manner.

Between 24th to 29th September, second year students led by Dr. Sarbari Nag and Ms. Leimiwon Zimik visited Mussoorie and Dehradun in Uttarakhand for field work.

Apoorv Avasthy, pursuing MS in Germany delivered a talk on the work he is doing on modelling seismic data, on 30th September.

Between 1st to 8th October, students project, went for collection of data in the field for Patiya, Uttarakhand project.

Dr. Mayuri Pandey, (2006-09 batch), who joined the Department of Geology, Banaras Hindu

University as a faculty member, delivered a talk on her PhD work, reminisced about her years in the college and guided the current students.

On 19th October the Department celebrated annual Geological Society Fest VASHANKH 2019 for the first time. On that occasion lectures were held by Mr. K.C. Jain, retired scientist, CMPDI on 'Coal Bed Methane'; by Dr. Parth R. Chauhan, Assistant Professor, IESER, Mohali on 'Human Relationships with Rocks in Prehistory'; and Prof. N.C. Pant, Department of Geology, on 'Antarctica, Global Warming and Zero Carbon Emission Regime- Choices or No Choices'.

On 6th November, Nitin Khandelwal (2014-17), pursuing Integrated MS-PhD, in IESER, Kolkata, interacted with students about their aspirations, apprehensions IIT JAM and other options for pursuing higher studies in the field of Geology and about his selection and upcoming visit to France for conducting part of his research work.

On 13th November, Simran Garg (2014-17) after completing M.Sc. in Geophysics from IIT Kharagpur, working as 'Petrophysicist' at



*Field Tours by Geology Department during 2019-20*



*VASHANKH 2019, the Geology Department Fest, 19th October, 2019*



*Patiya, Uttarakhand, project field tour between 1st to 8th October, 2019*

exploration world leader Schlumberger, interacted with the students and shared tips to qualify the prestigious IIT JAM and shared about her selection through campus interview.

Between 17th to 25th December the second-year students led by Drs. Prabhas Pande and Ravish Lal visited Almora and Nainital in Uttarakhand for field work.



*AMD, R.K.Puram, visit by Geology (H) Students on 27th February, 2020*



*Alumni Talks and Interactions, Geology Department, 2019-20*

Ankit Verma (2011-14), recent PhD from Trinity College, Dublin, Ireland talked about his work and interacted with the students about the selection process, scholarship, benefits and difficulties of doing PhD directly after B.Sc. (H).

On 27th February, 2020 students led by Dr. Ravish Lal and Ms. Leimiwon Zimik visited Atomic Mineral Directorate, R.K.Puram, on the occasion of 'National Science Day', witnessed workings of various atomic mineral deposits exploration equipment and participated and won prizes on quiz competition.

The 3rd year students along with Dr. Sarbari Nag and Ms. Leimiwon Zimik visited Khetri Copper Mines and observed rock disposition, outline of exploration process and underground mine development, preparation of excavated material etc.

Dr. Abani Samal from the University of Utah and owner of an exploration company in the US shared his experiences and reiterated the application of Statistics in Geology and the various currently trending carrier options in the field of Earth Sciences.

**Dr. Sarbari Nag**  
Teacher-in-Charge

## हिंदी साहित्य परिषद

राम लाल आनंद महाविद्यालय, हिंदी साहित्य परिषद ने शैक्षिक सत्र 2019-2020 में अनेक कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। सर्वप्रथम संयोजक डॉ. सुभाष चंद्र डबास के संयोजन में हिंदी साहित्य परिषद की कार्यकारिणी का गठन किया गया। तत्पश्चात नव आगंतुक छात्रों के मिलन और परिचय हेतु कॉलेज में पहली बार 28 अगस्त 2019 को ओपन माइक सत्र का आयोजन किया गया। इसके साथ ही 31 अगस्त को प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।



5 सितंबर, शिक्षक दिवस के अवसर पर छात्रों को शिक्षा और शिक्षक का संदेश भी दिया गया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ राकेश कुमार गुप्ता के साथ हिंदी विभाग के सभी शिक्षक उपस्थित रहे और छात्रों द्वारा सभी को पुष्प भेंट करके सम्मानित किया गया। इसी क्रम में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन 16 व 17 सितंबर को किया गया, जिसमें आशु लेखन, स्लोगन, कविता पाठ और वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम रखे गए इन प्रतियोगिताओं में 40 से अधिक टीमों ने अपनी भागीदारी दी, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्रीराम, देशबंधु, हिंदू, हंसराज, जाकिर हुसैन, सत्यवती, शिवाजी, मोतीलाल, आर्यभट्ट आदि अनेक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को नगद धनराशि एवं प्रमाण पत्र पुरस्कार स्वरूप दिए गये। 17 फरवरी 2020 को हिंदी साहित्य परिषद द्वारा अंतः महाविद्यालय साहित्यिक प्रश्नोत्तरी एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें राम लाल आनंद महाविद्यालय के विभिन्न विषयों के छात्रों ने अपनी प्रतिभा और रचना शीलता का प्रदर्शन किया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्राचार्य डॉ राकेश कुमार गुप्ता के द्वारा छात्रों का उत्साहवर्धन करते हुए प्रमाण पत्र एवं पुरस्कृत धनराशि प्रदान की गई। हिंदी साहित्य परिषद द्वारा आगामी कार्यक्रमों के सूची में छात्रों की विदाई समारोह के अलावा विचार गोष्ठी आदि भी योजनाबद्ध हैं, यदि संभव हो पाया तो अन्य कार्यक्रम भी इस सत्र में कराए जाएंगे।

**डॉ. सुभाष चंद्र डबास**  
संयोजक, हिंदी साहित्य परिषद



## हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार : आयोजनों के लिहाज से महत्वपूर्ण रहा सत्र

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के लिए सत्र 2019–20 आयोजनों के लिहाज से काफी अहम रहा। इस सत्र में संचार फेस्ट से लेकर कई आयोजन ऐसे हुए, जो छात्र-छात्राओं के ज्ञानवर्द्धन में सहायक साबित हुए। इस कड़ी में सबसे पहले स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 14 अगस्त 2019 को विभाग की ओर से काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने देशभक्ति, सामाजिक, राजनैतिक, प्रेम आदि विषयों पर कविताएं पेश कीं। गोष्ठी के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि और गीतकार डॉ. राजेन्द्र गौतम ने विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना करते हुए उनके द्वारा पढ़ी गई कविताओं की कमियों और अच्छाइयों के बारे में बताया। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के संयोजक डॉ. राकेश कुमार और विभागाध्यक्ष डॉ. नीलम ऋषिकल्प ने पौधा देकर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। इसी बीच 4 सितम्बर 2019 को एक दिवसीय 'फेक न्यूज का मिथ्या संसार' विषयक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें गूगल की सर्टिफाइड ट्रेनर अर्चना कुमारी ने फेक न्यूज, वीडियो, फोटो स्रोत की जानकारी आदि अनेक पहलुओं से छात्र-छात्राओं को अवगत कराया।

अगली कड़ी के रूप में विभाग ने दो दिवसीय (4 व 5 अक्टूबर 2019) मीडिया फेस्ट संचार 2019 का आयोजन किया, जिसमें संचार, कला, साहित्य और संस्कृति के अनेक रंग देखने को मिले। फेस्ट में दिल्ली विश्वविद्यालय, एनसीआर सहित कई राज्यों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। उद्घाटन सत्र के अलावा इसमें नौ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें कविता, स्टैंडअप कॉमेडी, मीडिया क्विज, फोटोग्राफी, पोस्टर मेकिंग, डिजिटल पोस्टर मेकिंग, कार्टून मेकिंग, डाक्यूमेंट्री प्रतियोगिताएं हुईं। इसमें मुख्य विजेता की ट्राफी रामलाल आनंद महाविद्यालय और उपविजेता की ट्राफी आरआईएमटी विश्वविद्यालय, गोविन्दगढ़, पंजाब के नाम रही। समापन सत्र में हरियाणा सरकार के जनसंपर्क अधिकारी नीरज कुमार और मॉलिटिक्स के अनुदीप सिंह ने प्रतिभागियों का हौसला बढ़ाते हुए उन्हें पुरस्कृत किया। इससे पहले उद्घाटन सत्र की शुरुआत करते हुए मुख्य अतिथि और अमर उजाला अखबार के समूह संपादक श्री उदय कुमार ने अच्छे पत्रकार के लिए भाषा, अनुवाद और सामान्य ज्ञान को जरूरी बताया। मुख्य अतिथि का स्वागत प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने किया तो विषय की रूपरेखा पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. राकेश कुमार और धन्यवाद ज्ञापन विभागाध्यक्ष डॉ. नीलम ऋषिकल्प ने किया।

7 अक्टूबर 2019 से 12 अक्टूबर 2020 के दौरान विभाग द्वारा राजस्थान के तीन प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानों उदयपुर, कुम्भलगढ़ तथा माउंट आबू की शैक्षणिक यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा में विभाग के तीनों वर्षों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस यात्रा में विद्यार्थियों ने प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों के इतिहास, पर्यावरण, कला और संस्कृति का परिचय प्राप्त किया। इस यात्रा को सफल बनाने में विभाग के शिक्षकों डॉ. राकेश कुमार, डॉ. प्रदीप कुमार के साथ-साथ तृतीय वर्ष के छात्र दीपक कुमार त्रिवेदी का विशेष योगदान रहा। इस यात्रा में डॉ. निशा सिंह, सुश्री श्वेता आर्य ने भी योगदान दिया।

विभाग ने 7 फरवरी 2020 को एक दिवसीय डाक्यूमेंट्री कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें सबसे पहले सैड ट्री और झाड़ू कथा का प्रदर्शन किया गया। तत्पश्चात सिनेमेटोग्राफर और डायरेक्टर नवरोज कॉन्ट्रैक्टर ने विद्यार्थियों को फिल्म डॉक्यूमेंट्री और लांग रिपोर्ट के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। साथ ही उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

डॉ. राकेश कुमार  
संयोजक, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार  
रामलाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय)

## DEPARTMENT OF HISTORY

Department of History, Ram Lal Anand College is dedicated to impart quality education to the students for which different academic activities like seminars, heritage walks, tours and trips to historical places are also given importance by the department. Tawarikh Society of History Department organised one day International Seminar on “Urban Transformation and Sustainable Future”. A total of 10 scholars from different corners of the world spoke on the topic. Prof. Hilary Silver from Brown University, USA, Prof. Alan Morris, University of Technology Sydney, Australia, Prof. Paul Watt, University of London, Dr. Hila Zaban, University of Warwick, Israel, Dr. Remi de Bercegol, CNRS (French National Institute for Sustainable Development), Prof. T. K. Venkatasubramanian, Dept. of History, University of Delhi, Prof. Sunil Kumar, HOD, Dept of History, University of Delhi, Prof. Kaushal Kumar, JNU spoke on many diverse aspects of urban transformation. The seminar was very informative and provided the participants with enormous knowledge on various aspects of the urban transformation and its sustainability. The History Society Tawarikh also organised a Heritage Walk to Humayun Tomb on Jan 31, 2020 to create awareness among the students of the department about the historic areas of Delhi. Around 80 students along with 3 faculty members were part of this Heritage Walk. Tawarikh Society, History Dept. has also proposed a department historical trip to Rajasthan in the month of April, 2020.



**Vikas. K. Anand**  
Teacher-In-Charge Dept of History





## DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

Throughout the academic session the department remained brimming with activities with each activity related to fulfilling our commitment to engage students and faculty with our subject beyond class rooms. As a start on 9th April 2019 we organized a day long consultation in collaboration with Dr. Ambedkar Chair in Social Justice at the Indian Institute of Public Administration. Our Guest of Honour was Prof. Sushma Yadav, Vice-Chancellor of Bhagat Phool Singh Mahila Vishwavidyalaya, Sonapat and our Special Guest was Prof. C. Sheela Reddy, Chair Professor, Dr. B.R. Ambedkar Chair, IIPA. At the sidelines



of this event we also organized a series of competitions including poster-making and creative writing where students made spirited participation. The creativity of our Honours students along with BA Programme students was again at full display on 23rd Aug 2019 when another creative writing competition was held on topics based on the choice of each student-participant. On 3rd Sept 2019, the department organized a trip to Ambedkar Memorial at New Delhi. 52 students visited the memorial under the guidance of three faculty members from the department. The department each year organizes a special debate among students under faculty stewardship on a very contemporary topic of major political significance. This year the debate focused on the theme of abrogation of Article 370 in Jammu & Kashmir. As always the debate spanned across hours wherein number of students presented their views and cross-questioned each other. The department has always strived to make serious academic interventions and this year on 18th Oct 2019 we organized a National Seminar on the theme 'Strategic Scape of India's Foreign Policy: Looking Forward'. Students and faculty gained immensely from the fascinating lecture delivered by very eminent scholar and Chief Guest Prof. Harsh V. Pant, Professor of International Relations, Department of Defence Studies, Indian Institute at Kings College, London. Our Guest of Honour was Prof. Rumki Basu, Professor, Department of Political Science, Jamia Millia Islamia and Dr. Manan Dwivedi from the Indian Institute of Public Administration was our Special Invitee for the occasion. Each one of them interacted with students on various issues related to India's foreign policy. In yet another highly relevant and significant activity our students were taken to witness the Budget Session proceedings at the Indian Parliament on 10th Feb 2020. Led by two of our faculty members the students were enthralled to view and hear from close proximity eminent politicians like former union minister Sh. P. Chidambaram, current finance minister Smt. Nirmala Sitharaman and former PM Dr. Manmohan Singh. The rare experience remains etched into the memories of our students. Students also elected their representatives to departmental Statecraft Society on 30th Sept 2019. Each of the student representatives showcased their best of abilities throughout their tenure. We wish to convey our heartfelt gratitude to our honourable Principal Sir Dr. Rakesh Kumar Gupta for always being there to support us in all our endeavours.

**Dr. Triranjjan Raj** (Teacher-in-charge)  
**Dr. Kshama Sharma** (Function Convenor)

## DEPARTMENT OF MATHEMATICS

**Implosion 2020 (Annual Fest):** The Department of Mathematics organized its annual inter college mathematical fest Implosion'20 on February 27, 2020. Dr. Girish Mishra (Scientist, DRDO, Govt of India) was the chief guest and delivered a lecture on Cryptography and Information Security in front of large gathering of undergraduate students from various colleges of Delhi University & other universities of Delhi-NCR. The festival was started with lamp-lighting ceremony and Ganesh Vandana. Dr. Rakesh Kumar Gupta, Principal, Ram Lal Anand College inaugurated the festival and encouraged students for showing their abilities in mathematical modelling, doing project work and simulation technique application. He also encouraged students to do project in relevant areas under the supervision of any faculty member, engage themselves in internship and other career oriented short-term courses. Dr. Mukta D Mazumdar, Dr. Seema Gupta, Mr. Basant Mishra, Mr. Kapil Kumar, Mr. Sandeep Bhatt, Dr. Dileep Kumar, Dr. Pooja Bansal along with other faculty members of college were present during the inauguration. The lecture was followed by various mathematical and entertaining events like Presentus: the PPT competition, Mathematical Quiz: Brain It On 2.0, Mathematical Relay, HIT Wicket: The IPL Auction etc. The office bearers of Mathematical Society "INFINITY", Mr. Joginder Singh (President), Ms. Shruti Goyal (VP), Mr. Sarthak Mehta (Treasurer), Mr. Pranoy Dey (Secretary) & Mr. Sagar Yadav (Joint Sec) worked day and night for the success of IMPLOSION'20. The students, teachers and the sponsors thoroughly enjoyed the events and got motivated for next year's show.

**Educational trip to IIT Mandi & Manali:** The department of Mathematics organized an educational trip for their students to IIT Mandi and followed by Manali, Himachal Pradesh from 28th February, 2020 to 3rd March, 2020. IIT Mandi had conducted a workshop on Dynamical System and



Chaos theory in collaboration with Ram Lal Anand College, University of Delhi at Dr. C. V. Raman Auditorium, IIT Mandi. The resource person was Dr. Nitu Kumari, Associate Professor, SBS, IIT Mandi. The workshop includes lecture, paper presentation and followed by practical session on Matlab. Dr. Abbas, HOD, School of Basic



Sciences, IIT chaired the workshop and Mr. Basant Mishra gave the introductory speech on Dynamical System & Chaos Theory. Dr. Nitu discussed the entire concept and practical application of the topic, which students apply during lab session. They experienced how the weather forecasting is done, Butterfly

effect on weather, as well as how a slight change in climatic condition at one place affect the other place, which is very far away from the origin. The

workshop was very meaningful and it was a learning experience for them.

The next stop was Manali, where they experienced snow fall at Solang Valley, enjoyed ZIP Line (700mt), Skiing, Zorbing, snowboarding etc. for a complete day. Next day we visited Hidimba temple, Manu temple, Vasishta temple, where students enjoyed hot spring and then we tracked 195 ft to Jogini falls. In the evening we enjoyed surfing at Mall Road. The entire trip was memorable and students & teachers truly enjoyed every bit of life.

Teacher-in-Charge  
**Mr. Basant Mishra**



## DEPARTMENT OF MANAGEMENT STUDIES

Trip to Kanatal and Mussoorie; The department of BMS, Ram Lal Anand College, University of Delhi, organized a trip to Kanatal and Mussoorie from 2nd October to 6th October 2019.

On the first day students visited Laxman Jhula, Rishikesh, Tehri Dam, and stayed in Hotel - Himalayan Eco Lodge. On 4th October 2019 “Lal Tibba”, Mussoorie was visited. On 5th October 2019, students stayed in a camp full of various activities (Skywalk, Zip-lining, Archery, Cricket, Volleyball and Bridge Crossing and Trekking). Finally trip was concluded and we started for Delhi by 12 PM and reached South Campus by 10:45 PM.

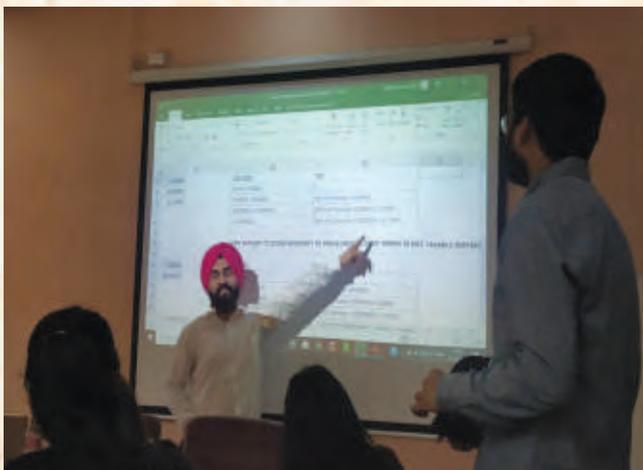
The Leadership Summit: The department organized “The Leadership Summit 2019” in college premises on 6th November, 2019. The event was graced by the presence of eminent speakers: Dr Indu Arneja, MD and Director at Indian Institute of Healthcare Communication; Dr SK Gupta MD and CEO of Insolvency Branch of ICAI and Mr Abhinav Sharma Founder of Youth Marketer. The event was attended by all the teachers and Dr Rakesh Kumar Gupta, Principal, as the patron; Ms Pooja Gayatri as the convenor; and around 150+ students.

The summit started with Dr SK Gupta sharing his life experience and pathway to success. Mr Abhinav Sharma discussed “negative impact of

social media” on students and how to deal with problems in life. Dr Indu Arneja spoke on time management and prioritising things in life.

Interactive Career Counselling Session: The department in collaboration with the Career Counselling and Placement Cell of the college organized one day – Interactive career counselling session for the students of BMS on 23rd Jan 2020. The resource person for the session was Dr. Garima Gupta, Associate Professor, Faculty of Management Studies, University of Delhi. The session started with the importance of career counselling and a step wise planning process of career. Dr. Garima enlightened the students with various career avenues a management student can opt for, highlighting the importance of new and rewarding career options in digital marketing, digital analysis etc. Interesting statistics were shared with the students regarding industries, pay structure etc. There was also the discussion upon a pertinent area of career advancement in entrepreneurship and knowledge, skills and attitudes involved in entrepreneurship. Session concluded with student’s interaction with the speaker.

Personal Tax Planning and E-Filing: The department organized a 40 Hours Certificate Course on “Personal Tax Planning and E-Filing”





for undergraduate students starting from 29th February 2020 (only Saturdays). 27 Students from RLAC and other colleges registered for this course. The course was organized in computer lab of college. The resource person for the session was CA Maninder Singh, a Chartered Accountant in practice for the last 10 years.

The inaugural session of the course was attended by Dr Rakesh Kumar Gupta, Principal, as the patron; Ms Pooja Gayatri as the convener; Dr. Deepti Gupta; Mr. Siddharth Gupta and Dr. Aastha Varma.



## DEPARTMENT OF MICROBIOLOGY

This year Department touched great heights as there were major achievements including financial support, Star status under “Star College Scheme” by Department of Biotechnology, Ministry of Science and Technology under Coordinator Dr Prerna Diwan. Various programs including, seminars, FDP, field trip and small research studies will be conducted with this grant during next three years. Faculty Members, Dr. Prerna Diwan and Dr Rakesh Kumar Gupta have been awarded two extramural research grants (i) 4.99 lacs from ICSSR entitled “Communicating the Science behind the phenomenon of Antibiotic Resistance to promote Social Awareness” and (ii) 30 lacs ICMR entitled “Alterations in oral microbiome of Betel nut chewing population of North Eastern India and its Correlation with Oral Cancers: Prospecting Microbial Consortium for Therapeutic Effects”.

Department faculty and students applied for 8 projects under college research grant scheme and bagged 5 inhouse research grants, which will benefit 20 students in the department in gaining experience in cutting edge research technologies.

A Departmental orientation for new students was held on Monday 22nd July 2019 to inform the new students about the program and various activities of the department. Department organized various activities and outreach programs for benefit of different schools and also for our own students. Students participated and bagged prizes in various intercollege, national and international events as listed below

1. Nine students attended 10th Foundation Day of THSTI, Faridabad on 15th July 2019 under Science Setu Program”. They also participated in Poster making competition and Ananya Grewal, Simran Preet Kaur and Poorvi Saini of 2nd Year, B.Sc.(H) Microbiology got first Prize.
2. A DBT sponsored Foldscope workshop

was held for our students and faculty on 11th September 2019. 75 students and 7 faculty members participated in the workshop.

3. Foldscope workshop was attended by 4 final year student interns of project, Muskaan, Lalit, Shaubhik and Keshav at School of Sciences, IGNOU on 23rd August 2019 and trained the participants on use of foldscope
4. Interaction session of students with Dr V Thangapandian, Department of Zoology, Mayya Nadar Janaki Ammal college, Sivakasi Tamilnadu was held. He is working in the area of Microorganisms and Human Health by isolating Actinomycetes and using it for controlling pathogens. Students and faculty discussed about the issues faced while working with foldscope. He discussed the use of foldscope as an identification tool with our students
5. A Cleanliness Drive was held in the college on 18th October 2019. Faculty members (Dr Prerna Diwan, Dr Kusum Rani Gupta, Dr Nidhi Chandra, Dr Sunila Hooda and Dr Shalini Swami) and students of I and III year formed groups and picked up the garbage (paper and plastic) from the entire campus area and outside. Thirteen bags of trash were collected and disposed.
6. 12 students of III Year, B.Sc.(H) Microbiology participated in NIPGR Open Day held on 23rd October 2019 at National Institute of Plant Genome Research, New Delhi. The program provided an insight into the work life of researchers, their achievements and also a tour of research facilities at NIPGR and motivated them to pursue further interest in science as a career.



7. Savi, Pratibha, Khushi Sharma won first prize in poster making competition in RCB open day on National Science Day, 28th February 2020.
8. Five students Lalit Mohan, Keshav Goyal, Shivam Sagar, Surbhi Singh and Preeti Dobriyal attended 10th India Probiotic Symposium, New Delhi from 29th February to 1st March 2020.
9. Savi (III Year) won II Prize in Intercollege T-shirt Painting competition at Sri Venkateshawa college and III prize in poster making competition on World SCI day, 2019.
10. Pratibha and Garima secured 1st Prize in an intercollege Poster presentation, Abhilash Jeas George, Vasu Sharma and Arya Kirone Patra secured II Prize in intercollege Quiz competition, Shreya and Saloni secured III position in intercollege Whisper-o-charades competition, Shaubhik Anand secured II and Saloni Jain II Position in intercollege Micomeme competiton organised at Bhaskaryacharya College of Applied Sciences, University of Delhi on 20th February 2020.
11. Bhawana Sharma, and Ananya Grewall were awarded first prize in poster presentation in the National Seminar ad Research Fest 2020 on “Antimicrobial therapy: Challenges and Future Trends” held at Shaheed Rajguru College of Applied Sciences on 25-02-2020.
12. Lalit Mohan, Keshav Goyal, Saubhik Anand, Muskan Mittal (III year) and Akanksha (2nd year) and Aman Dixit (1st year) were awarded internships under ICSSR funded Project
13. A visit to Kendriya Vidhyalaya, Rohini New Delhi was organized for to spread awareness about antimicrobial resistance.
14. 29 students of class XII of D.A.V Public School, Jasola Vihar visited the Department with Ms Sasmita Panigrahy (Biology Teacher) to get exposure of the different techniques to study the microbial world. This was organised in association with PRAK-IT aimed to offer its service by providing a practical exposure and its application to students willing to take an edge over the world. Students, Lalit, Shaubhik, Sarvani, Pragya, Akansha, Siddharth, Dharmendra and Priya volunteered for this activity.

**Dr Prerna Diwan**  
Teacher -in- Charge

## DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION



**Satish**  
Kho-Kho  
Participation in north zone  
Inter university tournament  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Munesh**  
Kho-Kho  
Participation in north zone  
Inter university tournament



**SHWEETA TIWARI**  
TAEKWONDO  
Participation in north zone  
Inter university tournament  
GOLD Medal  
in Inter College tournament



**DUSHTANT LOT**  
TAEKWONDO  
Participation in north zone  
Inter university tournament  
GOLD Medal  
in Inter College tournament



**Suraj**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Ajay Singh**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament  
Participated in 29th Delhi state  
handball championship



**Sabir**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament  
Participated in 29th Delhi state  
handball championship



**Pradeep**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Vishal**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



## DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION



**Rahul**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Himanshu**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Aaryaraj**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Shubham**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Manas**  
Kho-Kho  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Sheela**  
Judo  
Silver Medal  
in Inter College tournament



**Soni**  
Judo, Bronze Medal  
in Inter College tournament  
wrestling, Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Sachin**  
Wrestling, Bronze Medal  
in Inter College tournament  
Judo Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Harkesh**  
Judo  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Vijay Pal**  
Judo, Bronze Medal  
in Inter College tournament  
Wrestling, Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Akansha Yadav**  
TAEKWONDO  
Bronze Medal  
in Inter College tournament



**Shekhar**  
TAEKWONDO  
SILVER Medal  
in Inter College tournament

## DEPARTMENT OF STATISTICS

Statistics Society of Ram Lal Anand College conducts various events round the year to build up students' confidence and help them strengthen their soft skills. Students under the guidance of their teachers do much of the planning and organizing of the academic and co-curricular activities. The society organizes various lectures with speakers from industry, workshops, alumni interactions and competitions. Every year it organizes its annual inter-college festival "Random Walk" which hosts a number of competitive events in addition to informative lectures by renowned academicians and experts.

Events organized in the academic session 2018-19: Department of Statistics, Ram Lal Anand College formally welcomed the freshers' with brief introduction, lunch and fun filled activities on 14th September 2019. Students celebrated Teachers' Day by organizing a small get-together on 5th September 2019. The department organized an alumni lecture as part of career guidance on the theme of Biostatistics titled "Career in Biostatistics" on 24th October 2019. The speaker was 2005-2008 batch alumni Mr. Palash Malo (Pursuing Ph.D., NIMHANS, Bengaluru). The lecture was attended by approximately 50 students.



Elections to Statistics Society were held on 16th September 2019. A team of bright young students was elected to help organize various activities in the department and to motivate their peers too.

A career counselling session was organized jointly in collaboration with Career Counseling and Placement Cell of the college on 16th January 2020. Mr. Sajid Hussain and Mr. Prem Dalai (Step Up Analytics) the young Data Scientists working in the industry shared their experiences and enlightened the students about career in Data Science.

The department also organized another alumni interaction session on 28th January 2020 with 2011-2014 batch alumnus Ms. Jyoti Nagarkoti, belonging to Indian Statistical Service (11th rank in ISS Exam). The interaction was titled 'Prospects at Indian Statistical Service'.



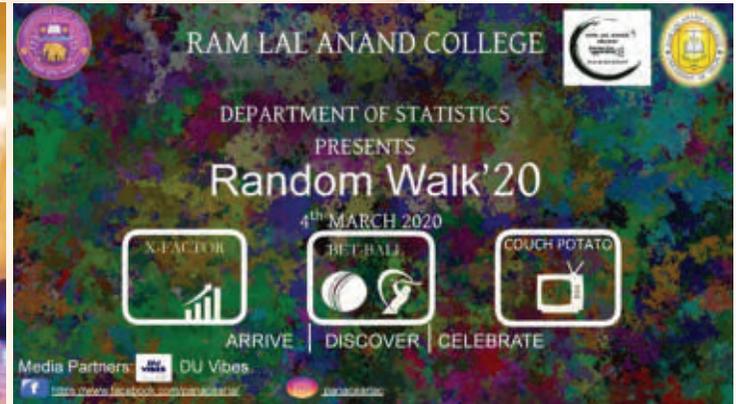
Students organized their annual inter-college festival "Random Walk-2020" with the same enthusiasm and excitement.

The annual event was held on 4th March 2020. Statistics festival is the right mix of motivating lectures and various fun filled activities. This year the department invited an expert and an alumni from the field of finance and currently working as a Chartered Financial Analyst Mr. Varun Agarwal. This lecture was followed by another lecture by Dr. D. K. Yadav, Department of Statistics & Demography (NIHFW). The title



of the talk was “Determination of sample size”. This lecture was followed by interesting fun filled activities like Bet-Ball and X-Factor and Couch Potato.

**Dr. Seema Gupta**  
Teacher-in-Charge:  
**Dr. Mukta Datta Mazumder**  
Convenor:



**Non Teaching Staff:  
'Pillars of Strength' of our College**



**NCC Republic Day**



**B.A. Program**



**B.Com Program**



**B.Com. (Hons)**



**BJMC**



**Statistics**



**Computer Science**



**English**



**Geology**





**Hindi**



**History**



**Microbiology**



**Political Science**



**Mathematics**



**M.A. Hindi**



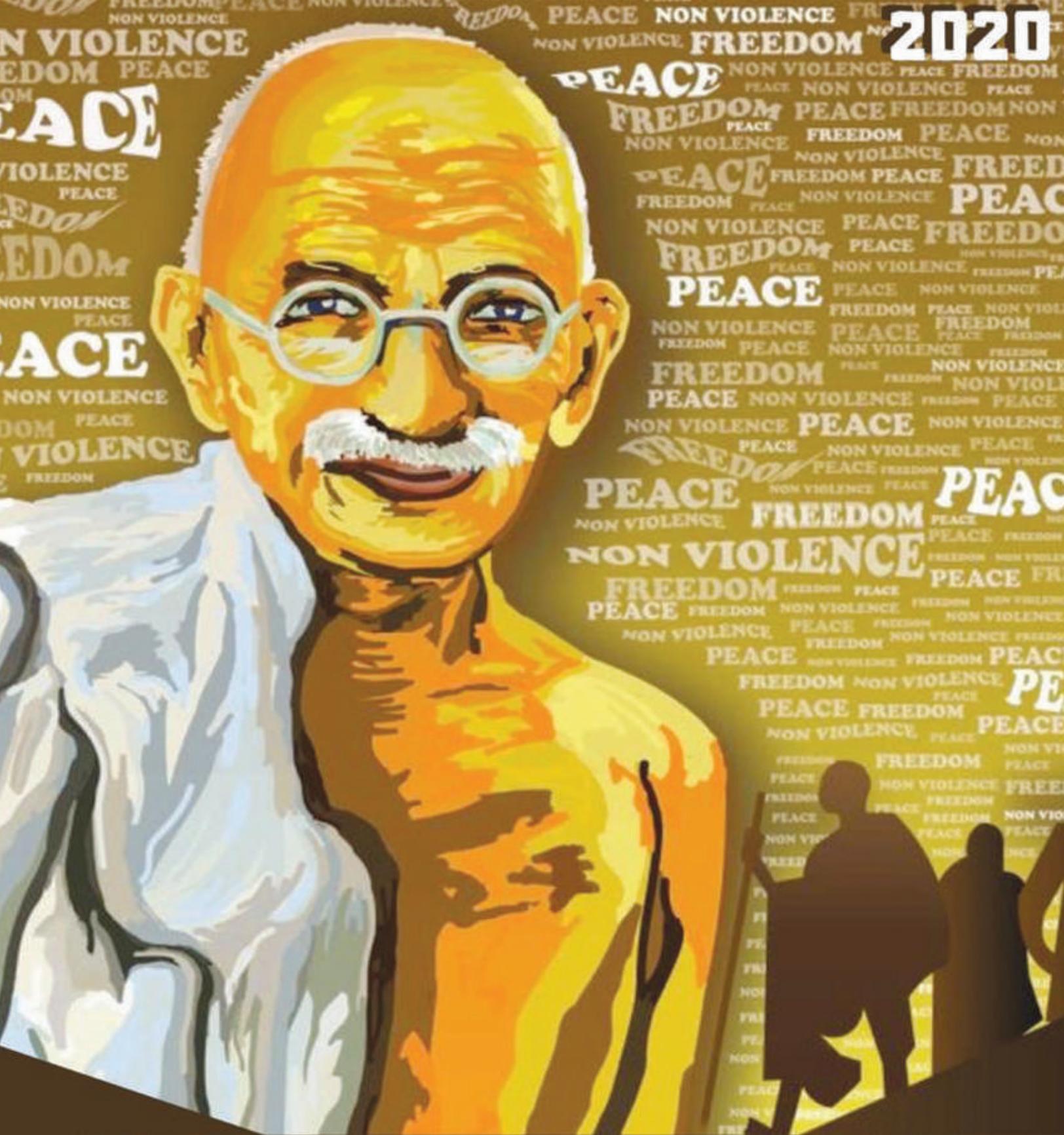


# SPLENDOR 2020









2020

**Bapu ...150 Years ... Not Out**